॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति ।

नौवां हिस्सा ।

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित ।

और

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित ।

दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा

लहरी प्रेस काशी में मुद्रित ।

[पांचवीं बार]

॥ श्रीः ॥
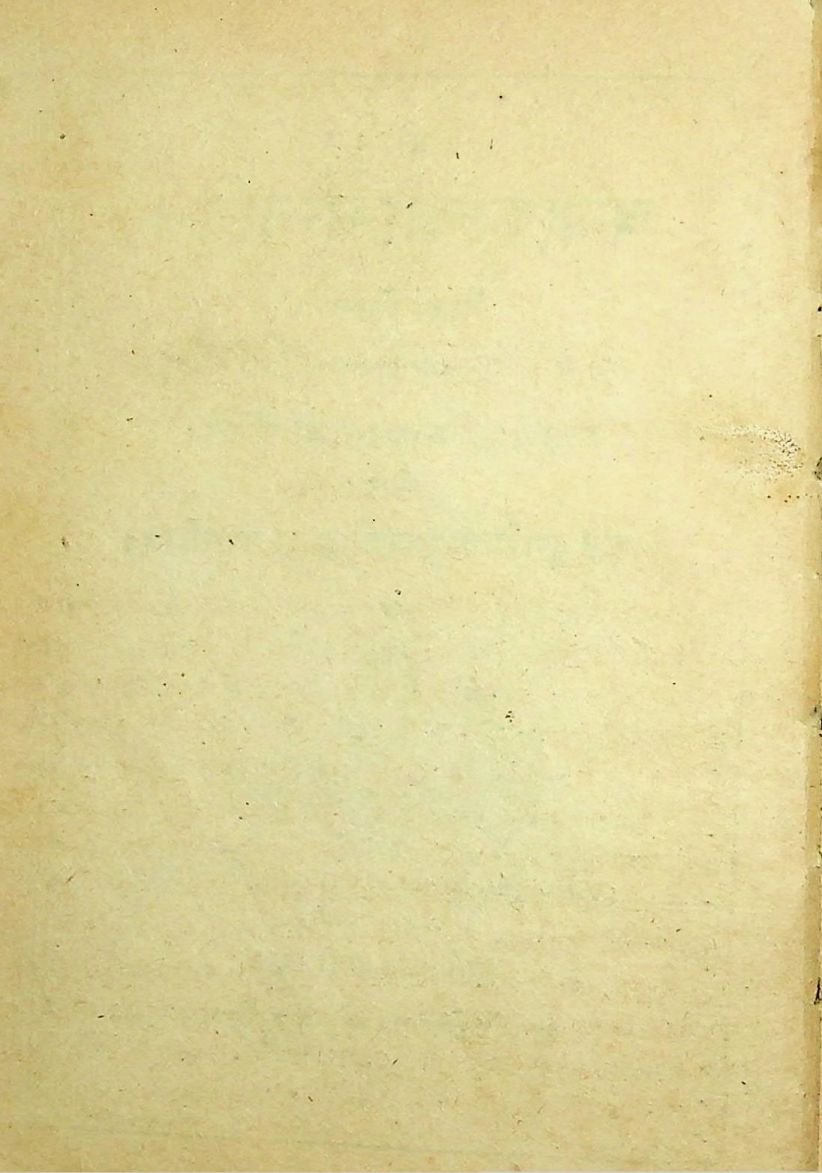
चन्द्रकान्ता सन्तति।

नौवां हिस्सा।
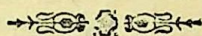
पहिला बयान।

अब वह मौका आ गया है कि हम अपने पाठकों को तिलिस्म की सैर करावें क्योंकि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह मायारानी के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा बिराजे हैं जिसे तिलिस्म का दर्वाजा कहना चाहिये। ऊपर के हिस्से में यह लिखा जा चुका है कि भैरोसिंह को रोहतासगढ़ की तरफ़ और राजा गोपालसिंह और देवीसिंह को काशी की तरफ रवाना करने के बाद इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, तारासिंह, शेरसिंह और लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा पहुंची और राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार देवमन्दिर में जिसका हाल आगे चल कर खुलेगा, डेरा डाला। हमने कमलिनी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह बगैरह को दारोगा वाले मकान के पास ही एक टीले पर पहुंचा कर छोड़ दिया था यह नहीं लिखा कि वे लोग तिलिस्मी बाग के चौथे दरजे में किस राह से पहुंचे या वह रास्ता किस प्रकार का था। खैर हमारे

पाठक महाशय ऐयारों के साथ कई दफे उस तिलिस्मी बाग में जायँगे इस लिये वहां के रास्ते का हाल छिपा न रहेगा ॥

तिलिस्मी बाग का चौथा दरजा अद्भुत और भयानक रस का खजाना था, वहां का पूरा पूरा हाल तो तब मालूम होगा जब तिलिस्म बखूबी टूट जायगा मगर जाहिरी हाल जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और उनके साथियों ने वहां पहुंचने के साथ ही देखा था हम इस जगह लिख देते हैं ॥

उस हिस्से में फूल फल और पत्ते की किस्म में से कुछ भी न था जिससे हम उसे बाग कहते । चारों तरफ तरह तरह की इमारतें बनी हुई थीं जिनका हाल हम उस देवमन्दिर को मध्य मान कर लिखते हैं जिसमें हमारे दोनों कुमार और दोनों नेक दिल खैरखाह और मुहब्बत का नमूना दिखाने वाली नायिकायें और उनके साथी लोग बिराज रहे हैं ! जैसा कि नाम से समझा जाता है वह देवमन्दिर वास्तव में कोई मन्दिर या शिवाला नहीं था, वह केवल एक मकान सुर्ख पत्थर का बना हुआ था जिसमें दस हाथ की कुर्सी के ऊपर केवल चालीस खम्भों का एक अपूर्व कमरा था जिसके बीचोबीच में दस हाथ के घेरे का एक गोल खम्भा था और उसमें तरह तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं । बस, इसके अतिरिक्त देवमन्दिर में और कोई बात न थी और उस देवमन्दिर के कमरे में जाने के लिये कोई रास्ता जाहिर में न था, इसके सिवाय एक बात यह थी कि वह कमरा चारों तरफ से परदेनुमा ऊंची दीवारों से ऐसा घिरा हुआ था कि उसके अन्दर रहने वाले आदमियों को बाहर से कोई देख नहीं सकता था । उस देवमन्दिर के चारो तरफ थोड़ी सी जमीन में बाग की पक्की क्यारियां बनी हुई थीं और उसमें तरह तरह के पेड़ लगे हुए थे । ये पेड़ सच्चे न थे बल्कि एक प्रकार की धातु के बने थे और

असली मालूम होने के लिये उन पर रङ्ग चढ़ा हुआ था, यदि इस खयाल से उसे हम बाग कहें तो हो भी सकता है और ताज्जुब नहीं कि इन्हीं पेड़ों की वजह से वह हिस्सा बाग के नाम से पुकारा जाता हो। उस नकली बाग में दो दो आदमियों के बैठने लायक कई कुरसियां भी थीं॥

उन क्यारियों के चारो तरफ छोटी २ कई कोठड़ियां और मकान भी थे जिनका अलग अलग हाल लिखना इस समय आवश्यक नहीं मगर उन चार मकानों का हाल लिखे बिना काम न चलेगा जो कि देवमन्दिर बल्कि नकली बाग के चारों तरफ एक दूसरे के मुकाबले में थे और उन चारों मकानों के बगल में एक कोठड़ी और कोठड़ी से थोड़ी दूर के फासले पर एक एक कूंआं था॥

पूरब तरफ वाले मकान के चारों तरफ पीतल की दीवार थी इस लिये उस मकान का केवल ऊपर वाला हिस्सा दिखाई देता था और कुछ मालूम नहीं होता था कि उसके अन्दर क्या है, हां छत के ऊपर लोहे का एक पतला खम्भा महराबदार था जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूंएँ के अन्दर गया हुआ था। उस मकान के चारों तरफ जो पीतल की दीवार थी उसी में एक बन्द दर्वाजा भी दिखाई देता था और उसके दोनों तरफ पीतल ही के दो आदमी हाथ में नङ्गी तलवार लिये खड़े थे॥

पश्चिम तरफ वाले मकान के दर्वाजे पर हड्डियों का ढेर था और उसके बीचोबीच में लोहे की एक जन्जीर गड़ी हुई थी जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूएँ में गया हुआ था॥

उत्तर तरफ वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके चारों तरफ चर्खियां और तरह २ के कल पुर्जे थे। इसी मकान के पास वाले कूंएँ के अन्दर मायारानी अपने पति का

काम तमाम करने के लिये गई थी ॥

दक्खिन तरफ वाले मकान के ऊपर चारों कोनों पर चार बुर्जियां थीं और उनके ऊपर लोहे का जाल पड़ा हुआ था और उन चारों बुर्जों पर (जाल के अन्दर) चार मोर न मालूम किस चीज के बने हुए थे जो हर वक्त नाचा करते थे ॥

आज उसी देवमन्दिर के कमरे में दोनों कुमार, कमलिनी, लाडिली और ऐयार लोग बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं । रिक्तगन्थ अर्थात् किसी के खून से लिखी हुई किताब कुंअर इन्द्रजीतसिंह के हाथ में है और वह बड़े प्रेम से उसकी जिल्द को देख रहे हैं, अभी तक उस किताब के पढ़ने की नौबत नहीं आई है । कमलिनी मुहब्बत की निगाह से इन्द्रजीतसिंह को देख रही है और उसी तरह लाडिली भी छिपी निगाह आनन्दसिंह पर डाल रही है ॥

कमलिनी० । (इन्द्रजीत से) अब आपको चाहिये कि जहां तक जल्द हो सके यह रिक्तगन्थ पढ़ जायं ॥

इन्द्रजीत० । हां मैं भी यही चहता हूं परन्तु पहिले उन कामों से छुट्टी पा लेना चाहिये जिनके लिये तेजसिंह चाचा और ऐयारों को हमलोग यहां तक साथ लाये हैं ॥

कमलिनी० । मैं इन लोगों को केवल रास्ता दिखाने के लिये यहां तक लाई थी सो काम तो हो चुका अब इन लोगों को यहां से जाना और कोई नया काम करना चाहिये और आपको भी रिक्तगन्थ पढ़ने बाद तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाना चाहिये ॥

इन्द्रजीत० । राजा गोपालसिंह ने कहा था कि किशोरी और कामिनी को छुड़ा कर जब हम आ जायँ तब तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाना, इसके अतिरिक्त तेजसिंह चाचा से मुझे राजा गोपालसिंह के छुड़ाने का हाल सुनना बाकी है ॥

तेज०। उस बारे में तो कुछ हाल मैं आपसे कह चुका हूं॥

आनन्द०। जी हां, वहां तक कह चुके हैं जब (कमलिनी की तरफ देखकर) ये चंडूल की सूरत बनकर आपके पास आई थीं मगर यह न मालूम हुआ कि इन्होंने हरनामसिंह, बिहारीसिंह और मायारानी के कान में क्या कहा जिसे सुन उन सभों की अवस्था बदल गई थी। जहां तक मैं समझता हूं शायद इन्होंने राजा गोपालसिंह के बारे में कोई इशारा किया था॥

कमलिनी०। जी हां, यही बात है, राजा गोपालसिंह के कैद करने में हरनामसिंह और बिहारीसिंह ने भी मायारानी का साथ दिया था और धनपति इस काम का जड़ है॥

इन्द्रजीत०। (हँस कर) धनपति इस काम का जड़ है!!

कमलिनी०। जी हां, मैं बोलने में भूलती नहीं, धनपति वास्तव में मर्द है, उसकी खूबसूरती ने मायारानी को फँसा लिया और उसकी मुहब्बत में मायारानी ने वह अनर्थ किया था। ईश्वर ने धनपति का चेहरा ऐसा बनाया है कि वह मुद्दत तक औरत बन कर रह सकता है, एक तो वह नाटा है दूसरे अट्ठारह वर्ष की अवस्था होजाने पर भी दाढ़ी मोछ की निशानी नहीं आई लेकिन जनानी सूरत होने पर भी उसमें ताकत बहुत ज्यादे है॥

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब से) यह नई बात तुमने सुनाई! अच्छा तब?

लाडिली०। क्या धनपति मर्द है?

कमलिनी०। हां, यह हाल मायारानी, बिहारीसिंह और हरनामसिंह के सिवाय और किसी को भी मालूम नहीं है, कुछ दिन बाद मुझे मालूम हो गया था। मगर आज के पहिले यह हाल मैंने किसी से भी नहीं कहा था। इसी तरह राजा गोपालसिंह का हाल भी इन

चारों के सिवाय और कोई नहीं जानता था । मुझे इत्तफाक से इस बात का पता लग गया, उन लोगों को यही विश्वास था कि राजा गोपालसिंह का हाल सिवाय हम चारों के और कोई भी नहीं जानता और जब कोई पांचवां आदमी उस भेद को जानेगा तो बेशक हम चारों की जान जायगी और यही सबब उस समय उन लोगों की बद-हवासी का था जब मैंने चंडूल बन कर उन तीनों के कानों में पते की बात कही थी, साथ ही यह भी कह दिया था कि राजा गोपालसिंह का हाल हजारों आदमी जान गए और राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में यह बात मशहूर हो गई है ॥

आनन्द० । ठीक है मगर बिहारीसिंह ने मायारानी से यह हाल क्यों नहीं कहा ?

कमलिनी० । इसका एक सबब और भी है ॥

इन्द्रजीत० । वह क्या ?

कमलिनी० । बिहारी और हरनाम ने मायारानी के दो प्रेमी पात्रों का खून किया है जिसका हाल मायारानी को भी मालूम नहीं है, उसका भी इशारा मैंने दोनों के कानों में किया था ॥

इन्द्रजीत० । (हँस कर) तुम्हारी बहिन बड़ी ही शैतान है मगर देखा चाहिये तुम कैसी निकलती हो, खून का साथ देती हो या नहीं ॥

कमलिनी० । (हाथ जोड़ कर) बस २ माफ कीजिये ऐसा कहना हम दोनों बहिनों (लाडिली की तरफ इशारा करके) के लिये उचित नहीं और इसका एक सबब भी है ॥

इन्द्रजीत० । वह क्या ?

कमलिनी० । मेरे पिता की दो शादी थी, मैं और लाडिली एक मां के पेट से हुई, कम्बख़्त मायारानी एक मां के पेट से, इस लिये हम दोनों का खून उसके सङ्ग नहीं मिल सकता ॥

इन्द्रजीत०। (हँसकर) शुक्र है! खैर यह कहो कि चंडूल बनने के बाद तुमने क्या किया?

कमलिनी०। चंडूल बनने बाद नानक को बाग के बाहर कर दिया और तेजसिंह को राजा गोपालसिंह के पास ले जाकर दोनों की मुला॰ कात कराई, इसके बाद वहां रहने का स्थान और राजा गोपालसिंह को छुड़ाने की तर्कीब और उन्हें साथ लेकर बाग के बाहर होजाने का रास्ता बता कर मैं तेजसिंह से बिदा हुई और आप लोगों को कैद से छुड़ाने का उद्योग करने लगी। इसके बाद जो कुछ हुआ आप जान ही चुके हैं, हां राजा गोपालसिंह को छुड़ाने के समय तेजसिंह ने क्या क्या किया सो आप उनसे पूछिये॥

अब पाठक समझ ही गये होंगे कि राजा गोपालसिंह को कैद से छुड़ाने वाले तेजसिंह थे और जब राजा गोपालसिंह को मारने के लिये मायारानी कैदखाने में गई थी तो तेजसिंह ही ने आवाज दे कर उसे परेशान कर दिया था। दोनों कुमारों के पूछने पर तेजसिंह ने अपना पूरा २ हाल बयान किया जिसे सुनकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए॥

दूसरा बयान।

उन ऐयारों को जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ थे बाग के चौथे दर्जे के देवमन्दिर में आने जाने का रास्ता बता कर कम॰ लिनी ने बिदा किया और तेजसिंह को रोहतासगढ़ जाने के लिये कह कर बाकी ऐयारों को अलग अलग काम सुपुर्द कर के दूसरी तरफ बिदा किया॥

इस बाग के चौथे दर्जे की इमारत का हाल हम ऊपर लिख आये

हैं और यह भी लिख आये हैं कि वहां असली फूल पत्तों का नाम निशान न था। वहां की ऐसी अवस्था देख कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कमलिनी से पूछा कि "राजा गोपालसिंह ने कहा था कि चौथे दर्जे में मेवे बहुतायत से हैं खाने पीने की तकलीफ न होगी मगर यहां तो कुछ भी दिखाई नहीं देता! हमलोगों को यहां कई दिनों तक रहना होगा कैसे काम चलेगा?" इसके जवाब में कमलिनी ने कहा कि "आपका कहना ठीक है और गोपालसिंह ने भी झूठ नहीं कहा। यहां मेवों के पेड़ नहीं मगर (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोड़ी सी जमीन मजबूत चारदीवारी से घिरी हुई है, उसे कोई सींचता या दुरुस्त नहीं करता है क्योंकि बाहर से एक नहर दीवार तोड़ कर उसके अन्दर पहुंचाई गई है जिसे आप मेवों का बाग कह सकते हैं, उसी की तरावट से वह बाग सूखने नहीं पाता। कई पेड़ पुराने हो कर मर जाते हैं और कई नये पैदा होते हैं और इस तिलिस्मी बाग का राजा दस पन्द्रह वर्ष पीछे उसकी सफाई करा दिया करता है। मैं वहां जाने का रास्ता आपको बता दूंगी॥"

ऐयारों को बिदा करने के साथ ही कमलिनी और लाडिली भी कुमार से यह कह कर बिदा हुईं कि "कई जरूरी काम पूरे करने के लिये मैं भी जाती हूं परसों यहां आऊंगी॥"

तीन दिन तक केवल कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह देवमन्दिर में रहे, जब आवश्यकता होती मेवे वाले बाग में चले जाते और पेट भर कर फिर देवमन्दिर में चले आते। इस बीच में दोनों भाइयों ने मिलकर "रिक्तगन्थ" (खून से लिखी किताब) भी पढ़ डाली। रिक्तगन्थ में जो जो बातें लिखी थीं बखूबी समझ में न आईं क्योंकि उसमें कई शब्द इशारे के मुकर्रर थे जिसे जाने बिना असल बात का पता लगना बहुत ही कठिन था तथापि तिलिस्म के कई भेदों

और रास्तों का पता उन दोनों को मालूम होगया और यह निश्चय किया कि कमलिनी से मुलाकात होने पर उन शब्दों का अर्थ पूछेंगे जिनके जाने बिना काम नहीं चलता ॥

यद्यपि कुंअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी के लिये और आनन्दसिंह कामिनी के लिये बेचैन हो रहे थे मगर कमलिनी और लाडिली की भोली भाली सूरत के साथ ही साथ उनके अहसानों ने भी दोनों कुमारों के दिलों को अपने काबू में कर लिया था परन्तु किशोरी और कामिनी की मुहब्बत के डर से दोनों कुमार अपने दिल को कोशिश के साथ दबाये जाते थे ॥

दोनों कुमारों को देवमन्दिर में टिके हुआ आज तीसरा दिन है, ओढ़ने और बिछावन का कोई सामान न होने पर भी उन दोनों को किसी तरह की तकलीफ नहीं मालूम होती। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, तिलिस्मी बाग के दूसरे दर्जे से होती और खुशबूदार फूलों से बसी हुई मन्द मन्द चलने वाली हवा ने नर्म नर्म थपकियां लगा कर दोनों नौजवान, सुन्दर और सुकुमार कुमारों को सुला दिया है, ताज्जुब नहीं कि दिन रात ध्यान बने रहने के कारण दोनों कुमार स्वप्न में भी अपनी अपनी माशूकों से लाड़ प्यार की बातें करते हों और इस बात का गुमान भी न हो कि पलक उठते ही रङ्ग बदल जायगा और नर्म कलाइयों का आनन्द लेने वाला हाथ सर तक पहुंचने का उद्योग करेगा ॥

यकायक घड़घड़ाहट के आवाज ने दोनों को जगा दिया, वे चौंक कर उठ बैठे और ताज्जुब भरी निगाहों से चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि यह आवाज कहां से आती है! ज्यादे ध्यान देने पर भी यह निश्चय न हुआ कि आवाज किस चीज की है, हां यह मालूम हुआ कि देवमन्दिर के पूरब तरफ वाले मकान के अन्दर से आवाज

आ रही है। दोनों कुमारों को देवमन्दिर से नीचे उतर कर उस मकान के पास जाना उचित न मालूम हुआ इसलिये देवमन्दिर की छत पर गए और बड़े गौर से उस तरफ देखने लगे॥

आधे घण्टे तक वह आवाज एक रङ्ग से बराबर आती रही और इसके बाद धीरे धीरे कम होकर बन्द होगई तथा दर्वाजा खोल कर अन्दर से आता हुआ एक आदमी दिखाई पड़ा। वह आदमी धीरे २ देवमन्दिर के पास आया और थोड़ी देर तक खड़ा रह कर उस कूंएँ की तरफ लौटा जो पूरब तरफ वाले मकान का साथी था और उस से थोड़ी ही दूर पर था। कूंएं के पास पहुंच कर थोड़ी देर तक वहां भी खड़ा रहा और फिर आगे बढ़ा, यहां तक कि घूमता फिरता छोटे छोटे मकानों की आड़ में जाकर नज़रों से गायब होगया और थोड़ी ही देर बाद उस तरफ से एक कमसिन औरत के रोने की आवाज आई॥

इन्द्रजीत०। जिस तौर से यह आदमी इस चौथे दर्जे में आया है बेशक ताज्जुब की बात है॥

आनन्द०। तिस पर इस रोने की आवाज ने और भी ताज्जुब में डाल दिया! मुझे आज्ञा हो तो जाकर देखूं कि क्या मामला है?

इन्द्रजीत०। जाने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर......खैर तुम इसी जगह ठहरो मैं जाता हूं॥

आनन्द०। यदि ऐसा ही है तो चलिये दोनों आदमी चलें॥

इन्द्रजीत०। नहीं एक आदमी का यहां रहना बहुत जरूरी है खैर तुम ही जाओ कोई हर्ज नहीं मगर तलवार लेते जाओ॥

दोनों भाई छत के नीचे उतर आये। आनन्दसिंह ने खूंटी से लटकती हुई अपनी तलवार ले ली और कमरे के बीचोबीच वाले गोल खम्भे के पास पहुंचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि उस खम्भे में तरह

तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। आनन्दसिंह ने एक मूरत पर हाथ रख कर जोर से दबाया, साथ ही एक छोटी सी खिड़की अन्दर जाने के लिये दिखाई दी। छोटे कुमार उसी खिड़की की राह गोल खम्भे के अन्दर घुस गये और थोड़ी ही देर में नकली बाग के पास दिखाई देने लगे। खम्भे के अन्दर कैसा रास्ता था और वह नकली बाग के पास क्योंकर पहुंचे ? इसका हाल आगे चल कर दूसरी दफे किसी के आने या जाने के समय बयान करेंगे यहां मुख़्तसर ही में लिख कर मतलब पूरा करते हैं॥

आनन्दसिंह उस तरफ गये जिधर वह आदमी गया था या जिधर से किसी औरत के रोने की आवाज आई थी। घूमते फिरते एक छोटे मकान के आगे पहुंचे जिसका दर्वाज़ा खुला था, वहां औरत तो कोई दिखाई न दी मगर उस आदमी को दरवाजे पर टहलते हुए पाया। आनन्द को देखते ही वह आदमी झट मकान के अन्दर घुस गया और कुमार भी तेजी के साथ उसका पीछा किये हुए बेखौफ मकान के अन्दर चले गए। वह मकान दो मञ्जिल का था और उसके अन्दर छोटी छोटी कई कोठड़ियां थीं और हर एक कोठड़ी में दो दो दर-वाजे थे जिससे आदमी एक कोठड़ी के अन्दर जाकर कुल कोठड़ियों की सैर कर सकता था॥

यद्यपि कुमार तेजी के साथ पीछा किये हुए चले गये मगर वह आदमी एक कोठड़ी के अन्दर जाने बाद कई कोठड़ियों में घूम फिर कर गायब होगया। रात का समय था मकान के अन्दर तथा कोठ-ड़ियों में बिल्कुल अन्धकार छाया हुआ था ऐसी अवस्था में कोठड़ियों के अन्दर घूम घूम कर उस आदमी का पता लगाना बहुत ही मुश्किल था, दूसरे इस बात का भी शक था कि यह कहीं हमारा दुश्मन न हो, लाचार हो कर कुमार वहां से लैाटे मगर मकान के बाहर न निकल

सके क्योंकि वह दर्वाजा बन्द था जिस राह से कुमार मकान के अन्दर घुसे थे। कुमार ने दर्वाजा उतारने का भी उद्योग किया मगर उस की मजबूती के आगे कुछ बस न चला। आखिर दुःखी होकर फिर मकान के अन्दर घुसे और एक कोठड़ी के दर्वाजे पर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद ऊपर की छत पर से फिर किसी औरत के रोने की आवाज आई, गौर करने से कुमार को मालूम हुआ कि यह बेशक उसी औरत की है जिसकी आवाज सुन कर यहां तक आये हैं। उस आवाज की सीध पर कुमार ने ऊपर की दूसरी मंजिल पर जाने का इरादा किया मगर सीढ़ियों का पता न लगा॥

इस समय कुमार का दिल कैसा बेचैन था यह वही जानते होंगे। हमारे पाठकों में से जो दिलेर और बहादुर होंगे वह उनके दिल की हालत कुछ समझ सकेंगे। बेचारे आनन्दसिंह हर तरह से उद्योग करके रह गये कुछ भी न बन पड़ा। न तो वह उस आदमी का पता लगा सकते थे जिसके पीछे मकान के अन्दर घुसे थे, न उस औरत का हाल मालूम कर सकते थे जिसके रोने की आवाज से दिल बेताब हो रहा था और न उस मकान से बाहर हो कर अपने भाई इन्द्रजीत-सिंह को इन सब बातों की खबर कर सकते थे, बल्कि यों कहना चाहिये कि सिवाय चुपचाप खड़े रहने या बैठ जाने के और कुछ भी नहीं कर सकते थे॥

जो कुछ रात थी खड़े खड़े बीत गई, सुबह की सुपेदी ने जिधर से रास्ता पाया मकान के अन्दर घुस कर उजाला कर दिया जिससे कुंअर आनन्दसिंह को वहां की हर एक चीज साफ साफ दिखाई देने लगी। यकायक पीछे की तरफ से दर्वाजा खुलने की आवाज कुमार के कान में पड़ी, कुमार ने घूम कर देखा तो एक कोठड़ी का दर्वाजा जो इसके पहिले बन्द था खुला हुआ पाया। वह बेधड़क उसके अन्दर

घुस गये और वहां ऊपर की तरफ गई हुई छोटी २ खूबसूरत सीढ़ियां देखीं, धड़धड़ाते हुए दूसरी मञ्जिल पर चढ़ गये और हरएक तरफ गौर से देखने लगे। इस मञ्जिल में बारह कोठड़ियां एक ही रङ्ग की देखने में आई, हरएक कोठड़ी में दो दर्वाजे थे, एक दर्वाजा कोठड़ी के अन्दर घुसने के लिये और दूसरा अन्दर की तरफ से दूसरी कोठड़ी में जाने के लिये था, इस तरह पर किसी एक कोठड़ी के अन्दर घुस कर कुल कोठड़ियों में आदमी घूम आ सकता था। धीरे धीरे अच्छी तरह उजाला हो गया और वहां की हरएक चीज ब खूबी देखने का मौका कुमार को मिला। छोटे कुमार एक कोठड़ी के अन्दर घुसे और देखा कि वहां सिवाय एक चबूतरे के और कुछ भी नहीं है। यह चबूतरा स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके ऊपर एक कमान और पांच तीर रक्खे थे। कुमार ने तीर और कमान पर हाथ रक्खा, मालूम हुआ कि वह पत्थर ही का बना हुआ है किसी काम में आने योग्य नहीं है। दूसरे दर्वाजे से दूसरी कोठड़ी में घुसे तो वहां एक लाश पड़ी देखी जिसका कटा हुआ सिर पास ही पड़ा हुआ था और वह लाश भी पत्थर ही की थी। उसे अच्छी तरह देख भाल कर तीसरी कोठड़ी में पहुंचे, उसके अन्दर चारों तरफ दीवार में कई खूंटियां थीं और हर एक खूंटी में नङ्गी तलवार लटक रही थी। वे तलवारें नकली न थीं बल्कि असली लोहे की थीं मगर हर एक पर जङ्ग चढ़ा हुआ था। जब चौथी कोठड़ी में पहुंचे तो वहां एक चांदी के सिंहासन पर बैठी हुई सूरत दिखाई पड़ी। वह सूरत किसी प्रकार के धातु की बहुत ही खूबसूरत और ठीक ठीक बनी हुई थी, देखने के साथ ही कुमार ने पहिचान लिया कि मायारानी की छोटी बहिन लाडिली की तस्वीर है। कुमार मुहब्बत भरी निगाहें उस तस्वीर पर डालने लगे। निराली जगह अपने माशूक को देखने का उन्हें अच्छा मौका

सके क्योंकि वह दर्वाजा बन्द था जिस राह से कुमार मकान के अन्दर घुसे थे। कुमार ने दर्वाजा उतारने का भी उद्योग किया मगर उस की मजबूती के आगे कुछ बल न चला। आखिर दुःखी होकर फिर मकान के अन्दर घुसे और एक कोठड़ी के दर्वाजे पर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद ऊपर की छत पर से फिर किसी औरत के रोने की आवाज आई, गौर करने से कुमार को मालूम हुआ कि यह बेशक उसी औरत की है जिसकी आवाज सुन कर यहां तक आये हैं। उस आवाज की सीध पर कुमार ने ऊपर की दूसरी मंजिल पर जाने का इरादा किया मगर सीढ़ियों का पता न लगा॥

इस समय कुमार का दिल कैसा बेचैन था यह वही जानते होंगे। हमारे पाठकों में से जो दिलेर और बहादुर होंगे वह उनके दिल की हालत कुछ समझ सकेंगे। बेचारे आनन्दसिंह हर तरह से उद्योग करके रह गये कुछ भी न बन पड़ा। न तो यह उस आदमी का पता लगा सकते थे जिसके पीछे मकान के अन्दर घुसे थे, न उस औरत का हाल मालूम कर सकते थे जिसके रोने की आवाज से दिल बेताब हो रहा था और न उस मकान से बाहर हो कर अपने भाई इन्द्रजीत-सिंह को इन सब बातों की खबर कर सकते थे, बल्कि यों कहना चाहिये कि सिवाय चुपचाप खड़े रहने या बैठ जाने के और कुछ भी नहीं कर सकते थे॥

जो कुछ रात थी खड़े खड़े बीत गई, सुबह की सुपेदी ने जिधर से रास्ता पाया मकान के अन्दर घुस कर उजाला कर दिया जिससे कुंअर आनन्दसिंह को वहां की हर एक चीज साफ साफ दिखाई देने लगी। यकायक पीछे की तरफ से दर्वाजा खुलने की आवाज कुमार के कान में पड़ी, कुमार ने घूम कर देखा तो एक कोठड़ी का दर्वाजा जो इसके पहिले बन्द था खुला हुआ पाया। वह बेधड़क उसके अन्दर

घुस गये और वहां ऊपर की तरफ गई हुई छोटी२ खूबसूरत सीढ़ियां देखीं, धड़धड़ाते हुए दूसरी मञ्जिल पर चढ़ गये और हरएक तरफ गौर से देखने लगे। इस मञ्जिल में बारह कोठड़ियां एक ही रङ्ग की देखने में आईं, हरएक कोठड़ी में दो दर्वाजे थे, एक दर्वाजा कोठड़ी के अन्दर घुसने के लिये और दूसरा अन्दर की तरफ से दूसरी कोठड़ी में जाने के लिये था, इस तरह पर किसी एक कोठड़ी के अन्दर घुस कर कुल कोठड़ियों में आदमी घूम आ सकता था। धीरे धीरे अच्छी तरह उजाला हो गया और वहां की हरएक चीज बखूबी देखने का मौका कुमार को मिला। छोटे कुमार एक कोठड़ी के अन्दर घुसे और देखा कि वहां सिवाय एक चबूतरे के और कुछ भी नहीं है। यह चबूतरा स्याह पत्थर का बना हुआ था और उसके ऊपर एक कमान और पांच तीर रक्खे थे। कुमार ने तीर और कमान पर हाथ रक्खा, मालूम हुआ कि वह पत्थर ही का बना हुआ है किसी काम में आने योग्य नहीं है। दूसरे दर्वाजे से दूसरी कोठड़ी में घुसे तो वहां एक लाश पड़ी देखी जिसका कटा हुआ सिर पास ही पड़ा हुआ था और वह लाश भी पत्थर ही की थी। उसे अच्छी तरह देख भाल कर तीसरी कोठड़ी में पहुंचे, उसके अन्दर चारो तरफ दीवार में कई खूंटियां थीं और हर एक खूंटी में नङ्गी तलवार लटक रही थी। वे तलवारें नकली न थीं बल्कि असली लोहे की थीं मगर हर एक पर जङ्ग चढ़ा हुआ था। जब चौथी कोठड़ी में पहुंचे तो वहां एक चांदी के सिंहासन पर बैठी हुई सूरत दिखाई पड़ी। वह सूरत किसी प्रकार के धातु की बहुत ही खूबसूरत और ठीक ठीक बनी हुई थी, देखने के साथ ही कुमार ने पहिचान लिया कि मायारानी की छोटी बहिन लाडिली की तस्वीर है। कुमार मुहब्बत भरी निगाहें उस तस्वीर पर डालने लगे। निराली जगह अपने माशूक को देखने का उन्हें अच्छा मौका

मिला, यद्यपि वह माशूक असली न थी केवल उसकी एक छबि थी तथापि इस सबब से कि वहां पर कोई ऐसा आदमी न था जिसका लिहाज या खयाल होता उन्हें एक निराले ढङ्ग की खुशी हुई और देर तक उसके हर एक अङ्ग की खूबसूरती को देखते रहे, इसी बीच में बगल वाली कोठड़ी में से खटके की आवाज आई, कुमार चौंक पड़े और यह सोचते हुए उस कोठड़ी की तरफ बढ़े कि शायद वह आदमी उसमें मिले जिसके पीछे पीछे इस मकान के अन्दर आये हैं मगर उस कोठड़ी में भी किसी की सूरत दिखाई न दी॥

उस कोठड़ी में चांदी का एक सन्दूक था जिसके बीच में हाथ डालने के लायक एक छेद भी बना हुआ था और छेद के ऊपर सुनहले हर्फों में यह लिखा था :—

इस छेद में हाथ डाल के निकाल और देख क्या अनूठी चीज है?"

कुंअर आनन्दसिंह ने बिना सोचे बिचारे उस छेद में हाथ डाल दिया और फिर हाथ निकाल न सके। सन्दूक के अन्दर हाथ जाते ही मानो लोहे की हथकड़ी पड़ गई जो किसी तरह हाथ बाहर निकालने की इजाजत नहीं देती थी। कुमार ने झुक कर सन्दूक के नीचे की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि यह सन्दूक जमीन से अलग नहीं है इसलिये उसे किसी तरह टसका भी नहीं सकते थे॥
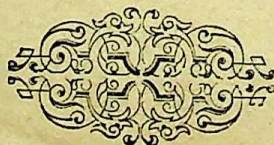
तीसरा बयान।

कुंअर आनन्दसिंह के जाने बाद इन्द्रजीतसिंह देर तक उनके आने की राह देखते रहे, जैसे जैसे देर होती थी जी बेचैन हुआ जाता था यहां तक कि तमाम रात बीत गई सवेरा हो गया और पूरब तरफ से सूर्य्यभगवान दर्शन देकर धीरे धीरे आसमान पर चढ़ने लगे। जब पहर भर से ज्यादे दिन चढ़ गया तब इन्द्रजीतसिंह बहुत ही बेताब हुए और उन्हें निश्चय हो गया कि आनन्दसिंह जरूर किसी आफत में फँस गये॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह सोच रहे थे कि स्वयं चल के आनन्दसिंह का पता लगाना चाहिये इतने ही में लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी आ पहुंची, उन्हें देख कुमार की बेचैनी कुछ कम हुई और कुछ आशा की सूरत दिखाई देने लगी। कमलिनी ने जब कुमार को उस जगह अकेले और उदास देखा तो उसे ताज्जुब मालूम हुआ मगर वह बुद्धिमान औरत तुरत ही समझ गई कि इनके छोटे भाई आनन्दसिंह इनके साथ नहीं दिखाई देते जरूर वह किसी मुसीबत में पड़ गये हैं और ऐसा होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि यह तिलिस्म का मौका है और यहां का रहने वाला थोड़ी सी भूल में तकलीफ उठा सकता है॥

कमलिनी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से उदासी का कारण और कुंअर आनन्दसिंह के न देखने का सबब पूछा जिसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने जो कुछ हुआ था बयान किया और कहा कि आनन्द को गये हुए नौ घण्टे के लगभग हो गये॥

इस समय यदि कोई लाडिली की सूरत गौर से देखता तो बेशक समझ जाता कि आनन्दसिंह का हाल सुन कर उसको सबसे ज्यादे

रञ्ज हुआ है। ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और इन्द्रजीतसिंह भी उसके दिल की हालत जान गये हों क्योंकि वह अपनी आंखों को डबडबाने और आंसू निकालने से बड़े परिश्रम से रोक रही थी। यद्यपि उसे निश्चय था कि दोनों कुमार इस तिलिस्म को अवश्य तोड़ेंगे तथापि उसका दिल दुख गया था। कौन ऐसा है जो अपने प्यारे पर आई हुई मुसीबत का हाल सुन कर बेचैन न हो ?

कमलिनी०। किसी का आना ताज्जुब नहीं है हां किसी औरत का आना बेशक ताज्जुब है क्योंकि (इन्द्रजीतसिंह की तरफ इशारा करके) आप कहते हैं एक औरत के रोने की आवाज आई थी॥

लाडिली०।ठीक है जहां तक मैं समझती हूं सिवाय तुम्हारे, मायारानी के और मेरे, किसी चौथी औरत को यहां आने का रास्ता मालूम नहीं है, हां मर्दों मे कई ऐसे हैं जो यहां आ सकते हैं॥

कमलिनी०। मगर इस देवमन्दिर के अन्दर हम लोगों के अतिरिक्त सिवाय राजा गोपालसिंह के और कोई भी नहीं आ सकता। खैर इन बातों को जाने दो अब यहां से चल कर कुंअर साहब का पता लगाना बहुत जरूरी है, यद्यपि यहां किसी दुश्मन का आना बहुत कठिन है तथापि खटका लगाही रहता है। जब दोनों कुमारों को मायारानी के कैदखाने से छुड़ा कर हमलोग सुरङ्ग ही सुरङ्ग तिलिस्मी बाग से बाहर हो रहे थे तो उस हरामजादे के पहुंचने की कौन उम्मीद थी जिसने कुमार को जख्मी किया था ? इसी तरह कौन ठिकाना यहां भी कोई दुष्ट आ पहुंचा हो॥

आखिर कुंअर आनन्दसिंह को खोजने के लिये तीनों वहां से रवाना हुए और देवमन्दिर के नीचे उतर कर उसी तरफ चले जिधर आनन्दसिंह गये थे। जब एक मकान के दर्वाजे पर पहुंचे तो कमलिनी रुकी और बड़े गौर से उस दर्वाजे को जो बन्द था देखने लगी,

इसके बाद फिर आगे बढ़ी, दूसरे मकान के बन्द दर्वाजे पर पहुंच कर उसे भी गौर से देखा और सिर हिलाती हुई फिर आगे बढ़ी। इसी तरह कुंअर इन्द्रजीतसिंह और लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी सात आठ मकान के दर्वाजों पर गई, हरएक मकान का दर्वाजा बन्द था और हरएक दर्वाजे को कमलिनी ने गौर से देखा मगर कुछ काम न चला। जब उस मकान के दर्वाजे पर कमलिनी पहुंची जिसमें कुंअर आनन्दसिंह गये हुए थे तो रुक कर मामूली तौर पर उसके दर्वाजे को भी बड़े गौर से देखने लगी और थोड़ी ही देर में बोल उठी, "बेशक कुंअर आनन्दसिंह इसी मकान में हैं, केवल कुमार ही नहीं बल्कि दो आदमी और भी इस मकान के अन्दर हैं (उँगली से दर्वाजे के ऊपर वाले चौकठ की तरफ इशारा करके) देखिये वह स्याह पत्थर की तीनों खूटियां नीचे की तरफ झुक गई हैं॥"

कुमार०। इन खूंटियों से क्या मतलब है?

कमलिनी०। इस मकान के अन्दर जो आदमी जायंगे तो खूटियां नीचे की तरफ झुक जायँगी॥

कुमार०। (ऊपर वाले चौकठ की तरफ इशारा करके) ऊपर कुल बारह खूंटियां हैं, मान लिया जाय कि बारहों खूंटियां उस समय झुक जायँगी जब बारह आदमी इस मकान के अन्दर जा पहुंचेंगे मगर जब बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जायँ तब क्या होगा?

कमलिनी०। बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जा ही नहीं सकते, यहां तिलिस्मी बातों में किसी की जबर्दस्ती नहीं चल सकती॥

कुमार० ठीक है मगर तुमने यह कैसे जाना कि आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर हैं?

कम०। मैं अन्दाज से समझती हूं कि आनन्दसिंह इसी मकान

ये हैं क्योंकि इस बाग में एक आदमी का आना आपने बयान किया था, इसके बाद कहा था कि किसी औरत के रोने की आवाज आई थी, दो तो हो चुके तीसरे आनन्दसिंह भी पीछा किये हुए इधर ही आये हैं और इस मकान के अन्दर तीन आदमियों का होना साबित है। इन सब बातों से मुझे विश्वास होता है कि वे ही तीन आदमी इस मकान के अन्दर हैं ॥

कुमार०। तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है मगर जहां तक जल्द हो सके इस बात का निश्चय करके आनन्दसिंह को छुड़ाना चाहिये, न मालूम वह किस आफत में फँस गया है !!

कमलिनी०। देखिये मैं बहुत जल्द इसका बन्दोबस्त करती हूं ॥

इसके बाद कमलिनी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा कि मकान का दरवाजा खोलना तो जरा मुश्किल है मगर चौकठ के ऊपर जो बारह खूंटियां हैं उनमें से तीन तो नीचे की तरफ झुक गई हैं बाकी नौ ऊपर की तरफ उठी हुई हैं उनमें से किसी एक को आप उछल कर थाम लीजिये और जोर करके नीचे की तरफ झुकाइये देखिये क्या होता है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछल कर एक खूंटी को थाम लिया और झटका दे कर उसे नीचे की तरफ झुकाया और जब वह नीचे की तरफ झुक गई तो उसे छोड़ कर अलग हो गये। यकायक मकान के अन्दर से इस तरह की आवाज आने लगी जैसे बड़े बड़े कल पुरजे और चरखे घूमते हों या कई गाड़ियां मकान के अन्दर दौड़ रही हों। तीनों आदमी दर्वाजे से हट कर खड़े हो गये और राह देखने लगे कि अब क्या होता है !!

थोड़ी ही देर बाद मकान की छत पर से आवाज आई कि "इधर देखो" जिसे सुनते ही तीनों आदमी चौंके और ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी जो अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था छत पर से

नीचे की तरफ झांकता हुआ दिखाई दिया। उसने कमलिनी, लाडिली और कुंअर इन्द्रजीतसिंह को अपनी तरफ देखते देख एक लपेटा हुआ कागज नीचे गिरा दिया जिसे कमलिनी ने झट उठा लिया और पढ़ कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस अब जिस तरह हो सके आप उस खूंटी को जिसे झुकाया है ज्यों की त्यों सीधी कर दीजिये॥"

इन्द्रजीत०। आखिर इसका सबब क्या है? इस पुर्जे में क्या लिखा हुआ है?

कमलिनी०। पहिले आप उसे कीजिये जो मैं कह चुकी हूं, देर करने में हमारा ही हर्ज होगा॥

लाचार कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया, उछल कर नीचे की तरफ से एक झटका ऐसा दिया कि वह खूंटी सीधी होगई और इसके साथ ही मकान के अन्दर सन्नाटा छा गया अर्थात् वह जोर शोर की आवाज जो खूंटी झुकने के साथ ही आने लगी थी एकदम बन्द हो गई। इसके बाद कमलिनी ने वह कागज का पुर्जा जो मकान की छत पर से गिराया गया था कुमार के हाथ में दे दिया, कुमार ने उसे देखा, यह लिखा हुआ था:—

१	२	३	४	५	६	७
एब्र	मेमचे	काटनो	केमारेयां	डेह	नेपो	किमहू
८	९	१०	११	१२		
चवाला	मेम	कुम	नीपो	इचो॥		

१३ लव
१४ कचीचा
१५ टेप॥

इस चीठी का मतलब तो कुमार बखूबी समझ गये क्योंकि यह ऐयारी भाषा में लिखी हुई थी और कुमार ऐयारी भाषा बखूबी जानते

थे मगर यह समझ में न आया कि चीठी लिखने वाला कौन है! क्योंकि उसने अपना नाम "टेप" लिखा था। कुमार ने कमलिनी से "टेप" का अर्थ पूछा जिसके जवाब में उसने कहा कि थोड़ी देर सब्र कीजिये आप से आप उस आदमी का पता लग जायगा। कुमार चुप हो रहे और दर्वाजे की तरफ देखने लगे। हमारे पाठक महाशय ऐयारी भाषा शायद न जानते होंगे अस्तु उन्हें समझाने के लिये उस चीठी का अर्थ हम नीचे लिख देते हैं॥

१	२	३	४	५	६
यहां	मैं हूं	डरो मत	कुमार को	तकलीफ	न होगी
७	८	९	१०	११	१२
थोड़ी देर	सब्र करो	मैं	स्वयं	नीचे	आता हूं॥
				१३	वही
				१४	दिलजला
				१५	टेप॥
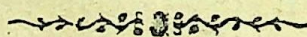
चौथा बयान।

मायारानी आज यह विचार कर खुश है कि आधी रात के समय कमलिनी इस बाग में आवेगी और मैं उसे अवश्य गिरफ्तार करूंगी मगर इस बात के लिये उसका जी बेचैन हो रहा है कि उसके सोने वाले कमरे में रात को कौन आया था! वह चारों तरफ खयाल दौड़ाती थी मगर कुछ समझ में न आता था, आखिर दिल में यही कहती थी कि आने वाला चाहे कोई हो मगर काम कमलिनी का है, आज अगर कमलिनी गिरफ्तार हो जायगी तो सब टण्टा मिट जायगा, जितनी बेफिक्री राजा गोपालसिंह को मारने से मिली है उतनी ही कमलिनी

के भी मारने से मिल सकती है, बस इसके बाद मेरे साथ दुश्मनी करने का साहस कोई भी नहीं कर सकता॥

आधी रात जाने के पहिले ही मायारानी धनपति को साथ लिये हुए उस चोरदर्वाजे के पास जा पहुंची जिधर से कमलिनी के आने की खबर सुनी थी। मायारानी के कहे मुताबिक पहरा देने वाली कई औरतें भी नङ्गी तलवारें लिये उस चोर दरवाजे के पास पहुंच कर इधर उधर पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में दबक रही थीं। धनपति उस चोर दर्वाजे के बगल ही में एक झाड़ी के अन्दर घुस रही थी और मायारानी अपने को हर बला से बचाये रहने की नीयत से कुछ दूर पर छिप कर बैठ रही॥

अब वह समय आया कि चोर दर्वाजे की राह से कमलिनी बाग के अन्दर आवे, इस लिये धनपति अपने छिपे रहने वाले स्थान से उठ कर चोरदर्वाजे के पास आई और यह विचार कर बैठ गई कि बाहर से कोई आदमी दर्वाजा खोलने का इशारा करे तो मैं झट से दर्वाजा खोल दूं। इस समय धनपति अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी और हाथ में खञ्जर लिये हुए मौका मिलने पर लड़ने के लिये भी तैयार थी। थोड़ी ही देर बाद बाहर से किसी ने चोरदर्वाजे पर थपकी मारी, धनपति खुश होकर उठी और झट से दर्वाजा खोल कर किनारे हो गई। दो आदमी बाग के अन्दर दाखिल हुए। दोनों का बदन स्याह कपड़ों से ढका हुआ था, दोनों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी जिससे रात के समय यह जानना बहुत ही कठिन था कि ये औरतें हैं या मर्द, हां एक का कद कुछ लांबा था इस लिये उस पर मर्द होने का गुमान होता था॥

जब दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर आ गये तो धनपति ने चोर दर्वाजा बन्द कर दिया और उन दोनों को अपने पीछे पीछे आने का

इशारा किया, मालूम होता था कि ये दोनों नकाबपोश बेफिक्र हैं, उन्हें इस बात की खबर भी नहीं कि यहां का रङ्ग बदला हुआ है। उन दोनों को साथ लिये हुए धनपति जब उस जगह पहुंची जहां पहरा देनेवाली लौंडियां नङ्गी तलवारें लिये छिपी हुई थीं तो खड़ी हो गई और उन दोनों की तरफ देख कर बोली, "आपकी आज्ञानुसार मैंने अपना काम पूरा कर दिया अब मुझे इनाम मिलना चाहिये।" इसके जवाब में उस नकाबपोश ने जिसका कद बनिस्बत दूसरे के छोटा था कहा कि "धनपति को, जो मर्द हो कर औरत की सूरत में मायारानी के साथ रहता है किसी से इनाम लेने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह हरामजादा स्वयं मालदार है, मैं समझता हूं कि कम्बख़्त मायारानी भी हम लोगों को गिरफ़्तार करने की नीयत से इसी जगह आ कर कहीं छिपी होगी, उसे जल्द बुला क्योंकि खास उसी को इनाम देने के लिये हमलोग यहां आये हैं॥"

धनपति वास्तव में मर्द था मगर उसका हाल किसी को मालूम न था इस लिये हम भी उसे अभी तक औरत ही लिखते चले आये मगर अब पूरी तरह से निश्चय हो गया कि वह मर्द है और हमारे पाठकों को भी यह बात मालूम होगई इस लिये अब हम उसके लिये उन्हीं शब्दों का बर्ताव करेंगे जो मर्दों के लिये उचित है॥

उस आदमी की बात सुन कर धनपति परेशान हो गया, उसे यह फिक्र पैदा हुई कि अब हमारा भेद खुल गया इस लिये जान बचनी मुश्किल है। केवल धनपति ही नहीं बल्कि मायारानी और उन कुल लौंडियों ने भी उस आदमी की बातें सुन लीं जो उसी के आस पास पेड़ों के नीचे छिपी हुई थीं। मायारानी के दिल में भी तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं, उसने पहिचानने की नीयत से नकाबपोश की आवाज पर ध्यान दिया मगर कुछ काम न चला क्योंकि उसकी आवाज़

फँसी हुई थी और इस समय हर एक आदमी जो उसकी बात सुनता, कह सकता था कि वह अपनी आवाज को बिगाड़ कर बात कर रहा है॥

धनपति यद्यपि इस फिक्र में था कि दोनों नकाबपोशों को गिरफ़ार करना चाहिये मगर एक नकाबपोश की गम्भीर और भेद से भरी हुई आवाज़ ने उसका कलेजा यहां तक दहला दिया कि उसकी बात का जवाब देना भी कठिन हो गया मगर वे लौंडियां जो उस जगह छिपी हुई थीं चारों तरफ से आकर जुट गईं और उन्होंने दोनों नकाबपोशों को घेर लिया। धनपति सोचता था कि मायारानी भी इसी जगह आ पहुंचेगी लेकिन यह आशा उसकी वृथा ही हुई क्योंकि उस नकाबपोश की आवाज़ का सबसे ज्यादे असर मायारानी पर हुआ, वह घबड़ा कर वहां से भागी और अपने दीवानखाने में जाकर बैठ रही जहां कई लौंडियां पहरा दे रही थीं। उसने एक लौंडी की जुबानी अपने सिपाहियों को जो बाग के पहिले दर्जे में रहा करते थे कहला भेजा कि खास बाग में फलानी जगह दो दुश्मन घुस आये हैं उन्हें जाकर फौरन गिरफ्तार करो और उनका सिर काट कर मेरे पास भेजो। इधर धनपति ने जब देखा कि बहुतसी लौंडिया हमारी मदद पर आ पहुंची हैं तो उस नकाबपोश का तरफ देख कर बोला :—

धनपति०। तुम लोग यहां किस काम के लिए आये हो?

नकाब०। इसका जवाब हम तुझ हरामजादे को क्यों दें?

धनपति०। मालूम होता है कि मौत तुम दोनों को यहां तक खैंच लाई है॥

नकाब०। (हँस कर) हां मैं भी यही समझता हूं कि तेरी मौत हम दोनों को यहां तक खैंच लाई है॥

इतना सुनते ही धनपति ने उस नकाबपोश पर खंजर का वार किया मगर उस नकाबपोश ने फुर्ती से पैंतरा बदल कर वार को खाली

कर दिया और दूसरे नकाबपोश ने चालाकी से धनपति के पीछे जा कर एक लात उसकी कमर में ऐसे जोर से मारी कि वह औंधे मुंह जमीन पर गिर पड़ा मगर तुरत ही सम्हल कर उठ बैठा और दोनें नकाबपोशें को गिरफ्तार करने के लिये लौंडियें को ललकारा। लौंडियां दोनें नकाबपोशें की अवस्था देख कर परेशान हो रही थीं, एक तो उन्हें विश्वास होगया कि ये दोनें नकाबपोश मर्द हैं, दूसरे धनपति की ताकत पर उन सभें को बहुत कुछ भरोसा था सो उसकी भी दुर्दशा आंखें के सामने देखने में आई, तीसरे नकाबपोश की जुबानी यह सुन कर कि धनपति मर्द है और उसके जवाब में धनपति को चुप पाकर लौंडियें का खयाल बिलकुल ही बदल गया। तिस पर भी वे सब दोनें नकाबपोशें को घेर कर खड़ी होगईं मगर कुछ कर न सकीं। धनपति ने फिर ललकार कर कहा, "देखो ये दोनें चोर हैं भागने न पावें ॥"

लांबे नकाबपोश ने लपक के बहादुरी के साथ धनपति की दाहिनी कलाई जिसमें खंजर था पकड़ ली और कहा, "हम लोग भागने के लिये नहीं आए हैं, बल्कि गिरफ़ार होकर एक अनूठा तमाशा दिखाने के लिये आए हैं, मगर तुझको भाग जाने का मौका न देंगे (लौंडियें की तरफ देख कर) हमलोग स्वयं यहां से टलने वाले नहीं हैं जहां कहो चलने के लिये तैयार हैं ॥"

अब धनपति को मालूम हुआ कि ये दोनें नकाबपोश कोई साधारण आदमी नहीं हैं और इनके सामने ताकत का घमण्ड करना वृथा है, अफ़सोस! अब भारी मुसीबत का सामना हुआ ही चाहता है ॥

इतने ही में चोर चोर का गुल मचा और कई मशालों की रोशनी दिखाई दी। ये रोशनी उन सिपाहियें के साथ थी जो बाग के पहिले दर्जे में रहने वाले सिपाहियें में से हैं और इस समय मायारानी की

आज्ञानुसार दोनों चोरों को अर्थात् नकाबपोशों को गिरफतार करने के लिये आये हैं। बात की बात में वे सब वहां जा पहुंचे और देखा कि लौंडियों के घेरे में दो नकाबपोश छाती ऊंची किये खड़े हैं, उनमें से एक धनपति की कलाई पकड़े हुए है॥

इसके पहिले कि सिपाहियों को उन दोनों नकाबपोशों के साथ किसी तरह के बर्ताव की नौबत आवे, छोटे नकाबपोश ने ऊंची आवाज में ललकार कर कहा, "भाइयो! तुम लोग यह न समझना कि मैं भाग जाऊंगा, मैं भागने के लिए नहीं आया हूं, मैं तुम लोगों का दुश्मन नहीं हूं न तुम लोगों के दुश्मनों का साथी हूं बल्कि तुम्हारा सच्चा दोस्त और खैरखाह हूं, जिस समय सूर्य्य भगवान के दर्शन होंगे और मैं अपने चेहरे पर से नकाब उठाऊंगा तब तुम लोगों को मालूम होगा कि मैं तुम्हारा पुराना साथी हूं, इस समय मैं तुमलोगों की बेवकूफी जाहिर करने आया हूं जिसे तुम लोग खुद नहीं जानते हो। हाय! तुम्हारे प्यारे मालिक राजा गोपालसिंह के गले पर छुरी फिर जाय और तुम लोगों को खबर तक न हो! इससे भी बढ़ कर अफसोस की बात यह है कि राजा गोपालसिंह का मारने वाला, उसकी उम्मीदों का खून करने वाला, उसकी रियाया के दिल पर सदमा पहुंचाने वाला, उसकी इज्जत और हुर्मत का बिगाड़ने वाला, उसके धर्म और अर्थ का सत्यानाश करने वाला, दिन रात तुम्हारे पास रहे, तुम पर हुकूमत करे, तुम्हें बेवकूफ बनावे और तुम उसका कुछ भी न कर सको! यह मत समझो कि राजा गोपालसिंह को मरे हुए कई वर्ष होगए, मैं साबित कर दूंगा कि उसके खून से गीली भई हुई जमीन भी अभी तक सूखी नहीं है, अगर तुम मुझसे पूछोगे और यह जानने की इच्छा करोगे कि तुम्हारे प्यारे राजा गोपालसिंह को किसने मारा या उसका कातिल कौन है तो मैं जरूर उसका पता दूंगा और वास्तव में मैं इसी काम के लिये

यहां आया भी हूं ॥"

छोटे नकाबपोश की बात ने सिपाहियों और पहरा देने वाली लौंडियों का दिल हिला दिया, राजा गोपालसिंह की याद ने और इस खबर ने कि "उसे मरे बहुत दिन नहीं हुए और उसका कातिल इसी जगह रह कर हम पर हुकूमत करता है।" उनके दिलों को बेचैन कर दिया, सभों की आंखों से आंसू की बूंदें जारी हो गईं और हर तरफ से आवाज आने लगी कि "कहो २ जल्द कहो, नेकदिल गरीबपरवर और हमारे हितैषी राजा का मारने वाला कौन है और कहां है?" इसके जवाब में छोटे नकाबपोश ने फिर कहा, "यही कम्बख्त धनपति, जिसे इस समय मेरे साथी ने पकड़ रक्खा है तुम्हारे राजा का कातिल और उसकी इज्जत हुर्मत का बिगाड़ने वाला है, इस बात से मत डरो कि इसकी इज्जत मायारानी के दर्बार में बहुत है, बल्कि आजमाओ और देखो कि यह मर्द है या औरत है। मैं सच कहता हूं कि यह कई वर्षों से तुम लोगों की आंखों में धूल डाल कर अर्थात् औरत बन कर तुम्हारे घर में रहता है, इस राज्य को चौपट कर रहा है मगर तुम लोगों को इसकी कुछ परवाह भी नहीं है, इतना ही नहीं मैं तुम लोगों से एक बात और कहूंगा मगर अभी नहीं जरा ठहरो, घण्टे भर और गम खाओ सबेरा होने दो और हम दोनों को इसी जगह रहने दे कर और कहीं ले जाने का उद्योग मत करो ॥"

छोटे नकाबपोश की दूसरी बातचीत ने रङ्ग और भी चोखा कर दिया, चारों तरफ सिपाहियों और लौंडियों में गुरचूं गुरचूं और काना फूसी होने लगी, किसी की आंखों से आंसू जारी था, किसी की गर्दन शर्म से नीची हो रही थी, किसी ने अफसोस से अपना हाथ अपने कलेजे पर रख दिया था, कोई ठुड्डी पकड़ कर सोच रहा था और कोई दांत पीस २ कर धनपति की तरफ देख रहा था। यद्यपि रात

का समय था मगर उन मशालें की रोशनी बखूबी हो रही थी जो मायारानी के सिपाहियें के साथ थीं और इस सबब से वहां की हर एक चीज साफ साफ दिखाई दे रही थी सिपाहियें ने धनपति का चेहरा गौर से देखा और उसमें बहुत फर्क पाया। खौफ और तरद्दुद ने धनपति को अधमुआ कर दिया था और उसका रङ्ग जर्द हो रहा था। दोनों नकाबपोशों ने जब देखा कि इस समय सिपाहियें के दिलों में जोश बखूबी पैदा होगया और वे लोग अब सब्र करना पसन्द न करेंगे तो आपुस में कुछ इशारा करने बाद छोटे नकाबपोश ने धनपति की साढ़ी का ऊपरी हिस्सा फुर्ती से खैंच लिया और उसकी चोली फाड़ डाली, इसके साथ ही दो बनावटी गेंद बाहर गिर पड़े और उसकी सूरत से मर्दानापन झलकने लगा। अब तो मायारानी के सिपाहियें को पूरे दरजे पर क्रोध चढ़ आया, उन्हें निश्चय होगया कि हमारे मालिक राजा गोपालसिंह इसी हरामजादे के सबब से मारे गये हैं। पहरा देने वाली जितनी औरतें थीं ताज्जुब में आ कर एक दूसरे की सूरत देखने लगीं और सिपाहियें ने पास पहुंच कर धनपति को घेर लिया और उसकी दुर्गति करने लगे। ऐसी अवस्था देख दोनों नकाबपोश धनपति को छोड़ अलग जा खड़े हुए। सिपाहियें ने बारी २ धनपति से प्रश्न करना शुरू किया मगर उसकी अवस्था इस लायक न थी कि वह किसी के प्रश्न का उत्तर देता, बहुत कुछ सोचने विचारने बाद यह राय पक्की हुई कि धनपति को राजदीवान के पास ले चलना चाहिये और इसी के साथ दोनों नकाबपोशों को भी उन्हीं के पास ले चलना उचित होगा॥

सिपाही लोग जिस समय धनपति के विषय में सोच विचार कर रहे थे-क्रोध में भरे हुए थे और दोनों नकाबपोशों से जो धनपति को छोड़ अलग हो गये थे थोड़ी देर के लिये बिल्कुल बेफिक्र

और लापरवाह होगये थे मगर इस समय जब यह राय पक्की हुई कि धनपति के साथ ही साथ उन दोनों को भी दीवान साहब के पास ले चलना चाहिये तो उन दोनों को खोज करने लगे मगर वे दोनों नकाबपोश मौका पाकर ऐसे गायब हुए कि उनकी झलक तक दिखाई न दी! एक बोला, "अजी इसी जगह तो थे!" दूसरे ने कहा, "यह तो हम भी जानते हैं मगर यह बताओ कि चले कहां गये?" तीसरे ने कहा, "भाई वे दोनों भागने वाले तो हैं नहीं इसी जगह कहीं छिप कर हम लोगों का तमाशा देखते होंगे।" इत्यादि तरह तरह की बातें आपुस में करने और दोनों नकाबपोशों को चारों तरफ ढूंढ़ने लगे लेकिन दोनों वहां थे कहां जो पता लगता! आखिर खोजते ढूंढ़ते सुबह होगई और इतनी ही देर में इस आश्चर्य्यजनक घटना की खबर जादू की तरह हवा के साथ मिल कर दूर दूर तक फैल गई। इस समय मायारानी के सिपाही बिल्कुल ही स्वतन्त्र और खुदराय बल्कि बागियों की तरह हो रहे थे बहुत खोजने और ढूंढ़ने पर भी जब दोनों नकाबपोशों का पता न लगा तब लाचार होकर कम्बख्त धनपति को घसीटते हुए बाग के बाहर की तरफ रवाना हुए॥

जब इन बातों की खबर मायारानी को पहुंची तो वह पहिले बहुत ही घबड़ाई और अपनी तथा धनपति की जान से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये। इस समय उसकी सूरत से उसके दिल का बहुत कुछ पता लगता था। उसका चेहरा जर्द और पलकें नीचे की तरफ झुकी हुई थीं, कभी २ उसके बदन में कम्प हो जाता और कभी आंखें चञ्चल होकर सुर्ख हो जातीं। थोड़ी ही देर बाद उसके होंठ कांपने लगे और आंखों की सुर्खी बढ़ जाने के साथ ही उसका चेहरा भी लाल हो गया जिसे देखते ही वे लौंडियां जो उसके सामने मौजूद थीं समझ गईं कि अब इसे हद्द दर्जे का क्रोध

चढ़ आया है। कुछ सोच विचार कर मायारानी बोल उठी, "इस समय उन कम्बख़्तों को समझाने बुझाने का उद्योग करना वृथा समय नष्ट करना है दूसरे मैं तिलिस्म की रानी ही क्या ठहरी जो इन थोड़े से कम्बख़्तों को काबू में न कर सकी या इन थोड़े सिपाहियों को आज्ञा भङ्ग करने की सजा न दे सकी।" इतना बोलते ही मायारानी अपने स्थान से उठी और दीवानखाने में से होती हुई उस कोठड़ी में जा पहुंची जहां से बाग के तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता था जिसका जिक्र हम उस समय कर आये हैं जब पागल बने हुए तेजसिंह मायारानी की आज्ञानुसार हरनामसिंह द्वारा बाग के तीसरे दर्जे में पहुंचाये गये थे॥

मायारानी कोठड़ी के अन्दर गई वहां से दूसरी कोठड़ी में जाने के लिए दर्वाजा था, उस दर्वाजे को खोल कर वह दूसरी कोठड़ी में गई, वहां एक छोटासा कूंआं था जिसमें उतरने के लिये जञ्जीर लगी हुई थी वह कूंए के अन्दर उतर गई और एक लम्बे चौड़े स्थान में पहुंची, वहां बिलकुल ही अन्धकार था, मायारानी टटोलती हुई एक कोने की तरफ चली गई वहां उसने कोई पेंच घुमाया जिसके साथ ही उस स्थान में बखूबी रोशनी होगई और वहां की हरएक चीज बखूबी दिखाई देने लगी। यह रोशनी एक शीशे के गोले में से निकल रही थी जो छत के साथ लटकता था। यह स्थान जिसे एक लम्बा चौड़ा दालान या चारो तरफ दीवार होने के कारण कमरा कहना चाहिये अद्भुत चीजों और तरह २ के कल पुर्जों से भरा हुआ था। बीच में कतार बांध कर चौबीस खम्भे सङ्गमर्मर के खड़े थे और दो२ खम्भोंके ऊपर महराबदार पत्थर चढ़ा हुआ था जिसे मामूली तौर पर आप बिना दर्वाजे का फाटक कह सकते हैं। महराबी पत्थरों के बीचोबीच में बड़े बड़े घण्टे लटक रहे थे और हर एक घण्टों के नीचे एक एक गड़ाड़ीदार पहिया था॥

मायारानी ने हर एक महराबों को जिन पर मोटे २ अक्षर लिखे हुए थे गौर से देखना शुरू किया और एक महराब के नीचे खड़ी हो गई जिस पर यह लिखा हुआ था, "दूसरे दर्जे का तिलिस्मी दर्वाजा।" मायारानी ने उस पहिये को घुमाना शुरू किया जो इस महराब में लटकते हुए घण्टे के नीचे था। पहिया चार पांच दफे घूम कर रुक गया, तब मायारानी वहां से हटी और यह कहती हुई घूम कर सामने वाली दीवार के पास गई कि "देखें अब वे कम्बख़्त क्योंकर बाग के बाहर जाते हैं।" दीवार में बराबर बिना दर्वाजे की पांच अलामारियां थीं और हर एक अलामारी में चार दर्जे बने हुए थे, पहिली अलामारी में शीशे की सुराहियां थीं, दूसरी में ताँबे के बहुत से डब्बे थे, तीसरी कागज के मुट्ठों से भरी हुई थी जिन्हें दीमकों ने बर्बाद कर डाला था, चौथी में अष्टधात की छोटी छोटी बहुत सी मूर्तें थीं, पांचवीं अलामारी में केवल चार ताम्रपत्र थे जिनमें खूबसूरत उभड़े हुए अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था॥

मायारानी उस अलामारी के पास गई जिसमें शीशे की सुराहियां थीं और एक सुराही उठा ली, शायद उसमें किसी तरह का अर्क था जिसमें से थोड़ा सा पीने बाद वही हाथ में लिये हुए वहां से हटी और दूसरी अलामारी के पास गई जिसमें ताँबे के डब्बे थे, एक डब्बा उठा लिया और वहां से रवाने हुई। जिस तरह इसका जाना हम लिख आये हैं उसी तरह घूमती हुई अपने दीवानखाने में पहुंची जिसके आगे तरह २ के खुशनुमा पत्तों वाले खूबसूरत गमले सजाये हुए थे। वहां पहुंच कर उसने डिब्बा खोला, उसके अन्दर एक प्रकार की बुकनी भरी हुई थी उसमें से आधी बुकनी अपने हाथ से खूबसूरत गमलों में छिड़कने बाद बची हुई आधी बुकनी हाथ में लिये हुए दीवानखाने की छत पर चढ़ गई और अपने साथ एक लौंडी को

जिसका नाम लीला था और जो सब लौंडियों की सर्दार थी लेती गई। यह सब काम जो ऊपर हम लिख आये हैं मायारानी ने बड़ी फुर्ती से उसके पहिले ही पहिले कर लिया जब तक उसके बागी सिपाही धनपति को लिये हुए बाग के दूसरे दर्जे के बाहर जायँ॥

जब मायारानी लीला को साथ लिये हुए दीवानखाने की छत पर चढ़ गई तब उसने सुराही दिखा कर लीला से कहा, "चिल्लू कर, इसमें से थोड़ा सा अर्क तुझे देती हूं उसे पी जा और उस आफत से बची रह जो थोड़ी ही देर में यहां के रहने वालों पर आने वाली है॥"

लीला०। (हाथ फैला कर) मैं खूब जानती हूं कि आप की मेहरबानी जितनी मुझ पर रहती है उतनी किसी पर नहीं॥

माया०। (लीला की अँजुली में अर्क डाल कर) इसे जल्द पी जा और जो कुछ मैं कहती हूं उसे गौर से सुन॥

लीला०। बेशक मैं ध्यान देकर सुनूंगी क्योंकि इस समय आप की अवस्था बिलकुल ही बदल रही है और यह जानने के लिये जी बहुत बेचैन हो रहा है कि अब क्या किया जायगा?

माया०। मैं अपने भेद तुझसे छिपा नहीं रखती, जो कुछ मैं कर चुकी हूं और करती हूं तुझे सब मालूम है केवल दो भेद मैंने तुझसे छिपाये थे जिनमें से एक तो आज खुल ही गया और एक का हाल मैं फिर तुझसे किसी समय कहूंगी, इन भेदों के विषय में मुझे विश्वास था कि किसी को मालूम हो जावेगा तो मेरी जान आफत में फँस जावेगी, आखिर वैसाही हुआ। तू देख ही चुकी है कि दो कम्बख्त नकाबपोशों ने यहां पहुंच कर क्या गजब मचा रक्खा है, अब जहां तक मैं समझती हूं धनपति का भेद छिपा रहना बहुत ही मुश्किल है और साथ ही इसके कम्बख्त सिपाहियों का भी मिजाज बिगड़

गया है। मान लिया जाय कि अगर मैंने किसी तरह की बुराई की भी तो उनको मेरे खिलाफ होना मुनासिब न था। खैर सिपाही लोग तो उजड्ड हुआ ही करते हैं मगर मुझसे बुराई करने का नतीजा कदापि अच्छा न होगा, अफसोस! उन लोगों ने इस बात पर ध्यान न दिया कि आखिर मायारानी तिलिस्म की रानी हैं। देख मैंने इस बाग के बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया अब उन लोगों की मजाल नहीं कि यहां से बाहर जा सकें बल्कि थोड़ी ही देर में तू देखेगी कि उन लोगों को मैं कैसे हलाल करती हूं। यह दवा जो मैंने गमलों में छिड़की है बहुत ही तेज और अपनी महक दूर दूर तक फैलाने वाली है। इससे बढ़ कर बेहोशी की दवा दुनिया में न होगी और यही उन बदमाशों के साथ जहर का काम करेगी। तू उन सभों के पास जा और उन्हें ऊंच नीच समझा कर मेरे पास ले आ, या नहीं, अच्छा देख, खैर जाने दे, मैं तुझसे एक बात और कहती हूं, यह तो मैं समझ ही चुकी कि अब मेरी जान जाया चाहती है मगर तो भी हजारों को मारे बिना मैं न छोडूंगी। अफसोस! वे दोनों कम्बख्त नकाबपोश न मालूम कहां चले गये, खैर देखा जायगा, ओफ! (अपनी ठुड्डी पकड़ के) मुझे शक है, एक तो उसमें जरूर, हां जरूर जरूर, बेशक वही है और होगा दूसरा भी, मैं समझ गई, मगर ओह! उस चीज का जाना ही बुरा हुआ, अच्छा अब मैं दूसरे काम की फिक्र करती हूं, अब तो जान पर खेलना ही पड़ा, एक दफे तो मुझे तुझे छोड़, हां तू मेरा मतलब तो समझ गई न? इस समय मेरी तबीयत......अच्छा तू जा देख मान जायँ तो ठीक है नहीं तो आज इस बाग को मैं उन्हीं के खून से तर करूंगी॥

इस समय मायारानी की बातें यद्यपि बिल्कुल बेढङ्गी और बेतुकी थीं तथापि उसकी चालाक और धूर्त लीला उसका मतलब बखूबी समझ गई और यह कहती हुई वहां से रवाने हुई कि आप चिन्ता न

कीजिये मैं अभी जाकर उन सभों को ठीक करती हूं जरा आप अपना मिजाज ठिकाने कीजिये और तिलिस्मी कवच को झटपट......

लीला अपनी बात पूरी करने भी न पाई थी कि मायारानी चौंक उठी और कुछ खुश हो कर बोली, "आह! तैने खूब याद दिलाया मैं तो उसे बिल्कुल ही भूल गई थी, अच्छा अब मैं तुझसे कुछ और भी कहूंगी॥"
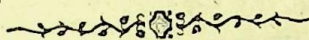
पांचवां बयान।

मायारानी के वे सिपाही जो दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करने आये थे भूतपति को लिये हुए बाग के पहिले दर्जे की तरफ रवाना हुए जहां वे लोग रहा करते थे मगर वे लोग इच्छानुसार अपने ठिकाने न पहुंच सके क्योंकि बाग के दूसरे दर्जे में से बाहर निकलने का रास्ता मायारानी की चालाकी से बन्द हो गया था। वे दर्वाजे बहुत ही मजबूत थे और उनका खोलना वा तोड़ना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव था। पाठकों को याद होगा कि बाग के दूसरे दर्जे के बीच में बहुत लम्बी चौड़ी दीवार थी जिस पर कमन्द लगा कर चढ़ना असम्भव था और सीढ़ियों के जरिये उस दीवार पर चढ़ कर एक दर्जे से दूसरे दर्जे में जाना होता था। इस समय जो दर्वाजा माया-रानी ने तिलिस्मी रीति से बन्द किया है इसके बाद वह दीवार पड़ती है जिसे लांघ कर सिपाही लोग पहिले दर्जे में जाते, उस दीवार पर चढ़ने के लिये जो सीढ़ियां थीं वह लोहे की थीं और इस समय दोनों तरफ की सीढ़ियां दीवार के अन्दर घुस गई थीं इसलिये दीवार पर चढ़ना भी असम्भव हो गया था॥

दर्वाजे को तिलिस्मी रीति से बन्द देख सिपाही लोग समझ गये

कि यह मायारानी की कार्रवाई है इस लिये उन लोगों के दिल में डर भी पैदा हुआ और सोचने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि मायारानी हम लोगों को इसी बाग में फँसा कर मार डाले क्योंकि वह तिलिस्म की रानी है, मगर यह बिचार उन लोगों के दिल में ज्यादे देर तक न रहा क्योंकि राजा गोपालसिंह के साथ दगा किये जाने का हाल जो नकाबपोश की जुबानी सुना था उस पर उन लोगों को पूरा पूरा विश्वास हो गया था और इस सबब से गुस्से के मारे उन सभों की अवस्था बिल्कुल ही बदली हुई थी ॥

आखिर धनपति को साथ लिये हुए वे सिपाही यह सोच कर पीछे की तरफ लैाटे कि हमलोग उस चोर दर्वाजे की राह से बाहर निकल जायँगे जिस राह से दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर घुसे थे, मगर उस ठिकाने पहुंच कर वे लोग बहुत ही घबड़ाये और ताज्जुब करने लगे क्योंकि उन्हें वह खिड़की नजर न आई, हां एक निशान दीवार में पाया जाता था जिससे कह सकते हैं कि शायद इसी जगह खिड़की रही हो, वह निशान मामूली न था बल्कि ऐसा मालूम होता था कि दीवार में चोर दरवाजे पर फैालादी चादर जड़ दी गई है अब उन सिपाहियों को पहिले से भी ज्यादे तरद्दुद हुआ क्योंकि सिवाय इन दोनों रास्तों के बाग के बाहर निकलने का कोई और जरिया न था। उन सिपाहियों के दिल में यह भी आया कि मायारानी की तरफ चलना चाहिये मगर खैाफ से ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी ॥

इस समय दिन घण्टे भरसे ज्यादे आ चुका था, सिपाही लोग क्रोध की अवस्था में भी तरद्दुद और घबरहट से खाली न थे, खड़े खड़े सोच रहे थे कि किधर जाना और क्या करना चाहिये । इतने ही में सामने से लीला आती हुई दिखाई पड़ी । जब वह पास पहुंची सिपाहियों की तरफ देख कर ऊंची आवाज में बोली, "तुमलोग अपनी जान

के दुश्मन क्यों हो रहे हो? क्या नौकर होकर भी इस बात को भूल गये कि मायारानी एक भारी तिलिस्म की रानी है और जो चाहे कर सकती है? दो चार हजार आदमियों को बर्बाद कर डालना उसके आगे एक अदना काम है, अफसोस! ऐसे मालिक से खिलाफ होकर तुम अपनी जान बचाया चाहते हो! याद रक्खो कि इस बाग में भूखे प्यासे मर जाओगे और तुम्हारे किये कुछ भी न होगा, मैं तुम लोगों को समझाती हूं और कहती हूं कि अपने मालिक के पास चलो और उससे माफी मांग कर जान बचाओ॥"

सिपाही लोग लीला की बात पर गौर कर ही रहे थे कि बाईं तरफ से शङ्ख के बजने की आवाज आई। घूम कर देखा तो वही दोनों नकाबपोश दिखाई पड़े जो हाथ के इशारे से सिपाहियों को अपनी तरफ बुला रहे थे। उन्हें देखते ही सिपाहियों की अवस्था कुछ बदल गई और उनके दिल के अन्दर उम्मीद, रञ्ज, डर और तरद्दुद का चरखा तेजी के साथ घूमने लगा। लीला की बातों पर जो कुछ विचार कर रहे थे उसे छोड़ दिया और धनपति को साथ लिये हुए इस तरह दोनों नकाबपोशों की तरफ बढ़े जैसे प्यासे पंसाले (पौसरा) की तरफ लपकते हैं। जब उन दोनों नकाबपोशों के पास पहुंचे तो एक नकाबपोश ने पुकार कर कहा, "इस बात से मत घबड़ाओ कि मायारानी ने तुम लोगों को मजबूर कर दिया और इस बाग से बाहर जाने के लायक नहीं रक्खा, आओ हम तुम सभों को इस बाग से बाहर कर देते हैं मगर इसके पहिले एक ऐसा तमाशा दिखाया चाहते हैं कि जिसे देख कर तुम बहुत ही खुश हो जाओगे और हद्द से ज्यादे बेफिक्री तुम लोगों के हिस्से में पड़ेगी, मगर वह तमाशा हम एक दम से सभों को नहीं दिखाया चाहते, हां मैं इस कोठड़ी में (हाथ का इशारा करके) जाता हूं तुम लोग बारी बारी से पांच पांच आदमी

आओ और अद्भुत, अद्वितीय, अनूठा और आश्चर्यजनक तमाशा देखो ॥"

इस समय दोनों नकाबपोश जिस जगह खड़े थे उसके पीछे की तरफ एक दीवार थी जो बाग के दूसरे और तीसरे दर्जे की हद्द को अलग कर रही थी। उसी जगह पर एक मामूली कोठड़ी भी थी। बात पूरी होते ही दोनों नकाबपोश पांच सिपाहियों को अपने साथ आने के लिये कह कर कोठड़ी के अन्दर घुस गये। इस समय उन सिपाहियों की अवस्था कैसी थी उसे लिखना ज़रा कठिन है, उन लोगों का दिल दोनों नकाबपोशों के साथ दुश्मनी करने की आज्ञा नहीं देता था और न यह कहता था कि उन दोनों को छोड़ दो और जिधर जायं जाने दो ॥

जब दोनों नकाबपोश कोठड़ी के अन्दर घुस गये तो उनके बाद पांच सिपाही जो दिलावर और ताकतवर थे कोठड़ी में घुसे और चौथाई घड़ी तक उसके अन्दर रहे, इसके बाद जब कोठड़ी के बाहर निकले तो उनके साथियों ने देखा कि उन पांचों के चेहरे से उदासी झलक रही है, आंखों से आंसू की बूंदें टपक रही हैं और सिर झुकाये अपने साथियों की तरफ आ रहे हैं। जब पास आये तो उन पांचों की अवस्था एकदम बदल जाने का सबब सिपाहियों ने पूछा, जिस के जवाब में उन पांचों ने कहा कि "पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है तुम लोग पांच पांच आदमी बारी बारी से जाओ और जो कुछ हैं वह अपनी आंखों से देख लो, हम लोगों से पूछोगे तो कुछ भी न बतावेंगे, हां इतना अवश्य कहेंगे कि वहां जाने में किसी तरह का हर्ज नहीं है ॥"

आपुस में ताज्जुब भरी बातें करने बाद और पांच सिपाही उस कोठड़ी के अन्दर घुसे जिसमें दोनों नकाबपोश थे और पहिले पांचों की तरह ये पांचों भी चौथाई घड़ी तक उस कोठड़ी के अन्दर रहे,

इसके बाद जब बाहर निकले तो इन पांचों की भी वही अवस्था थी जैसी उन पांचों की जो इनके पहिले कोठड़ी के अन्दर से होकर आये थे। इसके बाद फिर पांच सिपाही कोठड़ी के अन्दर घुसे और उनकी भी वही अवस्था हुई; यहां तक कि जितने सिपाही वहां मौजूद थे पांच पांच करके कोठड़ी के अन्दर से हो आये और सभों की वही अवस्था हुई जैसी पहिले गए हुये पांचों सिपाहियों की हुई थी। धनपति ताज्जुब भरी निगाहों से यह तमाशा देख रहा था और असल भेद जानने के लिये बेचैन हो रहा था मगर इतनी हिम्मत न थी कि किसी से कुछ पूछता क्योंकि नकाबपोश की आज्ञानुसार सिपाहियों की तरह वह उस कोठड़ी के अन्दर जाने नहीं पाया जिसमें दोनों नकाबपोश थे। अन्त में सब सिपाहियों ने आपुस में बातें कर के इशारे से इस बात का निश्चय कर लिया कि उस कोठड़ी के अन्दर सभों ने एक ही रङ्ग का तमाशा देखा। थोड़ी देर बाद दोनों नकाबपोश भी कोठड़ी के बाहर निकल आए और उनमें से नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों की तरफ देख कर कहा कि "धनपति को अब मेरे हवाले करो।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया बल्कि अदब के साथ आगे बढ़ कर धनपति को नकाबपोश के हवाले कर दिया और दोनों नकाबपोश उसे साथ लिये हुए फिर उसी कोठड़ी के अन्दर घुस गये और आधे घण्टे तक वहां रहे इसके बाद जब कोठड़ी के बाहर निकले तो नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों से कहा, "धनपति को हमने एक ठिकाने पहुंचा दिया अब आओ तुम लोगों को भी इस बाग के बाहर कर दें।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया और दो तीन झुण्ड होकर नकाबपोशों के साथ उस कोठड़ी के अन्दर गए और गायब हो गए। दोनों नकाबपोश भी उसी कोठड़ी के अन्दर गायब हो गये और उस कोठड़ी का दरवाजा भीतर से बन्द हो गया।

इस पचड़े में दो पहर दिन चढ़ आया, लीला दूर से खड़ी यह तमाशा देख रही थी, जब सन्नाटा हो गया तो उसने इन बातों की खबर मायारानी तक पहुंचाई ॥

छठां बयान।

लीला की जुबानी दोनों नकाबपोशों, सिपाहियों और धनपति का हाल सुन कर मायारानी बहुत ही उदास और परेशान होगई। वह आशा जो तिलिस्मी दर्वाजा बन्द करने और अद्भुत बेहोशी का धूरा पाने पर उसे बंधी थी बिल्कुल जाती रही। तिलिस्म में जाकर तिलिस्मी दर्वाजे को बन्द करना, तिलिस्मी दवा पीना और लीला को पिलाना, बेहोशी की बुकनी फूलों के गमलों में डालना बिल्कुल व्यर्थ होगया। धनपति दोनों नकाबपोशों के कब्जे में पड़ गया और सिपाही सब सहज ही में बाग के बाहर हो गये। इस समय दोनों नकाबपोशों की कार्रवाइयों ने उसे इतना बदहवास कर दिया था कि वह अपने बचाव की कोई अच्छी सूरत सोच नहीं सकती थी। आखिर वह हर तरह से दुःखी हो कर फिर उसी तिलिस्मी तहखाने के अन्दर गई जिसमें पहिले जाकर बाग के दूसरे दर्जे का दर्वाजा तिलिस्मी रीति से बन्द किया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि वहां दीवार में बिना दर्वाजे की पांच अलमारियां थीं और दूसरी अलमारी में तांबे के बहुत से डब्बे थे। इस समय मायारानी ने उन्हीं डब्बों को खोल २ कर देखना शुरू किया। वे डब्बे छोटे और बड़े हर प्रकार के थे। कई डब्बे खोल २ कर देखने के बाद मायारानी ने एक डब्बा खोला जिसका पेटा एक हाथ से कम न था। उस डब्बे के अन्दर एक हाथीदांत का तमंचा बारह अंगुल का और छोटी २ बहुत सी गोलियां थीं और उन

गोलियों का रङ्ग लाल था, इसके अलावे एक ताम्रपत्र भी उसमें था। मायारानी डब्बे को ले कर वहां से रवाने हुई और तहखाने का दरवाजा बन्द करती हुई अपने स्थान पर उस जगह पहुंची जहां उसकी लौंडियां उसकी राह देख रही थीं। उसने सब लौंडियों के सामने उस डब्बे को खोला और ताम्रपत्र हाथ में लेकर पढ़ने लगी, जब पूरी तरह से पढ़ चुकी तो लीला की तरफ देख कर बोली, "तू देखती है कि मैं किस बला में फंस गई हूं?"

लीला०। जी हां, मैं बखूबी देख रही हूं। दोनों नकाबपोशों की तरफ जब ध्यान देती हूं तो कलेजा कांप जाता है, इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब कोई भारी उपद्रव उठने वाला है क्योंकि नकाबपोशों की बदौलत इस बाग के सिपाही भी बागी होगए॥

मायारानी०। बेशक ऐसा ही है और ताज्जुब नहीं कि वे सिपाही लोग जो इस समय मेरे पंजे से निकल गए हैं मेरे फौजी सिपाहियों को भी भड़कावें॥

लीला०। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं, बलिक इन सिपाहियों की बदौलत आपकी रियाया भी बागी हो जायगी और जान बचाना भी मुश्किल हो जायगा, अफसोस! आप ने दोनों भेद मुझसे छिपा रक्खे नहीं तो मैं इस विषय में कुछ राय देती॥

माया०। (ताज्जुब से) दोनों भेद कौन से?

लीला०। एक तो यही धनपति वाला॥

माया०। हां ठीक है, और दूसरा कौन?

लीला०। (मायारानी के कान की तरफ झुककर धीरे से) राजा गोपालसिंह वाला, जिसे भूतनाथ की मदद से आपने मार डाला है

लीला की बात सुन कर मायारानी चौंक पड़ी, अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और लीला का हाथ पकड़ के किनारे लेगई और धीरे

से बोली, "देख लीला! तू केवल मेरी लौंडियों की सर्दार ही नहीं है बल्कि बचपन की साथी और मेरी प्यारी सखी भी है, सच बता गोपालसिंह वाला भेद तुझे कैसे मालूम हुआ?"

लीला०। आप जानती ही हैं कि मुझे कुछ कुछ ऐयारी का भी शौक है॥

मायारानी०। हां खूब जानती हूं कि तू ऐयारी का काम भी कर सकती है लेकिन इस किस्म का काम मैंने तुझसे कभी नहीं लिया॥

लीला०। यह मेरी बदकिस्मती थी नहीं तो मैं अब तक ऐयारा की पदवी पा चुकी होती॥

माया०। ठीक है, खैर तो इससे मालूम हुआ कि तूने ऐयारी से गोपालसिंह वाला भेद मालूम कर लिया॥

लीला०। जी हां ऐसा ही है, मैंने ऐयारी से और भी बहुत से भेद मालूम कर लिये हैं जिनकी खबर आपको भी नहीं है और जिनका इस समय कहना मैं उचित नहीं समझती मगर शीघ्र ही उस विषय में मैं आपसे बातचीत करूंगी, इस समय तो केवल इतना ही कहना है कि किसी तरह अपनी जान बचाने की फिक्र कीजिये क्योंकि मुझे भूतनाथ की दोस्ती पर भी शक है॥

माया०। क्या तू समझती है कि भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया?

लीला०। जी हां, मैं यही समझती हूं कि राजा गोपालसिंह मारे नहीं गए बल्कि जीते हैं?

माया०। अगर ऐसा है तो बड़ा ही गजब हुआ। मगर इसका कोई सबूत भी है?

लीला०। आज तो नहीं मगर कल तक मैं इसका सबूत आपको दे सकूंगी॥

माया०। अफसोस! अफसोस!! मैं इस समय किले में जाकर

अपने दीवान से राय लेने वाली थी मगर अब तो कुछ और ही सोचना पड़ा॥

लीला०। (उस डब्बे की तरफ इशारा करके जो अभी तिलिस्मी तहखाने में से मायारानी लाई थी) पहिले यह बताइये कि इस डब्बे को आप किस नीयत से लाई हैं? वह हाथीदांत का तमञ्चा कैसा है और वे गोलियां क्या काम दे सकती हैं?

माया०। वे गोलियां उसी तमञ्चे में रखकर चलाई जायंगी, उनके चलने में किसी तरह की आवाज नहीं होती और गोली भी आध कोस तक जा सकती है। जब वह गोली किसी के बदन पर लगेगी या जमीन पर गिरेगी तो एक भारी आवाज देकर फट जायगी और उसके अन्दर से बहुत सा जहरीला धूआं निकलेगा और वह धूआं जिस जिस के नाक में जायगा वह बेहोश हो जायगा। अगर हजार आदमियों की भीड़ आ रही हो तो उन सभों को बेहोश करने के लिये केवल दस पांच गोलियां काफी हैं॥

लीला०। बेशक यह बहुत अच्छी चीज है और ऐसे समय में आपका बड़ा काम दे सकती है मगर मैं समझती हूं कि उस डिब्बे में पांच सौ से ज्यादे गोलियां न होंगी और उसके बाद कदाचित वह ताम्रपत्र* कुछ काम दे सके जो उस डिब्बे में था और जिसे आपने हमलोगों के सामने पढ़ा था॥

माया०। वाह! तुम बहुत ही समझदार हो, बेशक ऐसा ही है। उस ताम्रपत्र में उन गोलियों के बनाने की तर्कीब लिखी है। इस तिलिस्म में ऐसी २ हजारों चीजें हैं मगर लाचार हूं कि तिलिस्म का पूरा २ हाल मुझे मालूम नहीं है बल्कि चौथे दर्जे के विषय में तो मैं कुछ भी

* ताम्रपत्र-तांबे की तख़्ती जिसपर कुछ लिखा या खुदा हुआ हो॥

नहीं जानती,जो कुछ मैं जानती हूं या जहां तक तिलिस्म में मैं जा सकती हूं वहां ऐसी ऐसी और भी कई चीजें हैं जो समय पर मेरा काम दे सकती हैं ॥

लीला०। अब यही समय है कि उन चीजों को लेकर आप यहां से चल दीजिये क्योंकि इस बाग तथा आपके राज्य पर अब आफत आया ही चाहती है, मैंने सुना है कि राजा बीरेन्द्रसिंह की बेशुमार फौज जमानियां की तरफ आ रही है बल्कि यों कहना चाहिये कि आजकल में पहुंचा ही चाहती है ॥

माया०। हां यह खबर मैंने भी सुनी है। यदि गोपालसिंह का और धनपति का मामला न बिगड़ा होता तो मैं मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाती परन्तु इस समय तो मुझे अपनी रिआया में से किसी का भी भरोसा नहीं है ॥

लीला०। भरोसे के साथही साथ आप समझ रखिये कि आप अपने किसी नौकर को हुकूमत की लाल आंख नहीं दिखा सकतीं। ओफ! इन बातों में वृथा देर हो रही है, इस विषय को बहुत जल्द तय कर लेना चाहिये कि अब क्या करना और कहां जाना मुनासिब होगा ॥

माया०। हां ठीक है मगर इसके भी पहिले मैं तुमसे यह पूछती हूं कि तुम इस मुसीबत में मेरा साथ देने के लिये कब तक तैयार रहोगी ?

लीला०। जब तक मेरी ज़िन्दगी है या जब तक आप मुझ पर भरोसा करेंगी ॥

माया०। यह जवाब तो साफ साफ नहीं है बल्कि टेढ़ा है ॥

लीला०। इस पर आप अच्छी तरह गौर कीजिये मगर यहां से निकल चलने के बाद ॥

माया०। अच्छा यह बताओ कि मेरी और लौंडियों का क्या हाल है?

लीला०। आपकी लौंडियों में केवल चार पांच ऐसी हैं जिन पर मैं भरोसा रख सकती हूं, बाकी लौंडियों के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती और न उनके दिल का हाल जाना जाता है॥

माया०। (ऊंची सांस लेकर) हाय! यहां तक नौबत पहुंच गई? यह सब मेरे पापों का फल है! अच्छा जो होगा देखा जायगा, इस अनूठे तमंचे और गोलियों को मैं सम्हालती हूं और थोड़ी देर के लिये तिलिस्मी तहखाने में जाकर देखती हूं कि मेरे काम की ऐसी कौन सी चीज़ है जिसे सफर में मैं अपने साथ रख सकूं। जो कुछ हाथ लगे ले आती हूं और बहुत जल्द तुमको और उन लौंडियों को साथ लेकर निकल भागती हूं जिनपर तुम भरोसा रखती हो। कोई हर्ज नहीं इस गई गुजरी हालत में भी एक दफे लाखों दुश्मनों को जहन्नुम में पहुंचाने की हिम्मत रखती हूं॥

इसके जवाब में पीछे की तरफ से किसी गुप्त मनुष्य ने कहा कि "बेशक बेशक, तुम मरते २ भी हजारों घर चौपट करोगी॥"

सातवां बयान।

ऐयारी भाषा की चीठी पढ़ने और कमलिनी के ढाढ़स दिलाने पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की दिलजमई तो हो गई परन्तु "टेप" का परिचय पाने के लिये बेचैन हो रहे थे और उससे मिलने की आशा में दरवाजे की तरफ ध्यान लगा कर थोड़ी देर तक खड़े रह गए। यकायक उस मकान का दर्वाजा खुला और धनपति की कलाई पकड़े "टेप" महाशय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए दिखाई दिये। दर्वाजे

नहीं जानती, जो कुछ मैं जानती हूं या जहां तक तिलिस्म में मैं जा सकती हूं वहां ऐसी ऐसी और भी कई चीजें हैं जो समय पर मेरा काम दे सकती हैं ॥

लीला० । अब यही समय है कि उन चीजों को लेकर आप यहां से चल दीजिये क्योंकि इस बाग तथा आपके राज्य पर अब आफत आया ही चाहती है, मैंने सुना है कि राजा बीरेन्द्रसिंह की बेशुमार फौज जमानियां की तरफ आ रही है बल्कि यों कहना चाहिये कि आजकल में पहुंचा ही चाहती है ॥

माया०। हां यह खबर मैंने भी सुनी है। यदि गोपालसिंह का और धनपति का मामला न बिगड़ा होता तो मैं मुकाबला करने के लिये तैयार हो जाती परन्तु इस समय तो मुझे अपनी रिआया में से किसी का भी भरोसा नहीं है ॥

लीला० । भरोसे के साथही साथ आप समझ रखिये कि आप अपने किसी नौकर को हुकूमत की लाल आंख नहीं दिखा सकतीं । ओफ ! इन बातों में वृथा देर हो रही है, इस विषय को बहुत जल्द तय कर लेना चाहिये कि अब क्या करना और कहां जाना मुनासिब होगा ॥

माया०। हां ठीक है मगर इसके भी पहिले मैं तुमसे यह पूछती हूं कि तुम इस मुसीबत में मेरा साथ देने के लिये कब तक तैयार रहोगी ?

लीला० । जब तक मेरी ज़िन्दगी है या जब तक आप मुझ पर भरोसा करेंगी ॥

माया० । यह जवाब तो साफ साफ नहीं है बल्कि टेढ़ा है ॥

लीला० । इस पर आप अच्छी तरह गौर कीजिये मगर यहां से निकल चलने के बाद ॥

माया०। अच्छा यह बताओ कि मेरी और लौंडियों का क्या हाल है?

लीला०। आपकी लौंडियों में केवल चार पांच ऐसी हैं जिन पर मैं भरोसा रख सकती हूं, बाकी लौंडियों के विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती और न उनके दिल का हाल जाना जाता है॥

माया०। (ऊंची सांस लेकर) हाय! यहां तक नौबत पहुंच गई? यह सब मेरे पापों का फल है! अच्छा जो होगा देखा जायगा, इस अनूठे तमंचे और गोलियों को मैं सम्हालती हूं और थोड़ी देर के लिये तिलिस्मी तहखाने में जाकर देखती हूं कि मेरे काम की ऐसी कौन सी चीज है जिसे सफर में मैं अपने साथ रख सकूं। जो कुछ हाथ लगे ले आती हूं और बहुत जल्द तुमको और उन लौंडियों को साथ लेकर निकल भागती हूं जिनपर तुम भरोसा रखती हो। कोई हर्ज नहीं इस गई गुजरी हालत में भी एक दफे लाखों दुश्मनों को जहन्नुम में पहुंचाने की हिम्मत रखती हूं॥

इसके जवाब में पीछे की तरफ से किसी गुप्त मनुष्य ने कहा कि "बेशक बेशक, तुम मरते २ भी हजारों घर चौपट करोगी॥"

सातवां बयान।

ऐयारी भाषा की चीठी पढ़ने और कमलिनी के ढाढ़स दिलाने पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह की दिलजमई तो हो गई परन्तु "टेप" का परिचय पाने के लिये बेचैन हो रहे थे और उससे मिलने की आशा में दरवाजे की तरफ ध्यान लगा कर थोड़ी देर तक खड़े रह गए। यकायक उस मकान का दर्वाजा खुला और धनपति की कलाई पकड़े "टेप" महाशय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए दिखाई दिये। दर्वाजे

के बाहर निकलते ही "टेप" ने अपने चेहरे पर से नकाब हटा दिया। सूरत देखते ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह हँस पड़े और लपक के उनकी कलाई पकड़ कर बोले, "अहा! यह किसे आशा थी कि यहां पर राजा गोपाल-सिंह से मुलाकात होगी ?" (कमलिनी की तरफ देख के) क्या आप ही ने अपना नाम "टेप" रक्खा है ?

कमलिनी० । जी हां ॥

इन्द्रजीत० । (गोपालसिंह से) क्या आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर हैं ?

गोपालसिंह० । जी हां, आप मकान के अन्दर चलिये और उन से मिलिये ॥

इन्द्रजीत०। एक औरत के रोने की आवाज हमलोगों ने सुनी थी शायद वह भी इस मकान के अन्दर हो ॥

गोपाल०। जी नहीं वह कमबख्त औरत (धनपति की तरफ इशारा करके) यही है। न मालूम ईश्वर ने इस हरामजादे को कैसा मर्द बनाया है कि आवाज से भी कोई इसे मर्द नहीं समझ सकता !!

कमलिनी० । इसे आपने कब पकड़ा ?

गोपाल०। यह कल से मेरे कब्जे में है इसे मैं कल ही इस मकान में कैद कर गया था आज छुड़ाने के लिये आया हूं ॥

इन्द्रजीत०। आप कल भी इस मकान में आ चुके हैं मगर मुझसे मिलने के लिये शायद कसम खा चुके थे ॥

गोपाल० । (हँस कर) नहीं नहीं, मेरा वह समय बड़ा ही अन-मोल था, एक एक पल की देर बुरी मालूम होती थी इसी से आप से मिलने के लिये मैं रुक न सका इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो बहुत ही हँसेंगे और खुश होंगे। पहिले मकान के अन्दर चलकर आनन्दसिंह से मिल लीजिये तो यह अनूठा किस्सा मैं आपसे कहूं॥

इन्द्रजीत०। क्या आनन्द यहां तक नहीं आ सकता?

गोपाल०। यहां नहीं आ सकते, वह तिलिस्मी कारखाने में फँस चुके हैं इसलिये छूटने का उद्योग नहीं कर सकते, बल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं और उसे तोड़ कर निकल आ सकते हैं। अब उनसे मिलने में देर न कीजिये॥

इन्द्रजीत०। आप जिस काम के लिये गये थे वह हुआ?

गोपाल०। वह काम बखूबी होगया जिसका खुलासा हाल थोड़ी देर में मैं आपसे कहूंगा॥

कमलिनी०। भूतनाथ को कहां छोड़ा?

गोपाल०। वह भी आता ही होगा। वास्तव में वह बड़ा ही चालाक और धूर्त ऐयार है, उसने जो २ काम किये हैं सुनोगी तो हँसते २ लोटन कबूतर बन जाओगी (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) और आनन्दसिंह के फँसने से दुःखी न होइये क्योंकि आप दोनों भाइयों को इस तिलिस्म का तोड़ना जरूरी हो चुका है॥

इन्द्रजीत०। ठीक है मगर रिक्तगन्थ का पूरा पूरा मतलब उसकी समझ में नहीं आया इससे तिलिस्म के काम में उसे तकलीफ होना सम्भव है, केवल दस बारह शब्द ऐसे हैं जिनका अर्थ नहीं लगता और उन शब्दों का अर्थ जाने बिना बहुत सी बातों का मतलब समझ में नहीं आता॥

गोपाल०। (हँस कर) आपका कहना ठीक है, मैं एक बात आपको ऐसी बताता हूं कि जिससे आप हर एक तिलिस्मी ग्रन्थ को अच्छी तरह पढ़ और समझ लेंगे और उनमें चाहे कैसे ही टेढ़े वेड़े शब्द क्यों न हों मगर मतलब समझने में कठिनता न होगी॥

इन्द्रजीत०। वह क्या?

गोपाल०। केवल एक छोटी सी बात है॥

इन्द्रजीत० । मगर उसके बताने में आप बड़ी इज्जत करा रहे हैं ॥

गोपालसिंह ने झुक कर इन्द्रजीतसिंह के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही कुमार हँस पड़े और बोले, "बेशक बड़ी चतुराई की गई है, जरा से फेर में मतलब कैसा बिगड़ जाता है! आप का कहना बहुत ठीक है, अब कोई शब्द ऐसा नहीं निकल सकता जिसका अर्थ मैं न लगा सकूं, क्यों न हो आखिर आप तिलिस्म के राजा ही ठहरे ॥"

कमलिनी से इस समय चुप न रह गया, वह ताने के तौर पर सिर नीचे करके बोली, "बेशक राजा ही ठहरे इसीसे बेमुरौवती कूट कूट कर भरी है।" इसके जवाब में गोपालसिंह ने कहा कि "नहीं नहीं ऐसा मत ख्याल करो, तुम्हारा उदास चेहरा कहे देता है कि तुम्हें इस बात का रंज है कि हमने जो कुछ कुमार के कान में कहा उससे तुमको जान बूझ के वंचित रक्खा, मगर नहीं (धनपति की तरफ इशारा करके) इस कम्बख़्त के खयाल से मैंने ऐसा किया, आखिर वह भेद तुमसे छिपा न रहेगा ॥"

इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने एक विचित्र निगाह कमलिनी पर डाली जिसे देखते ही वह हँस पड़ी और मकान के अन्दर जाने के लिये दर्वाजेकी तरफ बढ़ी। कुंअर इन्द्रजीतसिंह, कमलिनी, लाडिली और उनके साथ धनपति का हाथ पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के अन्दर गए ॥

इस मकान की हालत हम ऊपर लिख आये हैं इसलिये पुनः नहीं लिखते। राजा गोपालसिंह सभों को साथ लिये हुए कोठड़ी में पहुंचे जिसमें कुंअर आनन्दसिंह फँसे हुए थे। इस समय वहां की अवस्था वैसी न थी जैसी कि हम ऊपर लिख आये हैं, अर्थात् वह तिलिस्मी सन्दूक जिसमें आनन्दसिंह का हाथ फँस गया था वहां न था और न आनन्दसिंह ही थे, हां उस कोठड़ी की जमीन का वह हिस्सा जिस

पर सन्दूक था जमीन के अन्दर धँस गया था और वहां एक कूएँ की शक्ल दिखाई दे रही थी। यह देख राजा गोपालसिंह ताज्जुब में आ गये और उस कूएँ की तरफ देख कर कुछ सोचने लगे। आखिर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हें टोका और चुप रहने का सबब पूछा॥

इन्द्रजीत०। आप क्या सोच रहे हैं? शायद आनन्दसिंह को आपने इसी कोठड़ी में छोड़ा था॥

गोपाल०। जी हां, इस जगह जहां आप कूएं की तरह गड़हा देखते हैं एक सन्दूक था और उसमें एक छेद था उसी छेद के अन्दर हाथ डाल कर कुमार ने अपने को फँसा दिया था, मालूम होता है कि अब वे तिलिस्म के अन्दर चले गये! इसी खयाल से मैंने आपको कहा था कि कुंअर आनन्दसिंह अपने को छुड़ा नहीं सकते बल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं॥

इन्दजीतसिंह०। अफसोस! खैर मर्जी परमेश्वर की, इस समय मेरा दिमाग परेशान हो रहा है, धनपति को मैं इस अवस्था में क्यों देख रहा हूं? यकायक आपका इस बाग में आना कैसे हुआ? आप मुझसे मिले बिना सीधे इस मकान में क्यों चले आये? आनन्द को मकान में आपने क्यों ठहरने दिया अथवा उसे बचाने का उद्योग आप ने क्यों न किया? इत्यादि बहुत सी बातें जानने के लिये मैं परेशान हो रहा हूं मगर इसके पहिले मैं इस कूएं की अवस्था जानने का उद्योग करूंगा (कमलिनी की तरफ देख कर) जरा तिलिस्मी खञ्जर मुझे दो उसके जरिये से कूएं के अन्दर उजाला करके मैं देखूंगा कि क्या है॥

कमलिनी०। (तिलिस्मी खञ्जर और अँगूठी कुमार के हाथ में दे कर) लीजिये शायद इससे कुछ काम चले॥

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने खञ्जर हाथ में लिया और धीरे धीरे उस गड़हे के किनारे पर गये जो ठीक कूएं की तरह हो रहा था। खञ्जर

वाला हाथ कुमार ने कूंएं के अन्दर डाला और उसका कब्ज़ा दबा कर उजाला करने बाद झांक कर देखा कि उसके अन्दर क्या है। न मालूम कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कूएं के अन्दर क्या देखा कि बिना किसी से कुछ कहे तिलिस्मी खञ्जर हाथ में लिये हुए कूंएं के अन्दर कूद पड़े। यह देखते ही कमलिनी और लाडिली परेशान हो गईं, राजा गोपालसिंह को भी ताज्जुब हुआ। इन्द्रजीतसिंह की तरह राजा गोपालसिंह ने भी अपना तिलिस्मी खञ्जर हाथ में लेकर कूएँ के अन्दर किया और उसका कब्जा दबाकर रोशनी करने बाद झांक कर देखा कि क्या है मगर कुछ मालूम न हुआ॥

कमलिनी०। कुछ मालूम हुआ कि इस गड़हे में क्या है?

गोपाल०। कुछ भी मालूम नहीं होता, न जाने क्या देख कर कुमार इसमें कूद गये!!

कमलिनी०। खैर आप यहां से हटिये और सोचिये कि अब क्या करना होगा?

गोपाल०। यद्यपि मैं जानता हूं कि यह तिलिस्म कुमार के हाथ से टूटेगा परन्तु इस रीति से दोनों कुमारों का तिलिस्म के अन्दर जाना ठीक न हुआ। देखा चाहिये ईश्वर क्या करता है? चलो अब यहां रहना उचित नहीं है और न कुमार से मुलाकात होने की आशा है॥

कमलिनी०। (अफसोस के साथ) चलिये!!

गोपाल०। (बाहर की तरफ चलते हुए) अफसोस! कुमार से कई बातें कहने की आवश्यकता थी मगर लाचार!!

कमलिनी०। (धनपति की तरफ इशारा करके) इसे आप कहां कहां लिये फिरेंगे और यहां क्यों लाये थे?

गोपालसिंह०। इसे मैं कल गिरफ़ार करके इस मकान के अन्दर छोड़ गया था। मुझे आशा थी कि यह स्वयं इस मकान से बाहर न

निकल सकेगा मगर आज इस मकान में आकर मैंने देखा तो बड़ा ही आश्चर्य्य मालूम हुआ ! इस मकान के तीन दर्वाजे यह खोल चुका था चौथा दर्वाजा भी खोला ही चाहता था। न मालूम इस मकान का भेद इसे क्योंकर मालूम हुआ ॥

कमलिनी०। इसे आपने किस रीति से गिरफ्तार किया ?

गोपाल०। पहिले इस कम्बख़्त का इन्तजाम कर लूं तो इसका अनूठा किस्सा तुमसे कहूं ॥

कमलिनी और लाडिली के साथ धनपति का हाथ पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के बाहर आये और देवमन्दिर की तरफ रवाना होकर देवमन्दिर के पश्चिम तरफ वाले मकान के पास पहुंचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि "देवमन्दिर के पश्चिम तरफ वाले मकान के दर्वाजे पर हड्डियों का ढेर था और उसके बीचोबीच में लोहे की एक जञ्जीर गड़ी हुई थी जिसका दूसरा सिरा उसके पास वाले कूंएं के अन्दर गया हुआ था।" धनपति को घसीटते हुए राजा गोपालसिंह उसी कूएँ पर गये और उस हरामजादे स्त्री रूपधारी मर्द को जबर्दस्ती उस कूएँ के अन्दर ढकेल दिया, साथ ही उस कूंए के अन्दर से धनपति के चिल्लाने की आवाज आने लगी परन्तु राजा गोपालसिंह कमलिनी और लाडिली ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया तीनों आदमी देवमन्दिर में आकर बैठे और बातचीत करने लगे ॥

कमलिनी०। हां अब पहिले यह कहिये कि भूतनाथ ने क्या क्या किया ? मैंने उसे आपके पास भेजा था इस लिये पूछती हूं कि उसने अपना काम ईमानदारी के साथ किया या नहीं ?

गोपाल०। बेशक भूतनाथ ने अपना काम हद्द से ज्यादा ईमानदारी के साथ किया। वह जाहिर में मायारानी के साथ ऐसा मिला कि उसे भूतनाथ पर निश्चय हो गया और वह समझने लगी कि भूतनाथ

इनाम की लालच से मेरा काम उद्योग के साथ करेगा॥

कमलिनी०। हां उसने मायारानी के साथ मेल पैदा करने का हाल मुझसे कहा था, (मुस्कुरा कर) अजब ढङ्ग से उसने मायारानी को धोखा दिया! हमारे तरफ की मामूली रुच्चा २ बातें कह कर उसने अपना काम पूरा २ निकाला मगर मैं उसके बाद का हाल पूछती हूं जब उसे आपके पास काशी में मैंने भेजा था, क्योंकि उसके बाद अभी तक वह मुझसे नहीं मिला॥

गोपाल०। उसके बाद भूतनाथ ने दो तीन काम बड़े अनूठे किये जिसका खुलासा हाल मैं तुमसे कहूंगा लेकिन उन कामों में एक काम सबसे बढ़ चढ़ के हुआ॥

कमलिनी०। वह क्या?

गोपाल०। उसने मायारानी से कहा कि मैं गोपालसिंह को गिरफ़ार करके दारोगा वाले मकान में कैद कर देता हूं तुम उसे अपने हाथ से मार कर निश्चिन्त हो जाओ। यह सुनकर मायारानी बहुत ही खुश हुई और भूतनाथ ने यह काम बड़ी खूबी के साथ किया और इनाम में अजायबघर की ताली मायारानी से ले ली॥

कमलिनी०। क्या अजायबघर की ताली भूतनाथ ने ले ली?

गोपाल०। हां॥

कमलिनी०। यह बड़ा काम हुआ और इस काम के लिये मैंने उसे सख़ ताकीद की थी। अब वह ताली किसके पास है?

गोपाल०। वह ताली मेरे पास है, मुझे आशा न थी की भूतनाथ मुझे देगा मगर उसने उज्र न किया॥

कम०। वह आप से किसी तरह उज्र नहीं कर सकता क्योंकि मैंने उसे कसम देकर कह दिया था कि जितना मुझे मानते हो उतना ही राजा गोपालसिंह को मानो। असल बात तो यह है कि भूतनाथ

बड़े काम का आदमी है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बीरेन्द्रसिंह का गुनहगार है और उसने सूली पाने के लायक काम किया है मगर यह कसूर उससे धोखे में हुआ, इश्क का भूत उसके ऊपर सवार था उसी ने यह काम कराया, वास्तव में उसकी नीयत साफ है और उस कसूर का उसे सख़्त रञ्ज है, ऐसी अवस्था में जिस तरह हो उसका कसूर माफ होना चाहिये॥

गोपाल०। बेशक और उसके बाद तुम्हारी बदौलत उसके हाथ से कई ऐसे काम निकले हैं जिसके आगे वह कसूर कुछ भी नहीं है॥

कमलिनी०। अच्छा अब खुलासा कहिये कि भूतनाथ ने आपके मारने के विषय में किस तरह मायारानी को धोखा दिया और अजायबघर की ताली क्योंकर ली?

राजा गोपालसिंह के विषय में भूतनाथ ने जिस तरह मायारानी को धोखा दिया उसका हाल हम ऊपर के बयान में लिख आये हैं, इस समय वही हाल राजा गोपालसिंह ने अपने तौर पर कमलिनी से बयान किया। ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ के विषय में हमारे पाठकों को धोखा हुआ हो और वे समझ बैठे हों कि भूतनाथ वास्तव में मायारानी से मिल गया मगर नहीं, उन्हें अब मालूम हुआ होगा कि भूतनाथ ने मायारानी से मिलकर केवल अपना काम साधा और मायारानी को हर तरह से नीचा दिखाया॥

आठवां बयान ।

अहा ! ईश्वर की महिमा विचित्र है, बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य भोगना ही पड़ता है ! जो मायारानी अपने सामने किसी को समझती ही न थी वह आज किसी के सामने जाने या किसी को मुंह दिखाने का साहस नहीं कर सकती। जो मायारानी किसी से डरती ही न थी वह आज एक पत्ते के खड़खड़ाने से भी डर कर बदहवास हो जाती है। जो मायारानी दिन रात हँसी खुशी में बिताया करती थी, वह आज रो रो कर अपनी आंखें सुजा रही है। सन्ध्या के समय भयानक जङ्गल में उदास और दुःखी माया केवल पांच लैांडियों के साथ सिर झुकाये अपने किये हुए बुरे कर्मों को याद कर कर के पछता रही है। रात की अवाई के कारण जैसे जैसे अन्धेरा होता जाता है तैसे तैसे उसकी घबराहट भी बढ़ती जाती है। इस समय मायारानी और उसकी लैांडियां मर्दाने भेष में हैं, लैांडियों के पास नीमचा तथा तीर कमान मैाजूद है मगर मायारानी केवल तिलिस्मी तमंचा कमर में छिपाये हुए है। वह घबड़ा २ कर पूरब तरफ देख रही है जिससे मालूम होता है कि इस समय कोई उसके पास आने वाला है। थोड़ी ही देर बाद अच्छी तरह अन्धेरा होगया और इसी बीच में पूरब तरफ से किसी के आने की आहट मालूम हुई। वह लीला थी जो मर्दाने भेष में बहुत दूर से हाथ में पीतल की जालदार लालटैन लिये हुए आ रही थी, जब वह पास आई मायारानी ने घबराहट के साथ पूछा, "कहो क्या हाल है ?"

लीला० । हाल बहुत ही खराब है, अब तुम्हें जमानियां की गद्दी कदापि नहीं मिल सकती ॥

माया० । यह तो मैं पहिले ही से समझे बैठी हूं । तू दीवान साहब

के पास गई थी ?

लीला०। हां गई थी, उस समय उन सिपाहियों में से कई सिपाही वहां मौजूद थे जो आपके तिलिस्मी बाग में रहते हैं और जिन्होंने दोनों नकाबपोशों का साथ दिया था, उस समय वे सिपाही दीवान साहब से दोनों नकाबपोशों का हाल बयान कर रहे थे मगर मुझे देखते ही चुप हो गए॥

माया०। हां तब क्या हुआ ?

लीला०। दीवान साहब ने मुझे एक तरफ बैठने का इशारा किया और पूछा कि तू यहां क्यों आई है ? इसके जवाब में मैंने कहा कि मायारानी हमलोगों को छोड़ के न मालूम कहां चली गईं जब चारो तरफ ढूंढ़ने से पता न लगा तो इत्तला देने के लिये आपके पास आई हूं। यह सुन कर दीवान साहब ने कहा कि अच्छा ठहर मैं इन सिपाहियों से बात कर लूं तब तुझसे कुछ कहूं।

माया०। अच्छा तब तूने उन सिपाहियों की बातें सुनीं ?

लीला०। जी नहीं, सिपाहियों ने मेरे सामने बात करने से इनकार किया और कहा कि हमलोगों को लीला पर विश्वास नहीं है, आखिर दीवान साहब ने मुझे बाहर जाने का हुकम दिया उस समय मुझे अन्दाज से मालूम हुआ कि मामला बेढब हो गया ताज्जुब नहीं कि मैं गिरफ्तार कर ली जाऊं इसलिये पहरे वालों से बात बना कर मैंने अपना पीछा छुड़ाया और भाग कर मैदान का रास्ता लिया॥

माया०। संक्षेप में कह कि उन दोनों नकाबपोशों का कुछ भेद मालूम हुआ कि नहीं ?

लीला०। दोनों नकाबपोशों का असल भेद कुछ भी मालूम न हुआ हां उस आदमी का पता लग गया जिसने बाग से निकल भागने का विचार करते समय गुप्त रीति से कहा था कि "बेशक बेशक, तुम

मरते मरते भी हजारों घर चैापट करोगी ॥"

मायाo। हां कैसे पता लगा ? वह कौन था ?

लीलाo। वह भूतनाथ था, जब मैं दीवान साहब के यहां से भाग कर शहर के बाहर हो गई थी तो यकायक उससे मुलाकात हुई, उसने स्वयं मुझसे कहा कि फलानी बात का कहने वाला मैं हूं, तू मायारानी से कह दीजियो कि अब तेरे दिन खोटे आये हैं अपने किये का फल भोगने के लिये तैयार हो रह, हां यदि मुझे कुछ देने की सामर्थ्य हो तो तेरा साथ दे सकता हूं ॥

मायाo। (ऊंची सांस लेकर) हाय ! अच्छा और क्या क्या हाल मालूम हुआ ?

लीलाo। हाल क्या कहूं ! राजा बीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज आ गई है जिसकी सरदारी नाहरसिंह कर रहा है। दीवान साहब ने एक सर्दार को पत्र दे कर नाहरसिंह के पास भेजा था मालूम नहीं उस पत्र में क्या लिखा था मगर नाहरसिंह ने उसका यह जवाब जुबानी कहला भेजा कि हम केवल मायारानी को गिरफ़ार करने के लिये आये हैं। इसके बाद पता लगा कि दीवान साहब ने आप की खोज में कई जासूस रवाने किये हैं ॥

मायाo। तो इससे निश्चय हुआ कि कम्बख़्त दीवान भी हमारा दुश्मन हो गया !!

लीलाo। क्या इस बात में अब भी शक है ?

मायाo। (लम्बी सांस लेकर) अच्छा और क्या मालूम हुआ ?

लीलाo। एक बात सबसे ज्यादे ताज्जुब की मालूम हुई ॥

मायाo। वह क्या ?

लीलाo। रात के समय भेष बदल कर मैं राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में गई थी, घूमते फिरते ऐसी जगह पहुंची जहां से नाहरसिंह

का खेमा सामने दिखाई दे रहा था और उस खेमे के दर्वाजे पर मशाल हाथ में लिये हुए पहरा देने वाले सिपाहियों की चाल साफ साफ दिखाई दे रही थी, मैंने देखा कि खेमे के अन्दर से दो नकाबपोश निकले और जहां मैं खड़ी थी उसी तरफ आने लगे। मैं किनारे हट गई,जब वे मेरे पास से होकर निकले तो उनकी चाल और उनके कद से मुझे निश्चय होगया कि वे दोनों नकाबपोश वही हैं जो हमारे बाग में आए थे और जिन्होंने धनपति को पकड़ा था॥

माया०। हां!!

लीला०। जी हां॥

माया०। अफसोस! इसका पता कुछ भी न लगा कि वे दोनों नकाबपोश कौन हैं! इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे दोनों हमारे खास बाग के तिलिस्मी भेदों को जानते हैं और इस समय तेरी जुबानी यह हाल सुनने से जाना जाता है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती भी हैं॥

लीला०। इसका निश्चय नहीं हो सकता कि वे दोनों नकाबपोश राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती हैं, शायद वे दोनों आदमी नाहरसिंह से मदद लेने आये हों॥

माया०। ठीक है यह भी हो सकता है, बात यह है कि मैं सिवाय गोपालसिंह के और किसी से नहीं डरती, न तो मुझे रिआया के बिगड़ने का डर है न सिपाहियों या फौज के बागी होने का खौफ, न दीवान मुत्सद्दियों के बिगड़ने का अन्देशा और न कमलिनी या लाडिली की बेवफाई का रञ्ज। क्योंकि मैं इन सभों को अपनी करामात से नीचा दिखा सकती हूं, हां यदि कम्बख़्त गोपालसिंह के बारे में भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया है जैसा कि तू कह चुकी है तो बेशक खौफ की बात है, अगर वह जीता है तो मुझे बुरी तरह हलाल करेगा,

वह इस बात से कदापि न डरेगा कि मेरे भेद खोलने से उसको भी बदनामी ही होगी क्योंकि मैंने उसके साथ बहुत ही बुरा सलूक किया है। जिस समय हरामजादी कमलिनी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने गोपालसिंह को कैद से छुड़ाया था यदि गोपालसिंह चाहता तो उसी समय मुझे जहन्नुम में मिला सकता था मगर उसका ऐसा न करना मेरा कलेजा और भी दहला रहा है, शायद मौत से भी बढ़ के उसने कोई सजा मेरे लिये सोच ली है। हाय! अफसोस!! मैंने तिलिस्मी भेद जानने के लिये उसे क्यों इतने दिनों तक कैद में रख छोड़ा। उसी समय मार डाला होता तो यह बुरा दिन क्यों देखना पड़ता? हाय! अब तो मौत से भी भारी कोई सजा मुझे मिलने वाली है!! (रोती है)॥

लीला०। अब रोने धोने का समय नहीं है, किसी तरह जान बचाने की फिक्र करनी चाहिये॥

माया०। (हिचकी लेकर) क्या करूं? कहां जाऊं? किससे मदद मांगूं? ऐसी अवस्था में कौन मेरी सहायता करेगा? हाय आज तक मैंने किसी के साथ किसी तरह की नेकी नहीं की, किसी को अपना दोस्त न बनाया और किसी पर अहसान का बोझ न डाला फिर किसी को क्या गरज पड़ी है जो ऐसी अवस्था में मेरी मदद करे? बीरेन्द्रसिंह के लड़कों के साथ दुश्मनी करना मेरे लिये और भी जहर हो गया॥

लीला०। खैर जो हो गया सो हो गया इस समय इन सब बातों का सोच बिचार करना और भी बुरा है, मैं इस मुसीबत में हर तरह तुम्हारा साथ देने के लिये तैयार हूं और अब भी तुम्हारे पास ऐसी ऐसी चीजें हैं कि जिनसे कठिन काम निकल सकता है, रुपये पैसे की तरफ से कुछ तकलीफ हो ही नहीं सकती क्योंकि सैरों जवाहि-

रात पास मौजूद है फिर इतनी चिन्ता क्यों कर रही है ?

माया०। चिन्ता क्यों न की जाय ? एक मनोरमा का मकान छिप कर रहने योग्य था सो वहां भी बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का चरण जा पहुंचे, तूही कह चुकी है कि किशोरी और कामनी को ऐयार लोग छुड़ा कर ले गये, नागर को भी उन लोगों ने फँसा ही लिया होगा, अब सब से पहिला काम तो यह है कि छिपकर रहने के लिये कोई जगह खोजी जाय, इसके बाद जो कुछ करना होगा किया जायगा। हाय ! अगर गोपालसिंह की मौत हो गई होती तो न मुझे रिआया के बागी होने का डर था और न राजा बीरेन्द्रसिंह की दुश्मनी का॥

लीला०। छिपकर रहने के लिये मैं जगह का बन्दोबस्त कर चुकी हूं, यहां से थोड़ी ही दूर पर.........

लीला इससे ज्यादे कहने न पाई थी कि पीछे की तरफ से कई आदमियों के दौड़ते हुए आने की आहट मालूम हुई, बात की बात में वे लोग जो वास्तव में चोर थे चोरी का माल लिये हुए उस जगह आ पहुंचे जहां मायारानी और उसकी लौंडियां बैठी बातें कर रही थीं। वे चोर गिनती में पांच थे और उनके पीछे पीछे कई सवार भी उनकी गिरफ़्तारी के लिये चले आ रहे थे जिनके घोड़ों के टापों की आवाज बखूबी आ रही थी। जब वे चोर मायारानी के पास पहुंचे तो यह सोच कर कि पीछा करने वाले सवारों के हाथ से बचना मुश्किल है चोरी का माल उसी जगह पटक कर आगे की तरफ भाग गये और उसके थोड़ी ही देर बाद वे कई सवार उसी जगह (जहां मायारानी थी) आ पहुंचे। उन्होंने देखा कि कई आदमी* बैठे हुए हैं बीच में एक लालटैन जल रही है और चोरी का माल भी उसी जगह

*मायारानी और उसकी लौंडियां मर्दाने भेष में थीं॥

पड़ा हुआ है। उन्हें निश्चय हो गया कि ये ही चोर हैं इसलिये उन्होंने मायारानी और उसकी लौंडियों को चारों तरफ से घेर लिया।

नौवां बयान।

आधी रात का समय, चांदनी खिली हुई है, मौसिम में पूरा पूरा फर्क पड़ गया है। रात की ठंढी ठंढी हवा प्यारी मालूम होती है, ऐसी अवस्था में उस सड़क पर जो काशी से जमानिया की तरफ गई है दो मुसाफिर धीरे धीरे काशी की तरफ जा रहे हैं, ये दोनों मुसाफिर साधारण नहीं हैं बल्कि अमीर, बहादुर और दिलावर मालूम पड़ते हैं। दोनों की पोशाक बेशकीमत और सिपाहियाना ठाठ की है, दोनों ही की चाल से दिलेरी और लापरवाही मालूम होती है। खञ्जर, कटार, तलवार, तीर, कमान और कमन्द से दोनों ही सजे हुए हैं और इस समय दोनों मस्तानी चाल से धीरे धीरे टहलते हुए जा रहे हैं। इनके पीछे पीछे दो आदमी दो घोड़ों की बागडोर थामे हुए जा रहे हैं, वे दोनों साईस नहीं हैं बल्कि सिपाही और सवार मालूम होते हैं॥

दोनों मुसाफिर जाते जाते ऐसी जगह पहुंचे जहां सड़क से कुछ हट कर पांच सात पेड़ों का झुंड था। दोनों खड़े हो गये और उनमें से एक ने जोर से सीटी बजाई। जिसकी आवाज सुनते ही पेड़ों की आड़ में से दस आदमी निकल आये और दूसरी सीटी की आवाज के साथही वे दसों उन दोनों आदमियों के पास आ हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। उन दसों की पोशाक उस समय के डाकुओं की सी थी। जांघिया पहिरे हुए, बदन में केवल एक मोटे कपड़े की नीमास्तीन, ढाल तलवार लगाये और हाथ में एक एक गड़ासा लिये हुए

थे और सभों के बगल में एक एक छोटासा बटुआ लटक रहा था। इन दसों के आ जाने पर उन दोनों बहादुरों में से एक ने उन दसों की तरफ देखा और पूछा, "उसका पता लगा?"

एक डाकू०। (हाथ जोड़ कर) जी हां, बल्कि वह काम भी बखूबी कर आए हैं जो हमलोगों के सपुर्द किया गया था और जिसका होना कठिन था॥

जवान०। उसके साथ और कौन कौन हैं?

डाकू०। लीला के अतिरिक्त केवल पांच लौंडियां और हैं॥

जवान०। उसे तुमने किस इलाके में पाया और क्या क्या किया सो खुलासा कहो॥

डाकू०। उसने जमानियां की सरहद को छोड़ दिया और काशी में रहने का विचार करके उसी तरफ का रास्ता लिया। जब काशी जी की सरहद में वह पहुंची तो गङ्गापूर नामक एक स्थान के पास वाले जङ्गल में एक दिन तक उसे अटकना पड़ा क्योंकि वह लीला को हाल चाल लेने और कई भेदों का पता लगाने के लिये पीछे छोड़ आई थी। हमलोगों को उसी समय अपना काम करने का मौका मिला। मैं कई आदमियों को साथ लेकर काशिराज की तहसीलदारी में जो गङ्गापूर में है घुस गया और कुछ असबाब चुरा कर इस तरह भागा कि पहरे वालों को हमलोगों का पता लग गया और कई सवारों ने हमलोगों का पीछा किया, आखिर हमलोग उन सवारों को धोखा देकर घुमाते हुए उस जङ्गल में ले गये जिसमें मायारानी थी, जब हमलोग मायारानी के पास पहुंचे तो चोरी का माल उसी के पास पटक कर भाग गये और सवारों ने वहां पहुंच और चोरी का माल मायारानी के पास देखकर उन लोगों को चोर या चोरों का साथी समझा और उन्हें चारों तरफ से घेर लिया॥

जवान० । बहुत अच्छा हुआ, शाबाश ! तुम लोगों ने अपना काम खूबी के साथ पूरा किया ! अच्छा इसके बाद क्या हुआ ?

डा० । इसके बाद की हमलोगों को कुछ भी खबर नहीं है क्योंकि आज्ञानुसार आपके पास हाजिर होने का समय बहुत कम बच गया था इसलिये उन लोगों का पीछा न किया ॥

जवान० । कोई हर्ज नहीं, हमें इतने ही से मतलब था, अच्छा अब तुम जाओ जमानियां के पार गङ्गा के किनारे जो झाड़ी है उसी में परसों रात को किसी समय हम तुम लोगों से मिलेंगे कदाचित कोई काम पड़े (अपने साथी की तरफ देख के) कहिये देवीसिंह जी अब इन दोनों सवारों के लिये क्या आज्ञा होती है जो हमलोगों के साथ आये हैं ?

देवी० । अगर ये लोग जासूसी का काम दे सकें तो इन्हें काशी भेजना चाहिये ॥

जवान० । ठीक है और इसके बाद जहां तक जल्द हो सके कमलिनी जी से मिलना चाहिये, ताज्जुब नहीं वह कहती हों कि भूतनाथ बड़ा ही बेफिक्रा है ॥

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि ये दोनों बहादुर देवीसिंह और भूतनाथ हैं । डाकुओं और दोनों सवारों को बिदा करने बाद दोनों ऐयार लौटे और तेजी के साथ जमानियां की तरफ रवाना हुए । इस जगह से जमानियां केवल चार कोस की दूरी पर था इस लिये ये दोनों ऐयार सवेरा होने के पहिले ही उस टीले पर जा पहुंचे जो दारोगा वाले बङ्गले के पीछे की तरफ था और जहां से दोनों ऐयारों और दोनों कुमारों को साथ लिये हुए कमलिनी मायारानी के तिलिस्मी बाग वाले देवमन्दिर में गई थी । हम पहिले लिख आये हैं कि इस टीले पर एक कोठड़ी थी जिसमें पत्थर के एक चबूतरे पर पत्थर

ही का शेर बैठा हुआ था। वह चबूतरा और शेर देखने में पत्थर का मालूम होता था मगर वास्तव में किसी मसाले का बना हुआ था। दोनों ऐयार उस शेर के पास जाकर खड़े होगये और बातचीत करने लगे। भूतनाथ और देवीसिंह को इस बात का गुमान भी न था कि उनके पीछे पीछे दो औरतें कुछ दूर से आ रही हैं और इस समय भी कोठड़ी के बाहर छिप कर खड़ी उन दोनों की बातें सुनने के लिये तैयार हैं। इन दोनों औरतें में से एक तो मायारानी और दूसरी नागर है। पाठकों को ताज्जुब होगा कि मायारानी को तो चोरी की इल्लत काशीराज के सवारों ने गिरफ़ार कर लिया था फिर वह यहां क्योंकर आई! इस लिये थोड़ा सा हाल मायारानी का इस जगह लिख देना उचित जान पड़ता है॥

जब उन सवारों ने चारों तरफ से मायारानी को घेर लिया तब एक दफे तो वह बहुत ही परेशान हुई मगर तुरत ही सम्हल बैठी और फुर्ती के साथ उसने तिलिस्मी तमंचे से काम लिया, उसने तमंचे में तिलिस्मी गोली भर कर उसी जगह जमीन पर मारी जहां आप बैठी हुई थी, एक आवाज हुई और गोली में से बहुत सा धूआं निकल कर धीरे धीरे फैलने लगा मगर सवारों ने इस बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और मायारानी तथा उसकी लौंडियों को गिरफ़ार कर लिया। मायारानी के तमंचा चलाने पर सवारों को क्रोध आ गया था इस लिये कई सवारों ने मायारानी की जूते और लात से बेतरह खातिरदारी की यहां तक कि वह बेताब होकर जमीन पर गिर पड़ी, इसके साथ ही साथ लीला और लौंडियों ने भी खूब ही मार खाई, इस बीच में तिलिस्मी गोली का धूआं हलका होकर चारों तरफ फैल गया और सभों के आंख नाक में घुस कर अपना काम कर गया। मायारानी और लीला को छोड़ कर बाकी जितने वहां थे सब के सब

बेहोश हो गये, न सवारों को दीन दुनिया की खबर रही और न मायारानी की लौंडियों को तन बदन की सुध रही । पाठकों को याद होगा कि बेहोशी का असर न होने के लिये मायारानी ने तिलिस्मी अर्क पी लिया था और वही अर्क लीला को भी पिलाया था अभी तक उस अर्क का असर बाकी था जिसने मायारानी और लीला को बेहोश होने से बचाया ॥

मार के सदमें से आधी घड़ी तक तो मायारानी में उठने की सामर्थ्य न रही, इसके बाद जान के खौफ से किसी तरह उठी और लीला को साथ लेकर वहां से भागी । बेचारी लौंडियों को जिन्होंने ऐसे दुःख के समय में भी मायारानी का साथ दिया था मायारानी ने कुछ भी न पूछा हां लीला का ध्यान उस तरफ जा पड़ा, उसने अपने ऐयारी के बटुये में से लखलखा निकाला और लौंडियों को सुंघा कर होश में लाई और सभों को भाग चलने के लिये कहा ॥

लौंडियों को साथ लिये हुए लीला और मायारानी वहां से भागीं मगर घबरहट के मारे इस बात को न सोच सकीं कि कहां छिप कर अपनी जान बचानी चाहिये, वे सब सीधे दारोगा वाले बङ्गले की तरफ रवाना हुईं । उस समय सवेरा होने में कुछ बिलम्ब न था, खौफ के मारे छिपती हुई दिन भर बराबर चली गईं रात को भी ठहरने की नौबत न आई, आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी थी जब वे सब दारोगा वाले बाग के पास जा पहुंचीं, इत्तफाक से नागर भी रास्ते ही में मिली जो मायारानी से मिलने लिये मुश्की घोड़ी पर सवार खास बाग की तरफ जा रही थी, इस समय नागर ने मायारानी को न पहिचाना मगर लीला ने नागर को पहिचान कर आवाज दी । नागर जब मायारानी के पास आई तो उसे ऐसी अवस्था में देख कर ताज्जुब करने लगी । मायारानी ने संक्षेप में अपना हाल नागर से

कहा जिसे सुन वह अफसोस करने लगी और बोली कि "मुझको भी भूतनाथ पर कुछ २ शक होता है ताज्जुब नहीं कि उसने धोखा दिया हो। खैर कोई हर्ज नहीं मैं बहुत जल्द, इस बात का पता लगाऊंगी आप काशी में चल कर हमारे मकान में रहिये और देखिये मैं भूतनाथ को क्योंकर फँसाती हूं॥"

मायारानी और नागर की बात पूरी न होने पाई थी कि सामने से दो आदमियों के आने की आहट मालूम हुई, वे दोनों देवीसिंह और भूतनाथ थे। यद्यपि अंधेरे के कारण मायारानी ने उन दोनों को न पहिचाना और पहिचानने की उसे कोई आवश्यकता भी न थी मगर जब वे दोनों टीले की तरफ मुड़े तब मायारानी को शक पैदा हुआ। उसने धीरे से नागर के कान में कहा, "वे दोनों टीले पर जा रहे हैं इससे मालूम होता है कि कमलिनी के साथी हैं क्योंकि उस टीले पर बिना जानकार आदमी के और कोई इस समय कदापि न जायगा॥"

नागर०। हां मुझे भी यही शक होता है कि ये दोनों कमलिनी के साथी या बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं ताज्जुब नहीं कि आपके तिलिस्मी बाग में जाने की नीयत से टीले पर जा रहे हों क्योंकि बाबाजी की जुबानी मैं कई दफे सुन चुकी हूं कि तिलिस्मी बाग में जाने के लिये इस टीले पर से भी एक रास्ता है॥

माया०। हां यह तो मैं भी जानती हूं कि इस टीले पर से हमारे तिलिस्मी बाग में जाने का रास्ता है मगर इस राह से क्योंकर जा सकते हैं इसकी मुझे खबर नहीं है। ताज्जुब नहीं कि खून से लिखी किताब की बदौलत कमलिनी को इन सब रास्तों का हाल मालूम हो गया हो, क्योंकि वह किताब नानक और भूतनाथ की बदौलत कमलिनी के हाथ में पहुंची ही होगी॥

नागर० । बेशक ऐसा ही है । खैर चलिये इन दोनों के पीछे पीछे चलें ताज्जुब नहीं कि बहुत सी बातों का पता लग जाय ॥

इसके बाद मायारानी केवल नागर को साथ लिये हुए भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे पीछे छिप कर टीले पर गई और जब वे दोनों ऐयार कोठड़ी के अन्दर घुस गये तो बाहर छिप कर खड़ी हो गई और भूतनाथ तथा देवीसिंह आपुस में जो बातें करने लगे उसे छिप कर सुनने लगी जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं ॥

उस चबूतरे पर बैठे हुए शेर के पास खड़े होकर भूतनाथ और देवीसिंह नीचे लिखी बातें करने लगे ॥

भूत० । (शेर के सिर पर हाथ रख कर) तिलिस्मी बाग के चौथे दरजे में देवमन्दिर है उसमें जाने के लिये यही रास्ता है ॥

देवी० । क्या राजा गोपालसिंह से वहां मुलाकात होगी ?

भूत० । अवश्य ! बल्कि कमलिनी, लाडिली और दोनों कुमार भी वहां मौजूद होंगे ॥

देवी० । इस दरवाजे के खोलने की तर्कीब राजा गोपालसिंह ने आपको बता दी है ?

भूतनाथ० । हां, राजा गोपालसिंह ने और कमलिनी ने भी इस दरवाजे के खोलने की तरकीब बताई थी, मगर यह रास्ता बड़ा ही खतरनाक है, अच्छा अब मैं दर्वाजा खोलता हूं ॥

इतना कह कर भूतनाथ ने शेर की बाईं आंख में उँगली डाली, आंख अन्दर की तरफ घुस गई और इसके साथ ही शेर ने मुंह खोल दिया । भूतनाथ ने दूसरा हाथ शेर के मुंह में डाला और कोई पेंच घुमाया जिससे उस चबूतरे के आगे वाला पत्थर हट कर जमीन के साथ सट गया जिस पर शेर बैठा था और नीचे उतरने के लिये रास्ता मालूम पड़ने लगा । देवीसिंह ने बत्ती जलाने का इरादा किया मगर

भूतनाथ ने मना किया और कहा कि नहीं तुम चुपचाप मेरे पीछे २ चले आओ नीचे उतर जाने बाद बत्ती जलावेंगे। आगे आगे भूतनाथ और पीछे पीछे देवीसिंह, दोनों ऐयार नीचे उतर गये और वहां बटुए में से सामान निकाल कर भूतनाथ ने मोमबत्ती जलाई। यह एक कोठड़ी थी जिसमें तीन तरफ तो दीवार थी और एक तरफ की दीवार सुरङ्ग के रास्ते की तौर पर थी अर्थात् उधर से सुरङ्ग में जाने का रास्ता था। कोठड़ी के बीचोबीच में लोहे का एक खम्भा था और खम्भे के ऊपर गाड़ाड़ीदार पहिया था जिसे भूतनाथ ने घुमाया और देवीसिंह से कहा, "जिस राह से हम आये हैं उसे यहां से बन्द करने की यही तर्कीब है और (हाथ का इशारा करके) यही सुरङ्ग तिलिस्मी बाग के चौथे दरजे में गई है।" इसके बाद भूतनाथ और देवीसिंह सुरङ्ग में घुस कर आगे की तरफ बढ़े॥

इस सुरङ्ग की चौड़ाई चार हाथ से ज्यादे न थी, ज़मीन स्याह और सुफेद पत्थरों से बनी थी अर्थात् एक पत्थर सुपेद और दूसरा स्याह, इसके बाद सुपेद और फिर स्याह, इसी तरह दोनों रङ्ग के पत्थर सिलसिलेवार लगे हुए थे। सुरङ्ग के दोनों तरफ की दीवार लोहे की थी और थोड़ी थोड़ी दूर पर लोहे के आदमी दीवार के साथ खड़े थे जो अपने लम्बे लम्बे हाथ फैलाये हुए थे। भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देख कर कहा, "इस राह से जाना और अपनी जान पर खेलना एक बराबर है। देखिये बहुत सम्हल कर मेरे पीछे चले आइये और इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखिये कि स्याह पत्थर पर पैर न पड़ने पावे नहीं तो जान न बचेगी। कमलिनी ने मुझे अच्छी तरह समझा कर कहा था कि "सुरङ्ग की दीवार के साथ जो लोहे के आदमी हाथ फैलाये खड़े हैं वह उस समय काम देते हैं जब कोई स्याह पत्थर पर पैर रखता है, अर्थात् स्याह पत्थर पर पैर रखते ही वे लोहे

के दोनों हाथों से ऐसा पकड़ लेते हैं कि फिर किसी तरह उसके कब्जे से निकल नहीं सकता ।" मैं समझता हूं इस सुरङ्ग में कई आदमी धोखे में पड़ कर मारे गये होंगे इसलिये उचित है कि मेरे और तुम्हारे दोनों के हाथ में एक एक मोमबत्ती रहे ॥"

भूतनाथ की बातें सुनकर देवीसिंह ताज्जुब करने लगे, लाचार एक मोमबत्ती और जलाई और बड़ी होशियारी से सुफेद पत्थरों पर पैर रखते हुए आगे बढ़े । यह सुरङ्ग एक रङ्ग की बनी हुई थी और जमीन हर तरह से साफ थी शायद इसका सबब यह हो कि कहीं से गर्द गुब्बार के आने की जगह न थी । फिर इस सुरङ्ग में ऐसी कारीगरी की गई थी कि किसी किसी जगह दीवार में से साफ छनी हुई हवा आती और दूसरी राह से निकल जाती थी जिससे सुरङ्ग की हवा हरदम साफ बनी रहती थी और उसमें जहर का असर पैदा नहीं होने पाता था ॥

लगभग दो सौ कदम जाने के बाद देखा कि दाहिनी तरफ दीवार के साथ लोहे के एक आदमी का दोनों हाथ सिमटा हुआ है और उसके बीच में हड्डी का ढांचा फंसा हुआ है । वह ढांचा मनुष्य के शरीर का था जिसे देखते ही भूतनाथ ने देवीसिंह से कहा, "देखिये यह धोखा खाने का नमूना है, कोई अज्ञान आदमी सुरङ्ग में आकर जान दे बैठा है । अज्ञान कैसे कहें क्योंकि यहां तक तो आ ही चुका था शायद धोखा खा गया हो ।" दोनों ऐयार ताज्जुब से उस पञ्जर को देखने लगे, यकायक देवीसिंह की निगाह पीछे की तरफ (जिधर से आये थे) जा पड़ी, रोशनी दिखाई दी, देवीसिंह ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ से कहा, "देखिये वह रोशनी कैसी है ?

भूतनाथ०। (बत्ती के आगे हाथ रख के और गौर से रोशनी की तरफ देख के) कोई आता है ॥

देवीसिंह०। दो औरतें मालूम पड़ती हैं॥

भूतनाथ०। ठीक है, शायद लाडिली और कमलिनी जी आती हों क्योंकि सिवाय जानकार के और कोई इस सुरङ्ग में नहीं आ सकता॥

देवी०। मुझे विश्वास नहीं होता कि ये कमलिनी और लाडिली होंगी॥

भूतनाथ०। शक तो मुझे भी होता है खैर चल कर देख ही क्यों न लें॥

भूतनाथ और देवीसिंह फिर पीछे की तरफ हटे अर्थात् उस रोशनी की तरफ बढ़े जो यकायक दिखाई दी थी। दो ही क़दम बढ़े होंगे कि कोई चीज उनके सामने ज़मीन पर आकर गिरी और पटाखे की आवाज हुई, इसके साथ ही उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला जहरीला धूंआं निकला। वह तिलिस्मी गोली थी जो मायारानी ने तिलिस्मी तमञ्चे में भर कर भूतनाथ और देवीसिंह की तरफ चलाई थी। भूतनाथ और देवीसिंह इस गुमान में पीछे की तरफ हटे थे कि शायद यह रोशनी कमलिनी और लाडिली के साथ हो मगर वास्तव में वे दोनों मायारानी और नागर थीं जिन्होंने छिप कर भूतनाथ और देवीसिंह की बातें सुनी थीं और जब दोनों ऐयार शेर वाला दर्वाजा खोल कर तहखाने में उतर गये थे तो चर्खा घुमा कर दर्वाजा बन्द करने के पहिले ही वे दोनों औरतें भी दर्वाजे के अन्दर घुस कर तीन चार सीढ़ी नीचे उतर गई थीं और वे बातें भी सुन ली थीं जो नीचे उतर जाने बाद देवीसिंह और भूतनाथ में हुई थी॥

दसवां बयान।

राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली को हम देवमन्दिर में छोड़ आये हैं। वे तीनों भूतनाथ के आने की उम्मीद में देर तक देवमन्दिर में रहे, जब भूतनाथ न आया तो लाचार होकर कमलिनी ने गोपालसिंह से कहा:—

कमलिनी०। मालूम होता है कि भूतनाथ किसी काम में फंस गया, खैर अब हमलोगों को यहां व्यर्थ बैठे रहना उचित नहीं क्योंकि हम लोगों को अभी बहुत कुछ काम करना बाकी है॥

गोपाल०। ठीक है मगर जहां तक मैं समझता हूं तुम्हारे करने योग्य इस समय कोई काम नहीं है क्योंकि दोनों कुमार तिलिस्म के अन्दर जा ही चुके हैं बिना तिलिस्म तोड़े अब उनका बाहर निकलना कठिन है, हां कम्बख़्त मायारानी के विषय में बहुत कुछ करना है सो उसके लिये अकेला मैं काफी हूं इसके अतिरिक्त और जो कुछ काम है उसे ऐयार लोग बखूबी कर सकते हैं॥

कमलिनी०। आपकी बातों से पाया जाता है कि मेरे यहां रहने की भी कोई आवश्यकता नहीं है॥

गोपाल०। बेशक मेरे कहने का यही मतलब है॥

कमलिनी०। अच्छा तो मैं लाडिली को साथ लेकर अपने घर* जाती हूं उधर ही से रोहतासगढ़ पर भी ध्यान दूंगी॥

गोपाल०। हां तुम्हें वहां अवश्य जाना चाहिये क्योंकि किशोरी और कामिनी भी उसी मकान में पहुंचा दी गई हैं उनसे जब तक न मिलोगी तब तक वे बेचैन रहेंगी, इसके अतिरिक्त कई कैदियों को भी

* वही तिलिस्मी मकान जो तालाब के अन्दर है॥

तुमने वहां भेजवाया है उनकी भी खबर लेनी चाहिये ॥

कमलिनी० । अच्छा थोड़ी देर तक भूतनाथ की राह और देख लीजिये ॥

आधी रात बीत जाने बाद तीनों आदमी वहां से रवाना हुए । पहिले उस गोल खम्भे के पास आये जो कमरे के बीचोबीच में था और जिस पर तरह तरह की मूरतें बनी हुई थीं । राजा गोपालसिंह ने एक मूरत पर हाथ रख कर जोर से दबाया साथ ही एक छोटी सी खिड़की अन्दर जाने के लिये दिखाई दी । दोनों साथियों को साथ लिये हुए गोपालसिंह उस खिड़की के अन्दर घुस गये । नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां बनी हुई थीं । यद्यपि उसके अन्दर अँधेरा था मगर तीनों आदमी अन्दाज से उतरते चले गये, जब नीचे एक कोठड़ी में पहुंचे तो गोपालसिंह ने मोमबत्ती जलाई । मोमबत्ती जलाने का सामान उसी कोठड़ी में एक आले पर रक्खा हुआ था जिसे अँधेरे ही में गोपालसिंह ने खोज लिया था । वह कोठड़ी लगभग दस हाथ के चौड़ी और इतनी ही लम्बी होगी चारो तरफ दीवार में चार दर्वाजे बने हुए थे और छत में दो जञ्जीरें लटक रही थीं । गोपालसिंह ने एक जञ्जीर हाथ से पकड़ के खैंची जिससे गोल खम्भे वाला वह दर्वाजा बन्द होगया जिस राह से तीनों नीचे उतरे थे । इसके बाद गोपाल-सिंह उत्तर तरफ वाली दीवार के पास गये और दर्वाजा खोलने का उद्योग करने लगे । उस दर्वाजे में तांबे की सैकड़ों कीलें जड़ी हुई थीं और हर एक कील के मुंह पर उभड़े हुए अक्षर बने हुए थे, वह दर्वाजा उस सुरङ्ग में जाने के लिये था जो दारोगा वाले बङ्गले के पीछे टीले तक पहुंची हुई थी या जिस सुरङ्ग के अन्दर भूतनाथ और देवीसिंह का जाना ऊपर के बयान में हम लिख आये हैं । गोपालसिंह ने दर्वाजे में लगी हुई कीलों को दबाना शुरू किया । पहिले उस कील को दबाया

जिसके सिरे पर 'ह' अक्षर बना हुआ था, इसके बाद 'र' अक्षर के कील को दबाया फिर 'भ' और 'ज' अक्षर के कील को दबाया ही था कि दरवाजा खुल गया और दोनों साथियों को साथ लिये हुए गोपालसिंह उसके अन्दर चले गये। भीतर जाकर हाथ के जोर से दर्वाजा बन्द कर दिया। इस दर्वाजे के पिछली तरफ भी वे ही बातें थीं जो बाहर थीं अर्थात् भीतर से भी उसमें वैसा ही कीलें जड़ी हुई थीं। भीतर चार पांच कदम जाने बाद सुरङ्ग की जमीन स्याह और सुपेद पत्थरों से बनी हुई मिली उसी जगह से गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली ने स्याह पत्थरों को बचाना शुरू किया अर्थात् सुपेद पत्थरों पर पैर रखते हुए रवाना हुए और दो घंटे तक बराबर चले जाने बाद उस जगह पहुंचे जहां भूतनाथ और देवीसिंह खड़े थे। ये भी उसी समय वहां पहुंचे जब मायारानी की चलाई हुई गोली में से जहरीला धूंआं निकल कर सुरङ्ग में फैल चुका था और दोनों ऐयार बेहोशी के असर से झूम रहे थे। कमलिनी, लाडिली और राजा गोपालसिंह इस धूंएं से बिलकुल ही बेखबर थे, उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि इस सुरङ्ग में मायारानी ने पहुंच कर तिलिस्मी गोली चलाई है क्योंकि गोली चलाने बाद तुरत ही मायारानी ने अपने हाथ की मोमबत्ती बुझा दी थी॥

राजा गोपालसिंह ने वहां पहुंच कर भूतनाथ और देवीसिंह को देखा, कमलिनी ने भूतनाथ को पुकारा मगर बेहोशी का असर हो जाने के कारण उसने कमलिनी की बात का जवाब न दिया बल्कि देखते देखते भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। कमलिनी, लाडिली और गोपालसिंह के भी नाक और मुंह में वह धूंआं गया मगर उसे पहिचान न सके और देवीसिंह के बेहोश हो जाने के बाद कमलिनी, लाडिली तथा गोपालसिंह भी बेहोश होकर

जमीन पर गिर पड़े ॥

आधी घड़ी तक राह देखने के बाद मायारानी और नागर ने मोम-बत्ती जलाई और खुशी खुशी उन दोनों औरतों ने बेहोशी से बचाने वाली दवा अपने मुंह में रख ली और स्याह पत्थरों को बचाती हुईं वहां पहुंचीं जहां कमलिनी, लाडिली, गोपालसिंह, भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश पड़े हुए थे ॥

अहा ! इस समय मायारानी की खुशी का कोई ठिकाना है ! इस समय उसकी किस्मत का सितारा फिर से चमक उठा, उसने हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा :—

माया० । क्या अब भी मुझे किसी का डर है ?

नागर० । आज मालूम हुआ कि आपकी किस्मत जबर्दस्त है, अब दुनिया में कोई भी आपका मुकाबला नहीं कर सकता । (भूतनाथ की तरफ देख के) देखिये इस बेईमान की कमर में वही तिलिस्मी खञ्जर है जो कमलिनी ने इसे दिया था, अहा ! इससे बढ़कर दुनिया में और क्या अनूठी चीज होगी !!

माया० । इसी कम्बख़्त ने कहा था कि कमलिनी ने गोपालसिंह को भी तिलिस्मी खञ्जर दिया था, (गोपालसिंह को अच्छी तरह देख के) हां हां, इसके कमर में भी वही खञ्जर है, ताज्जुब नहीं कि कम-लिनी और लाडिली के कमर में भी इसका जोड़ा हो (कमलिनी लाडिली और देवीसिंह की तरफ ध्यान देकर) नहीं नहीं और किसी के पास नहीं है खैर दो खञ्जर तो मिले, एक मैं रक्खूंगी और एक तुझे दूंगी, इसमें जो जो गुण हैं भूतनाथ की ज़ुबानी सुन ही चुकी हूं अच्छा भूतनाथ का खञ्जर तू ले ले और इसका मैं लेती हूं ॥

खुशी खुशी मायारानी ने पहिले गोपालसिंह की उँगली से वह अँगूठी उतारी जो तिलिस्मी खञ्जर के जोड़ की थी, इसके बाद कमर

से खञ्जर निकाल कर अपने कब्जे में किया। नागर ने भी पहिले भूतनाथ के हाथ से अँगूठी उतार कर पहिर ली और इसके बाद खञ्जर पर कब्जा किया। मायारानी ने हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा,"अब इसी खञ्जर से इन पांचों को इस दुनिया से उठाकर हमेशे के लिये निश्चिन्त होती हूं॥"
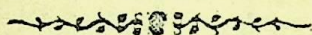
ग्यारहवां बयान।

मायारानी ने राजा गोपालसिंह को मारने के लिये जैसे खञ्जर उठाया वैसे ही नागर ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ली और कहा:-

नागर०। ठहरो ठहरो, जल्दी न करो, आखिर ये लोग तुम्हारे कब्जे में आ ही चुके हैं और अब किसी तरह छूट कर जा नहीं सकते फिर बिना अच्छी तरह बिचार किये जल्दी करने की क्या आवश्यकता है, क्या जाने विचारने से कुछ विशेष लाभ की सूरत ध्यान में आवे॥

माया०। (रुक कर) तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु यदि दुश्मन कब्जे में आ जाय तो उसके मारने में बिलम्ब करना कदापि उचित नहीं है, इसी गोपाल को जब मैंने कैद किया था तो इसके मारने के विषय में सोच बिचार करते २ वर्षों बिताये और अन्त में उस विलम्ब का क्या नतीजा निकला सो देख ही रही हो, उस विलम्ब ही के कारण आज मैं फकीरनी होकर भी........(गला भर आने के कारण रुक कर) आज ईश्वर ने मुझ पर कृपा की है और दुश्मनों को मेरे कब्जे में कर दिया है फिर इनके मारने में देर तथा सोच विचार करने का ताज्जुब नहीं कि वही नतीजा हो जो पहिले हो चुका है॥

नागर०। ठीक है, मैं भी इसी में प्रसन्न हूं कि जहां तक शीघ्र हो सके ये लोग मार डाले जायँ, अहा! कमलिनी के सहित गोपालसिंह

का फँस जाना क्या कम खुशी की बात है ? और फिर साथ ही इन दोनों के बेईमान भूतनाथ का भी........

माया०। (बात काट कर) आ फँसना, जिसने मेरे साथ सख़्त दग़ा की थी कम खुशी की बात नहीं है ॥

नागर०। परन्तु मैं इन कम्बख़्तों की जान लेने में विशेष बिलम्ब करने के लिये नहीं कहती, हां इतनी देर तक रुकने के लिये अवश्य कहती हूं जितनी देर में हमलोग इस बात को बखूबी सोच लें कि इन दुष्टों को मारने के बाद इस सुरङ्ग का भेद न मालूम होने पर भी हम लोग यहां से निकल जा सकेंगे या नहीं ॥

माया०। क्यों क्या हम लोगों को यहां से निकल जाने में किसी तरह की रुकावट हो सकती है ? क्या हम लोगों ने भूतनाथ और देवीसिंह की बातें उस समय अच्छी तरह नहीं सुनीं जिस समय दोनों ऐयार सुरङ्ग में उतर चुके थे ? या क्या उसी रीति से सुरङ्ग का दर्वाज़ा न खुल सकेगा जिस रीति से बन्द किया गया है ?

नागर०। इन बातों का ठीक ठीक जवाब मैं नहीं दे सकती, बल्कि इन्हीं बातों पर बिचार करने के लिये कुछ देर तक ठहरने को कहती हूं॥

माया०। (खञ्जर म्यान में रख कर और कुछ सोच कर) अच्छा अच्छा, कुछ देर तक ठहरने में हर्ज नहीं है इन सभों की बेहोशी यकायक दूर नहीं हो सकती, चलो पहिले उस दर्वाजे को खोल कर देखें कि खुलता है या नहीं ॥

इतना कह कर नागर को साथ लिये हुए मायारानी सुरङ्ग के दर्वाजे की तरफ बढ़ी और जब उस लोहे के खम्भे के पास पहुंची जिस पर गड़ाड़ीदार पहिया था और जिसे घुमा कर भूतनाथ ने सुरङ्ग का दर्वाज़ा बन्द किया था तो रुकी और नागर की तरफ देख के बोली, "इसी पहिये को घुमा कर भूतनाथ ने दर्वाज़ा बन्द किया था ॥"

नागर०। जी हां, अब इसी को उलटा घुमा कर देखना चाहिये कि दर्वाजा खुलता है या नहीं॥

माया०। अच्छा तुम्हीं इस पहिये को घुमाओ॥

नागर ने उस पहिये को कई दफे उलटा घुमाया और वह बखूबी घूम गया, इसके बाद दोनों औरतें यह देखने के लिये सीढ़ी पर चढ़ीं कि दर्वाजा खुला या नहीं मगर दर्वाजा ज्यों का त्यों बन्द था। मायारानी को बहुत ही ताज्जुब हुआ और वह घबड़ानी सी हो कर नीचे उतर आई और नागर की तरफ देख कर बोली, "तुम्हारा सोचना तो ठीक निकला!!"

नागर०। इसी से मैंने आप को रोका था, यदि आप जोश में आकर इन सभों को मार डालतीं तो हमलोग भी इसी सुरङ्ग में मर मिटते॥

माया०। बेशक बेशक, (कुछ सोच कर) अच्छा एक दफे उधर चल के भी देखना चाहिये जिधर से गोपाल आया है शायद उधर का दर्वाजा खुला हो॥

नागर०। चलिये देखिये शायद कुछ काम निकले मगर ताज्जुब नहीं कि लौटते तक इन लोगों की बेहोशी जाती रहे॥

माया०। हां ऐसा हो सकता है, अच्छा तो इन लोगों के हाथ पैर कस के बांध देना चाहिये जिसमें यदि बेहोशी जाती भी रहे तो कुछ कर न सकें॥

नागर ने उन सभों को अच्छी तरह गौर से देखा जो उस जगह बेहोश पड़े थे। भूतनाथ और देवीसिंह के कमर में कमन्द मौजूद थे। उसे खोल लिया और मायारानी तथा नागर ने मिल कर उन्हीं कमन्दों से भूतनाथ, देवीसिंह, कमलिनी, लाडिली और गोपालसिंह के हाथ पैर बेरहमी के साथ खूब कस के बांध दिये और इसके बाद दोनों औरतें उस तरफ चलीं जिधर से कमलिनी और लाडिली को साथ

लिये हुए राजा गोपालसिंह आये थे ॥

मायारानी और नागर मोमबत्ती की रोशनी में स्याह पत्थर को बचाती हुई उस दर्वाजे के पास पहुंचीं जिसे खोल कर राजा गोपालसिंह आये थे। यह वही दर्वाजा था जिसमें अक्षरों वाले कील जड़े हुए थे और अज्ञान आदमी से इसका खुलना बिल्कुल ही असम्भव था। मायारानी ने उसके खोलने का बहुत कुछ उद्योग किया मगर कुछ काम न चला लाचार होकर उसने तरद्दुद और घबड़ाहट की निगाह नागर पर डाली ॥

नागर०। मेरा सोचना बहुत ठीक निकला, यदि वे लोग मार डाले जाते तो निःसन्देह हम दोनों की भी मौत इसी सुरङ्ग में होती ॥

माया०। सच है, मगर अब क्या करना चाहिये ? जहां तक मैं सोचती हूं इसके जवाब में तुम यही कहोगी कि इन सभों को होश में लाकर जिस तरह बन पड़े दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम करनी चाहिये ॥

नागर०। जी हां, क्योंकि सिवाय इसके कोई दूसरी बात ध्यान में नहीं आती ॥

माया०। खैर यदि ऐसा हो भी जाय अर्थात् उन पाचों में से किसी को होश में लाने और डराने धमकाने से दर्वाजा खुलने का भेद मालूम हो जाय तो फिर क्या किया जायगा ? मैं समझती हूं कि तुम यही कहोगी कि दर्वाजे का भेद मालूम होने बाद इन पांचों को कत्ल करना चाहिये ॥

नागर०। नहीं, मेरी यह राय नहीं है बल्कि मैं इन लोगों को कैद में रखना मुनासिब समझती हूं जब तक रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली जो तुमने भूतनाथ को दे दी है अपने कब्जे में न आ जाय ॥

माया०। ओफ ! वास्तव में मैं सैकड़ों आफतों में घिरी हुई हूं (कुछ

सोच कर) खैर कोई चिन्ता नहीं है देखो तो क्या होता है, मैं इन लोगों को जीता कदापि न छोड़ूंगी (रुक कर) हां जरा ठहरो, उन पांचों में किसी को होश में लाने के पहिले सभों की तलाशी अच्छी तरह ले लेना चाहिये ताज्जुब नहीं कि रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली इन लोगों में से किसी के पास हो ॥

नागर० । हां, मुमकिन है कि वे दोनों चीजें इन लोगों के पास हों, अच्छा चलो सब के पहिले यही काम किया जाय ॥

नागर को साथ लिये हुए मायारानी फिर उस जगह पहुंची जहां गोपालसिंह और भूतनाथ वगैरह बेहोश पड़े थे । हम ऊपर लिख आए हैं कि राजा गोपालसिंह और भूतनाथ के पास जो तिलिस्मी खंजर था वह मायारानी ले चुकी है एक खञ्जर उसने अपने पास रक्खा और दूसरा नागर को दे दिया, अब उसने सबके पहिले भूतनाथ के बटुए की तलाशी ली मगर उसमें कोई ऐसी चीज न निकली जो माया-रानी के काम की होती, यद्यपि तरह तरह की दवाओं और मसालों से भरी हुई खूबसूरत डिबिआयें नजर आईं मगर उनका गुन न मालूम होने के कारण मायारानी के लिये बिलकुल ही बेकार थीं । जब बटुए में से अपने मतलब की कोई चीज न पाई तो कमर और कपड़ों के जेब इत्यादि अच्छी तरह टटोले मगर उससे भी कुछ काम न चला अन्त में उदास हो कर राजा गोपालसिंह की तरफ लौटी और उनकी तलाशी लेने लगी ॥

ऊपर का बयान पढ़ने से पाठकों को मालूम ही हो चुका होगा कि अजायबघर की ताली जो मायारानी ने भूतनाथ को दी थी वह राजा गोपालसिंह ने भूतनाथ से ले ली थी । इस समय वही अजा-यबघर की ताली राजा गोपालसिंह के पास थी जो तलाशी लेने के समय मायारानी के हाथ लगी । वह ताली पाकर बहुत ही खुश हुई

और नागर की तरफ देख कर बोली :—

माया०। लीजिये अजायबघर की ताली तो मिल गई अब कोई परवाह नहीं, यद्यपि मुझे मालूम हो चुका है कि मेरी फ़ौज मुझसे बिगड़ गई, मेरा दीवान मुझसे दुश्मनी करने के लिये तैयार है, तुम्हारे मकान का भेद बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को मालूम हो चुका है और इस सबब से मुझे रहने के लिये कोई ठिकाना नहीं है मगर अब अजायब-घर की ताली मिल जाने से मुझे बहुत कुछ भरोसा होगया, मैं अब खुशी से दारोगा वाले बङ्गले में रह कर अपने दुश्मनों से बदला ले सकती हूं, फ़ौजी सिपाहियों के दिल से शक दूर करके अपना रोआब-जमा सकती हूं और ठीक करके अपने ढर्रे पर ला सकती हूं, कम्बख़्त दीवान को भी सजा देना कोई बड़ी बात नहीं है इसके सिवाय तिलिस्मी खञ्जर की बदौलत मुश्किल से मुश्किल काम में सहज ही में कर सकूंगी॥

नागर०। ठीक है अच्छा देखिये शायद रिक्तगन्थ भी इन लोगों में से किसी के पास हो॥

मायारानी ने फिर तलाशी लेना शुरू किया, गोपालसिंह के बाद कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह की भी तलाशी ली मगर रिक्तगन्थ (खून से लिखी किताब) का पता न लगा और न कोई ऐसी चीज मिली जो मायारानी के मतलब की होती, आखिर लाचार होकर यह निश्चय किया कि भूतनाथ को होश में ला कर और डरा धमका कर दर्वाजा खोलने की तर्कीब जानना चाहिये। मायारानी की आज्ञानुसार नागर ने अपने बटुए में से लखलखा निकाला और भूतनाथ को सुंघाने के लिये आगे बढ़ी ही थी कि सुरङ्ग के सिरे पर (जिधर भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे २ मायारानी और नागर आई थीं) रोशनी दिखाई दी। नागर ने भूतनाथ को लखलखा सुंघाने के लिये जो हाथ

बढ़ाया था रोक लिया, लखलखे की डिबिया जमीन पर रख कर तिलिस्मी खंजर मयान से निकाल लिया और अपने हाथ की मोमबत्ती बुझा कर मायारानी से बोली, "देखो मैंने मोमबत्ती बुझा कर अँधेरा कर दिया अब इधर उधर मत हटना कहीं ऐसा न हो स्याह पत्थर पर पैर पड़ जाय। तुम भी तिलिस्मी खंजर अपने हाथ में ले लो ताज्जुब नहीं कि यह आनेवाला हम लोगों का दुश्मन और बीरेन्द्रसिंह का ऐयार हो ॥

माया०। (तिलिस्मी खंजर के कब्जे पर हाथ रख के) यद्यपि तुमने मोमबत्ती बुझा दी मगर उस आनेवाले की नजर पहिले ही उस रोशनी पर पड़ चुकी होगी (गौर से देख के) मालूम होता है कि यह हमारा दारोगा है जिसे हमलोग बाबाजी भी कहते हैं ॥

नागर०। शक तो मुझे भी होता है (रुक कर) हां, अब वह कई कदम आगे बढ़ आया है इससे उसकी दाढ़ी और जटा साफ दिखाई दे रही है। ठीक है निःसन्देह यह दारोगा साहब हैं, न मालूम राजा बीरेन्द्रसिंह के कैद से ये क्योंकर निकल आये! इनका छूट जाना हमलोगों के लिये बहुत अच्छा हुआ ॥

माया०। बेशक इनके छूट कर चले जाने से मुझे खुशी होती अगर वे इस समय यहां न आते, क्योंकि गोपालसिंह के बारे में मैंने लोगों को जो कुछ धोखा दिया है उसकी खबर उन्हें भी नहीं है इस लिये ताज्जुब नहीं कि गोपालसिंह को यहां देख कर दारोगा जोश में आ जाय और मुझसे थुक्काफजीती करने के लिये तैयार हो जाय क्योंकि इसके दिल में राजा की बहुत मुहब्बत थी। आह, इस समय इसका यहां आना बहुतही बुरा हुआ! खैर तू होशियार रहियो इस तिलिस्मी खञ्जर का गुन उसे मालूम न होने पावे और न गोपालसिंह के बारे में कुछ......

नागर०। बहुत अच्छा मैं कुछ भी न बोलूंगी। लीजिये अब वह बहुत पास आ गए। बेशक दारोगा साहब हैं। अगर हम भी मोमबत्ती जला लें तो कोई हर्ज नहीं॥

माया०। कोई हर्ज नहीं॥

ऊपर लिखी बातें मायारानी और नागर में बहुत धीरे धीरे और जल्दी के साथ हुईं। नागर ने मोमबत्ती जलाई और इसके बाद दोनों औरतें आगे अर्थात् दारोगा की तरफ बढ़ीं। दारोगा ने भी इन दोनों को पहिचाना और जब वह मायारानी के पास पहुंचा तो हँस कर बोला, "ईश्वर को धन्यबाद देना चाहिये कि हम राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे से निकल कर चले आये और तुमको राजी खुशी अपने सामने देख रहे हैं॥"

माया०। (बनावटी हँसी के साथ)आपके छूट आने की मुझे हद्द से ज्यादे खुशी हुई, इधर थोड़े दिनों से मैं तरह तरह की मुसीबतों में पड़ी हूं जिसकी कुछ भी आशा न थी और यह सब आपके न होने से हुआ॥

दारोगा०। हां मुझे भी बहुत सी बातों का पता लगा है। इस समय जब मैं अपने बङ्गले पर पहुंचा तो वहां लीला और कई लौंडियों को पाया। बहुत सा हाल तो लीला की जुबानी मालूम हुआ और यह भी उसी से सुना कि टीले पर दो आदमियों को जाते देख कर माया-रानी और नागर भी उसी तरफ गई हैं यही सुन कर मैं भी इस सुरङ्ग में आया हूं नहीं तो मुझे यहां आने की कोई जरूरत न थी॥

माया०। जी हां, मैं बीरेन्द्रसिंह के ऐयार भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे पीछे यहां आई। इस सुरङ्ग का भेद मुझे कुछ भी मालूम न था और आपने भी इस विषय में आज तक कुछ नहीं कहा। भूतनाथ ने सुरङ्ग का दरवाजा खोला और उसके पीछे पीछे छिप कर मैं यहां

चली तो आई मगर यहां से किसी तरह निकल नहीं सकती हूं क्योंकि भूतनाथ ने सुरङ्ग के अन्दर आकर दर्वाजा बन्द कर दिया था और अब मुझसे दर्वाजा किसी तरह नहीं खुलता, ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि इस समय आपको यहां भेज दिया, चलिये पीछे हटिये पहिले मुझे दर्वाजा खोलने की तर्कीब बता दीजिये तो और कुछ बातचीत होगी ॥

दारोगा० । (हँस कर) अब तो मैं आ ही चुका हूं तुम क्यों घबड़ाती हो ? पहिले यह तो बताओ कि वे दोनों ऐयार कहां हैं जिनके पीछे पीछे तुम यहां आई थीं ?

इस समय मायारानी की विचित्र अवस्था थी, वह मुंह से बातें कर रही थी मगर दिल में यही सोच रही थी कि किसी तरह राजा गोपालसिंह का भेद छिपाना चाहिये, बाबाजी (दारोगा) को यह न मालूम हो कि 'मैंने वर्षों से गोपालसिंह को कैद कर रक्खा था' मगर इसके बचाव की कोई सूरत ध्यान में नहीं आती थी । वह अपने उछलते हुए कलेजे को दबाने की कोशिश कर रही थी मगर वह किसी तरह दम नहीं लेता था, उसके चेहरे पर भी खौफ और तरद्दुद की निशानी पाई जाती थी और वह उस समय और भी ज्यादे हो गई जब बाबाजी ने कहा, "वे दोनों ऐयार कहां हैं जिनके पीछे पीछे तुम आई थीं ?" आखिर लाचार होकर मायारानी ने बातें बना कर अपना काम निकालना चाहा और अपने को अच्छी तरह सम्हाल कर बातचीत करने लगी ॥

माया० । (पीछे की तरफ हाथ का इशारा करके) वे दोनों ऐयार उधर पड़े हैं । मैंने अपनी हिकमत से उन्हें बेहोश करके छोड़ दिया है । केवल वे ही दोनों नहीं बल्कि कमलिनी, लाडिली तथा एक ऐयार और मेरे फन्दे में आ पड़ा जिससे यकायक इस सुरङ्ग में मुलाकात

हो गई थी ॥

बाबा०। (चौंक कर) कमलिनी और लाडिली !!

मायारानी०। जी हां, आपने अभी तक सुना नहीं कि लाडिली भी कमलिनी से मिल गई ॥

बाबा०। ओफ ! यह खबर मुझे क्योंकर मिल सकती थी क्योंकि मैं ऐसे तहखाने में कैद था जहां हवा का भी जाना मुश्किल से हो सकता था, खैर चलो मैं जरा उन ऐयारों की सूरत तो देखूं ॥

अब बाबाजी उस तरफ बढ़े जहां राजा गोपालसिंह, कमलिनी, लाडिली और दोनों ऐयार बेहोश पड़े थे। बाबाजी के पीछे २ मायारानी और नागर भी स्याह पत्थरों को बचाती हुई उसी तरफ बढ़ीं, वहां की जमीन में बनिस्बत सुफेद पत्थर के स्याह पत्थर की पटरी (सिल्ली) बहुत कम चौड़ी थी। यद्यपि बाबाजी से मायारानी डरती, दबती और साथ ही इसके बाबाजी की इज्जत और कदर भी करती थी परन्तु इस समय उसकी अवस्था में फर्क पड़ गया था। वह धड़कते हुए कलेजे के साथ चुपचाप बाबाजी के पीछे पीछे जा रही थी मगर अपना दाहिना हाथ तिलिस्मी खञ्जर के कब्जे पर जो अब उस की कमर में था इस तरह रक्खे हुए थी जैसे उसे स्यान से निकाल कर काम में लाने के लिये तैयार है। शायद इसका सबब यह हो कि वह बाबाजी पर वार करने का इरादा रखती थी क्योंकि उसे निश्चय था कि राजा गोपालसिंह को देखते ही बाबाजी बिगड़ खड़े होंगे और एक गुप्त भेद का जिसकी उन्हें खबर न थी पता लग जाने के कारण लानत और मलामत करेंगे। साथ ही इसके बाबाजी की चाल भी बेफिक्री के साथ न थी, वह भी कनखियों से आगे पीछे और अगल बगल देखते जाते थे और हर तरह से चौकन्ने मालूम पड़ते थे ॥

जब बाबाजी उन लोगों के पास पहुंचे जो बेहोश पड़े थे तो मोम-

बत्ती की रोशनी में एक एक को अच्छी तरह देखने लगे। जब उनकी निगाह राजा गोपालसिंह पर पड़ी तो वह चौंके और मायारानी की तरफ देख के बोले, "हैं! यह क्या मामला है? मैं अपनी आंखों के सामने बेहोश पड़ा हुआ किसे देख रहा हूं !!"

माया०। (लड़खड़ाई आवाज से) इसी के बारे में मैंने कहा था कि एक और ऐयार भी आ फँसा है !!

बाबा०। ओफ! यह तो राजा गोपालसिंह हैं जिन्हें मरे कई वर्ष हो गये! नहीं नहीं, मरा हुआ आदमी लौट कर नहीं आता (कुछ रुक कर) यद्यपि दुःख या रञ्ज के सबब से इनकी सूरत में फर्क पड़ गया है परन्तु मेरे पहिचानने में फर्क नहीं है। बेशक यह हमारे मालिक राजा गोपालसिंह हैं जिनकी नेकियों ने लोगों को अपना ताबेदार बना लिया था, जिनकी बुद्धिमानी और मिलनसारी प्रसिद्ध थी और जिसके सबब से इनकी ताबेदारी में रहना लोग अपनी इज्जत समझते थे। ओफ! तुमने इनके बारे में हमलोगों को धोखा दिया, यद्यपि तुम्हारी बुरी चालचलन को मैं खूब जानता था और जानबूझ कर कई कारणों से तरह दिये जाता था मगर यह खबर न थी कि उस चालचलन की हद्द यहां तक पहुंच चुकी है (गोपालसिंह की नब्ज देख कर) शुक्र है कि मैं अपने मालिक को जीता पाता हूं ॥

माया०। बाबाजी! आप जल्दी न कीजिये और बिना समझे बूझे मुझे अपनी बातों से दुःख न दीजिये, जो मैं कहती हूं उसे मानिये और विश्वास कीजिये कि यह बीरेन्द्रसिंह का ऐयार है, राजा की सूरत बन कर कई दिनों से रिआया को भड़का रहा है। इसकी खबर मुझे पहिले लग चुकी थी और मैंने मुनादी करा दी थी कि "एक ऐयार राजा की सूरत बन कर लोगों को भड़काने के लिये आया है जो कोई उसका सिर काट कर मेरे पास लावेगा उसे एक लाख रुपया

इनाम दूंगी।" आज इत्तफाक से यह कम्बख़्त मेरे कब्ज़े में आ फंसा है॥

बाबा०। (कुछ सोच कर) शायद ऐसा ही हो मगर तुमने तो कहा था कि भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे पीछे इस सुरङ्ग में आई हूं फिर ये लोग तुम्हें कैसे मिले? क्या पहिले ही से इस सुरङ्ग में मौजूद थे?

माया०। हां जब मैं इस सुरङ्ग में आ चुकी और भूतनाथ तथा देवीसिंह को बेहोश कर चुकी उसके बाद ये लोग (हाथ का इशारा करके) इस तरफ से यहां आ पहुंचे उस समय बेहोशी वाली बारूद से निकला हुआ धूआं यहां भरा हुआ था जिसके सबब से ये लोग भी बेहोश होकर लेट गए॥

बाबा०। बेहोशी वाली बारूद से निकला हुआ धूंआं! क्या तुमने इन लोगों को किसी नई रीति से बेहोश किया है?

माया०। जब मैं दुःखी होकर अपने घर से भागी तो (तिलिस्मी तमञ्चा और गोली दिखा कर) यह तिलिस्मी तमञ्चा और गोली निकाल कर लेती आई थी, इसी के जरिये से चलाई हुई तिलिस्मी गोली ने अपना काम किया। आप तो इसका हाल जानते ही हैं॥

बाबा०। ठीक है (राजा गोपालसिंह की तरफ देख कर) मगर मैं कैसे कहूं कि यह बीरेन्द्रसिंह का ऐयार है! अच्छा देखो मैं अभी इसका पता लगा लेता हूं।

बाबाजी ने अपने झोले में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था, उस अर्क से अपनी उँगली तर करके राजा गोपालसिंह के गाल में जहां एक तिल का दाग था लगाया और कुछ ठहर कर कपड़े से पोंछ डाला और फिर गौर से देखने बाद बोले:—

बाबा०। नहीं नहीं, यह बीरेन्द्रसिंह का ऐयार नहीं है, इसने अपने

चेहरे को रँगा नहीं है और न इसने नकली तिल का दाग बनाया है। अगर ऐसा होता तो इस दवा के लगाने से जरूर छूट जाता, यह बेशक राजा गोपालसिंह हैं और तुमने इनके बारे में निःसन्देह हम लोगों को धोखा दिया ॥

मायाः । ऐसा न समझिये, वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग अपने चेहरे पर कच्चा रङ्ग नहीं लगाते, अभी हाल ही में तेजसिंह ने मेरे ऐयार बिहारीसिंह को धोखा दिया था, उसका चेहरा ऐसा रङ्ग दिया कि हजार उद्योग करने पर भी बिहारीसिंह उसे साफ न कर सका, इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो ताज्जुब करेंगे, वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बड़े ही धूर्त और चालाक हैं ॥

बाबा० । मगर नहीं मेरी दवा बेकार जाने वाली नहीं है, हां एक बात हो सकती है ॥

माया० । वह क्या ?

बाबा० । शायद तुमने राजा गोपालसिंह के बारे में हमलोगों को धोखा न दिया हो खुद यही हमलोगों को धोखा देकर कहीं चले गए हों ॥

माया० । नहीं यह भी नहीं हो सकता ॥

बाबा० । बेशक नहीं हो सकता, अच्छा मैं इन्हें होश में लाता हूं जो कुछ है बातचीत से मालूम हो जायगा ॥

माया० । नहीं ऐसा न कीजिये, पहिले इन सभों को इसी तरह बेहोश ले जाकर अपने बङ्गले में कैद कीजिये फिर जो होगा देखा जायगा ॥

बाबा० । मैं यह बात नहीं मान सकता ॥

माया० । (जोर देकर) जो मैं कहती हूं वही करना होगा ॥

बाबा० । कदापि नहीं, मुझे इस विषय में बहुत कुछ शक है, राजा

साहब के साथ ही साथ में कमलिनी और लाडिली को भी होश में लाऊँगा ॥

इतना सुनते ही मायारानी की हालत बदल गई, क्रोध के मारे उसके होंठ कांपने लगे, उसकी आंखें लाल हो गईं और वह तिलिस्मी खञ्जर म्यान से निकाल कर क्रोध भरी आवाज में बाबाजी से बोली, "क्या तुम्हें किसी तरह की शेखी होगई है? क्या तुम अपने को मुझसे बढ़ कर समझते हो? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तिलिस्म की रानी हूं? मैं जो चाहूं सो कर सकती हूं तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, लो मैं साफ २ कह देती हूं कि बेशक यह गोपालसिंह है, धनपति के साथ सुख भोगने और सता कर तिलिस्म का भेद जानने के लिये मैंने इसे कैद कर रक्खा था मगर कम्बख़्त कमलिनी ने इसे कैद से छुड़ा दिया अब मैं तुम्हारे सामने इन सभों का सिर काट कर अपना गुस्सा मिटाऊँगी तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकते अगर ज्यादे सिर उठाओगे तो (खञ्जर दिखा कर) इस खञ्जर से पहिले तुम्हारा ही काम तमाम करूँगी ॥"

बाबा०। (हँस कर) बस बस बहुत उछल कूद न करो यद्यपि मैं बुड्ढा हूं तथापि तुम दो औरतों से किसी तरह हार नहीं सकता, मैं वही करूँगा जो मेरे जी में आवेगा। यदि तुम इस तिलिस्म की रानी हो तो मैं भी तिलिस्म का दारोगा हूं मेरे पास भी बहुत सी अनूठी चीजें हैं इसके अतिरिक्त तुम मुझसे बिगड़ करके कुछ फायदा नहीं उठा सकतीं और अब तो तुमने साफ कबूल ही दिया कि........

माया०। (बात काट कर) हां हां, कबूल दिया और फिर भी कहती हूं कि तुम्हारे बिना मेरा कुछ भी हर्ज नहीं हो सकता तुम्हें अपने दारोगापन की शेखी है तो देखो मैं अपनी ताकत दिखाती हूं ॥

इतना कह कर मायारानी ने तिलिस्मी खञ्जर का कब्जा दबाया,

उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और जब कब्ज़ा ढीला किया तो चमक बन्द होगई मगर बाबाजी पर इसका कुछ भी असर न हुआ जिससे मायारानी को बड़ा ताज्जुब हुआ। आखिर उसने बेहोश करने की नीयत से तिलिस्मी खञ्जर बाबाजी के बदन से लगा दिया मगर इससे भी कुछ नतीजा न निकला, बाबाजी ज्यों के त्यों खड़े रह गए। अब तो मायारानी के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, वह घबड़ा कर बाबाजी का मुंह देखने लगी, अगर तिलिस्मी खञ्जर में से चमक न पैदा होती तो उसे शक होता कि यह तिलिस्मी खञ्जर शायद वह नहीं है जिसकी तारीफ भूतनाथ ने की थी मगर अब वह खञ्जर पर किसी तरह का शक भी नहीं कर सकती थी॥

बाबा०। (हँस कर) कहिये मेरा घमण्ड वाजिब है या नहीं?

माया०। (तिलिस्मी खञ्जर की तरफ देखके) शायद इसमें कुछ...

बाबा०। (बात काट कर) नहीं नहीं इस खञ्जर के गुन में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा, मैं इस खञ्जर को खूब जानता हूं, यद्यपि तुम्हारे लिये यह एक नई चीज है परन्तु मैं अपने (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इस मालिक की बदौलत इसी प्रकार और गुन के कई खञ्जर, कटार, तलवार और नेजे देख चुका हूं और उनसे काम भी ले चुका हूं मगर जब मैं तिलिस्मी कामों में सिद्ध के बराबर हो गया तब मेरे दिल से ऐसी तुच्छ चीजों की कदर और इज्जत जाती रही। तुम देखती हो कि इस खञ्जर का मुझ पर कुछ भी असर नहीं होता। असल तो यह है कि तुम मेरी ताकत को नहीं जानती हो, तुम्हें नहीं मालूम है कि मैं खाली हाथ रहने पर भी क्या क्या कर सकता हूं, बस मैं अपनी ताकत का हाल खोलना उचित नहीं समझता परन्तु अफसोस! तुम मुझी को मारने के लिये तैयार होगईं! खैर कोई चिन्ता नहीं, आज तक मैं तुम्हारी इज्जत करता रहा, तुमने

जो कुछ भला बुरा किया उसे देखकर भी तरह देता गया मगर अब देखता हूं तो तुम........

माया०। (बात काट कर) सुनिये, आप जो कुछ कहेंगे मैं समझ गई, मेरी यह नीयत न थी और न है कि आपकी जान लूं क्योंकि केवल आपही के भरोसे पर मैं कूद रही हूं, आप ही की मदद से बड़े २ बहादुरों को मैं कुछ नहीं समझती, यह तो साफ जाहिर है कि थोड़े ही दिन आप मुझसे अलग रहे इसी बीच में मेरी सब दुर्दशा होगई। मैं आपको पिता के समान मानती हूं इस लिये आशा है कि (हाथ जोड़ कर) इस समय मुझसे जो कुछ भूल हो गई उसे आप बाल-बच्चों की भूल के समान मान कर क्षमा करेंगे, इस कसूर से मेरा मतलब यही था कि किसी तरह राजा गोपालसिंह के मारने पर आपको राजी करूं॥

बाबाजी पर तिलिस्मी खंजर का कुछ भी असर न होते देख माया-रानी का कलेजा धड़कने लगा, वह बहुत ही डरी और उसे विश्वास हो गया कि तिलिस्मी कारखाने में जितना बाबाजी को दखल और जानकारी है उसका सोलहवां हिस्सा भी मुझको नहीं है और इसी के साथ २ तिलिस्मी चीजों से बाबाजी ने बहुत कुछ फायदा उठाया है, यह भी उसी फायदे का असर है कि राजा बीरेन्द्रसिंह की कैद से सहज ही में छूट आए और ऐसे अद्भुत तिलिस्मी खंजर को तुच्छ समझते हैं और इसका असर उन पर कुछ भी नहीं होता। अब वह इस बात को सोचने लगी कि ऐसे बाबाजी से बिगाड़ करना उचित नहीं है बल्कि जिस तरह हो सके इन्हें राजी करना चाहिये फिर मौका मिलने पर जैसा होगा देखा जायगा॥

ऐसी ऐसी बहुत सी बातें मायारानी तेजी के साथ सोच गई और इसी सबब से वह आधीनता के साथ बाबाजी से बातें करने लगी।

जब वह अपनी बात खतम करके चुप होगई तो बाबाजी ने मुस्कुरा दिया और कुछ सोच कर कहा, "खैर तुम्हारे इस कसूर को भी माफ करता हूं मगर मैं यह नहीं चाहता कि राजा गोपालसिंह को किसी तरह की तकलीफ हो जिन्हें मुद्दत के बाद आज मैं इस अवस्था में देख रहा हूं ॥

माया० । तब आप ने माफ ही क्या किया ? यद्यपि आपको इस बात का रंज है कि मैंने गोपालसिंह के साथ दगा की और यह भेद आप से छिपा रक्खा मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिये ! खास करके उस अँधेरी रात की बात जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौअल हुई थी ! वह सब कर्म तो आप ही का है ! आप ही ने मुझे यहां तक पहुंचाया ! अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जायँगे ? मान लिया जाय कि अगर आप गोपालसिंह को बचा लें तो क्या "लक्ष्मीदेवी" का बच के निकल जाना आप के लिये दुःखदाई न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिंह को होगी तो क्या वह आपको छोड़ देंगे ? बेशक जो कुछ आज तक मैंने किया है सब आप ही का कसूर समझा जायगा । मैंने इसे इसी लिये कैद किया था कि लक्ष्मीदेवी वाला भेद इसे मालूम न होने पावे, इसे इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह.........

इतना कह कर मायारानी चुप होगई और बड़े गौर से बाबाजी की सूरत देखने लगी, मानो इस बात का पता लगाना चाहती है कि बाबाजी के दिल पर मेरी बातों का क्या असर हुआ । दारोगा साहब भी मायारानी की बातें सुन कर तरद्दुद में पड़ गये और न मालूम क्या सोचने लगे । थोड़ी देर बाद दारोगा ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देख के कहा, "अच्छा अब विशेष बातों की कोई जरूरत

नहीं है मैं वादा करता हूं कि गोपालसिंह के बारे में तुम पर किसी तरह का दबाव न डालूंगा और इससे ज्यादे न कहूंगा कि इनके मारने का विचार न कर के थोड़े दिनों तक इन्हें कैद ही में रखना आवश्यक है, बल्कि कमलिनी, लाडिली, भूतनाथ और देवीसिंह को भी कैद ही में रखना चाहिये। हां जब मैं उन आफतों को दूर कर लूं जिनके कारण तुम्हें अपना राज्य छोड़ना पड़ा और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर पहुंचा दूं तब जो तुम्हारे जी में आवे करना। बस बस अब इसमें दखल मत दो जो मैंने कहा है उसे करो नहीं तो तुम्हें पूरा पूरा सुख कदापि न मिलेगा॥

माया०। खैर ऐसा ही सही मगर यह तो कहिये कि इन लोगों को कैद कहां कीजियेगा?

बाबा०। इसके लिये मेरा बङ्गला बहुत मुनासिब है॥

माया०। और मेरे रहने के लिये कौन सा ठिकाना सोच रक्खा है?

बाबा०। वांह! क्या तुम समझती हो कि तुम्हें बहुत दिनों तक अपने राज्य से अलग रहना पड़ेगा? नहीं नहीं, दो ही तीन दिन में उन सभों का मुंह काला करूंगा जो तुम्हारे नौकर हो कर तुमसे खिलाफ हो रहे हैं और तुम्हें उसी दर्जे पर बैठाऊंगा जिस पर मेरे सामने तुम थीं, हां एक चीज के बिना हर्ज जरूर होगा॥

माया०। वह क्या? शायद आपका मतलब अजायबघर की ताली से हो॥

बाबा०। हां मेरा मतलब अजायबघर की ताली ही से है, क्या तुम उसे अपने मकान में छोड़ आई हो?

माया०। जी नहीं, वह मेरे पास है, जब मैं लाचार होकर अपने घर से भागी तो एक वही चीज थी जिसे मैं अपने साथ ला सकी॥

बाबा०। वाह वाह, यह बड़े खुशी की बात तुमने कही अच्छा वह

ताली मेरे हवाले करो तो और कुछ बातें होंगी ॥

माया० । (अजायबघर की ताली बाबाजी को दे कर) लीजिये तैयार है,अब जहां तक जल्द हो सके यहां से निकल चलना चाहिये ॥

बाबा० । हां हां, मैं भी यही चाहता हूं, भला यह तो कहो कि तिलिस्मी खंजर तुमने कहां से पाया ?

माया० । यह तिलिस्मी खंजर कमलिनी ने भूतनाथ और राजा गोपालसिंह को दिया था जो इस समय इन सभों के बेहोश हो जाने पर मुझे मिला, एक तो मैंने ले लिया और दूसरा खंजर नागर को दिया, मैंने सुना है कि इसी तरह के और भी कई खंजर कमलिनी ने अपने साथियों को बांटे हैं मगर मालूम नहीं इस समय वे कहां है ॥

बाबा० । ठीक है, खैर यह काम तुमने बहुत ही अच्छा किया कि अजायबघर की ताली अपने साथ लेती आई नहीं तो बड़ा हर्ज होता ॥

माया० । जी हां ॥

मायारानी अजायबघर की ताली के बारे में भी दारोगा से झूठ बोली,यद्यपि उसने यह ताली भूतनाथ को दे दी थी और इस समय गोपालसिंह के पास से मिली परन्तु भूतनाथ का नाम लेना उचित न जाना क्योंकि उसने यह ताली भूतनाथ को राजा गोपालसिंह की जान लेने के बदले में दी थी और यह बात बाबा जी से कहना उसे मञ्जूर न था इससे बहाना कर गई ॥

मायारानी और नागर को साथ लिये हुये बाबाजी वहां से रवाना हुए और उस खम्भे के पास पहुंचे जिस पर गड़ाड़ीदार पहिया लगा हुआ था, अब मायारानी बड़ी उत्कण्ठा से देखने लगी कि बाबाजी किस तरह से दर्वाजा खोलते हैं और जब बाबाजी ने उसी गड़ाड़ीदार पहिये को घुमा कर सुरङ्ग का दर्वाजा खोला तो मायारानी को बड़ा आश्चर्य्य हुआ क्योंकि इसी पहिये को वह कई दफे उलट फेर

कर घुमा चुकी थी मगर दर्वाजा नहीं खुला था। मायारानी ने बड़े आग्रह से इसका सबब बाबाजी से पूछा और कहा कि "इसी पहिये को मैं पहिले कई दफे घुमा चुकी थी मगर दर्वाजा न खुला इस समय क्यों खुल गया?" इसके जवाब में बाबाजी हँस कर बोले, "इसका सबब किसी दूसरे वक्त तुमसे कहूंगा क्योंकि समझाने में बहुत देर लगेगी और पहिले उन कामों को बहुत जल्द कर लेना चाहिये जिनका करना आवश्यक है॥"

यह जवाब सुन कर मायारानी चुप होगई और यह सोच लिया कि खैर किसी दूसरे समय इसका पता लग जायगा क्योंकि इस समय वह बाबाजी से बहुत ही दबी हुई थी और किसी बात में जिद्द करना उचित नहीं समझती थी बाबाजी ने दरवाजा खुलने का भेद जान-बूझ कर मायारानी से छिपा रक्खा क्योंकि उसका भेद खोलना उन्हें मंजूर न था, यद्यपि मायारानी को उसका भेद मालूम न हुआ मगर हम अपने पाठकों को दरवाजा खुलने का भेद बता देते हैं। लोहे के खम्भे पर जो गड़ाड़ीदार पहिया था उसके घुमाने से दरवाजा बन्द हो जाता था परन्तु खोलने के समय उसे एक बँधे हुए अन्दाज से घुमाना पड़ता था। उसी पहिये को इक्कीस दफे बाईं तरफ, इसके बाद बारह दफे दाहिनी तरफ और फिर नौ दफे बाईं तरफ घुमाने से दर्वाजा खुलता था, अगर इस से कुछ भी कम या ज्यादे पहिया घूम जाय तो दर्वाजा नहीं खुलता था। दर्वाजा खोलती समय बाबाजी ने बड़ी तेजी के साथ गिन कर पहिया घुमाया और मायारानी का उसकी गिनती की तरफ कुछ भी ध्यान न था॥

मायारानी और नागर को साथ लिये हुए जब बाबाजी सुरङ्ग के बाहर निकले तो सवेरा हो चुका था मगर सूर्य्य अभी नहीं निकला था। टीले पर से देखा तो चारो तरफ मैदान में सन्नाटा था इसलिये

राय हुई कि इसी समय गोपालसिंह, भूतनाथ, देवीसिंह, कमलिनी और लाडिली को निकाल कर बङ्गले में पहुंचाना चाहिये। नागर दौड़ी हुई चली गई और लीला तथा लौंडियों को बुला लाई और इसके बाद सभों ने मिल कर पांचों कैदियों को सुरङ्ग से निकाल कर दारोगा वाले बङ्गले में पहुंचाया। अब यह विचार होने लगा कि पांचो कैदियों को किस जगह कैद करना चाहिये। बाबाजी की राय हुई कि पांचो कैदियों को अजायबघर की ड्योढ़ी में कैद करना चाहिये* मगर मायारानी ने कुछ सोच बिचार कर कहा कि नहीं इन लोगों को मेगज़ीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना चाहिये। माया-रानी की बात सोच कर बाबाजी के होंठ फड़कने लगे और माथे पर दो एक बल पड़ गये जिससे मालूम होता था कि बाबाजी को क्रोध चढ़ आया है मगर बाबाजी ने बहुत जल्द दूसरी तरफ बहाने के साथ देख कर अपने को सम्हाला जिसमें सूरत देख कर मायारानी को उनके दिल का हाल कुछ मालूम न हो। बाबाजी को चुप देख कर माया-रानी ने फिर टोका और कहा कि "कैदियों को मेगजीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना उत्तम होगा।" जिस पर बाबाजी ने हँस कर जवाब दिया, "अच्छा जो तुम कहती हो वही होगा॥"

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मकान के चारों कोनों में चार कोठड़ियां और चार दालान हैं। बङ्गले में जाने के लिये जो सदर

---

* अजायबघर की ड्योढ़ी से वही कोठड़ी मुराद है जिसमें धनपति और माया-रानी को भूतनाथ उस समय ले गया था जब राजा गोपालसिंह को मारने का वादा किया था। उसी कोठड़ी में राजा गोपालसिंह की नकली लाश दिखाई गई थी। सन्तति हिस्सा आठ ग्यारहवां बयान देखिये॥

दरवाजा है उसके बाएं तरफ वाली कोठड़ी के नीचे दो तहखाने हैं एक तो मेगजीन के नाम से पुकारा जाता है और उसमें बारूद और छोटे छोटे कई तोप रक्खे हुए हैं और उसी के साथ सटा हुआ जो दूसरा तहखाना है उसमें बाबाजी का खजाना रहता है, उसी खजाने वाले तहखाने में कैदियों को कैद करने की राय मायारानी ने दी और बाबाजी ने भी वह बात मंजूर की ॥

बाबाजी उस कोठड़ी के अन्दर गए, वहां दो तरफ दीवार में लोहे के दो दरवाजे थे जिसे दोनों तहखानों का दरवाजा कहना चाहिये, दाहिनी तरफ वाले दर्वाजे को किसी गुप्त रीति से बाबाजी ने खोला और नागर, लीला तथा लौंडियों की मदद से पांचों कैदियों को उन के ऐयारी के बटुए सहित तहखाने में पहुंचा कर बाहर निकल आये और दर्वाजा बन्द कर दिया, बाहर निकलती समय तहखाने में से तांबे का एक घड़ा भी लेते आए और मायारानी की तरफ देख के बोले, "अब कैदियों के लिये खाने पीने का सामान कर देना चाहिये, इसी घड़े में भर कर जल और थोड़े से जङ्गली फल वहां रखवा देता हूं, जो दो तीन दिन के लिये काफी होगा फिर देखा जायगा।" (लौंडियों की तरफ देख के) जाओ तुम लोग थोड़े से फल बहुत जल्द तोड़ लाओ। आज्ञानुसार लौंडियां चारों तरफ चली गईं और बात की बात में बहुत से फल तोड़ कर ले आईं। एक कपड़े में बांध कर वही फल और जल का भरा हुआ घड़ा हाथ में लिये हुये बाबाजी फिर उसी तह-खाने में उतरे मगर अबकी दफे किसी को साथ न ले गये बल्कि अन्दर जाते दफे दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया और आधी घड़ी से ज्यादे देर के बाद तहखाने से बाहर निकले। मायारानी ने ताज्जुब में आकर पूछा कि आपको तहखाने में इतनी देर क्यों लगी ? इसके जवाब में बाबाजी ने कहा कि "कैदियों के बटुए की तालाशी लेता था मगर

कोई चीज मेरे मतलब की न निकली ॥"

इस समय मायारानी का चेहरा फतहमन्दी की खुशी से दमक रहा था, उसे केवल इसी बात की खुशी न थी कि उसने राजा गोपालसिंह और अपनी दोनों बहिनों तथा ऐयारों को कैद कर लिया था बल्कि उसकी खुशी का सबब कुछ और भी था। थोड़ी ही देर पहिले उसे इस बात का रञ्ज था कि कम्बख़्त दारोगा ने यकायक पहुंच कर हमारे काम में विघ्न डाल दिया नहीं तो गोपालसिंह तथा कमलिनी और लाडिली को मार कर मैं हमेशे के लिये निश्चिन्त हो जाती, मगर अब उसे इन बातों का रञ्ज नहीं है और यह उसकी मुस्कुराहट से जाहिर हो रहा है ॥
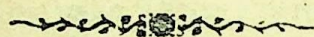
बारहवां बयान ।

शाम होने में कुछ विलम्ब नहीं है, सूर्य्य भगवान अस्त हो गये केवल उनकी लालिमा आसमान के पश्चिम तरफ दिखाई दे रही है, दारोगा वाले बङ्गले में रहने वालों के लिये यह अच्छा समय है परन्तु आज उस बङ्गले में जितने आदमी दिखाई दे रहे हैं वे सब इस योग्य नहीं हैं कि बेफिक्री के साथ इधर उधर घूमें और इस अनूठे समय का आनन्द लें। यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली की तरफ से मायारानी निश्चिन्त हो गई बल्कि उनके साथही साथ दो ऐयारों को भी गिरफ़ार कर लिया है मगर अभी तक उसका जी ठिकाने नहीं हुआ, वह नहर के किनारे बैठी हुई बाबाजी से बातें कर रही है और इस फिक्र में है कि कोई ऐसी तर्कीब निकल आवे कि जमानियां की गद्दी पर बैठ कर उसी शान के साथ हुकूमत करूं जैसा कि आज के कुछ दिन पहिले कर रही थी। उसके पास केवल नागर

बैठी हुई दोनों की बातें सुन रही है॥

माया०। जिस दिन से आपको बीरेन्द्रसिंह ने गिरफ्तार कर लिया उसी दिन से मेरी किस्मत ने ऐसा पल्टा खाया कि जिसका कोई हद्द हिसाब नहीं, मानो मेरे लिये जमाना ही और हो गया, एक दिन भी सुख के साथ सोना नसीब न हुआ, मुझ पर जो जो मुसीबतें आईं और तिलिस्मी बाग के अन्दर जो २ अनहोनी बातें हुईं उसका खुलासा हाल आज मैं आपसे कह चुकी हूं। इस समय यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली की तरफ से मैं निश्चिन्त हूं मगर फिर भी अपनी अमलदारी में वा तिलिस्मी बाग के अन्दर जाकर रहने का हौसला नहीं पड़ता, क्योंकि तिलिस्मी बाग के अन्दर दोनों नकाबपोशों के आने और धनपति का भेद खुल जाने से हमारे सिपाहियों की हालत बिल्कुल ही बदल गई है। मुझे उनके हाथों से दुःख भोगने के सिवाय और किसी तरह की उम्मीद नहीं है। यह भी सुनने में आया है कि दीवान साहब मुझे गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़े हुए हैं॥

बाबा०। दीवान जो कुछ कर रहा हैं उससे मालूम होता है कि या तो उसे राजा गोपालसिंह का असल असल हाल मालूम हो गया है और वह उन्हें फिर जमानिया की गद्दी पर बैठाना चाहता है या वह स्वयम् राजा साहब के बारे में धोखा खा रहा है और चाहता है कि तुम्हें गिरफ्तार कर राजा बीरेन्द्रसिंह के हवाले करे और उनकी मेहरबानी के भरोसे पर स्वयम् जमानियां का राजा बन बैठे। तुम कह चुकी हो कि राजा बीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज मुकाबले में आ चुकी है जिसका अफसर नाहरसिंह है। अब सोचना चाहिये कि नाहरसिंह के मुकाबले में आ कर चुपचाप बैठे रहना बेसबब नहीं है और......

माया०। शायद इसका सबब यह हो कि दीवान ने मुझे गिरफ्तार

कर के बीरेन्द्रसिंह के हवाले कर देने की शर्त पर उन से सुलह कर ली हो ?

बाबाजी०। ताज्जुब नहीं कि ऐसा ही हो मगर घबड़ाओ नहीं मैं दीवान के पास जाऊंगा और देखूंगा कि वह किस ढङ्ग पर चलने का इरादा करता है, अगर बदमाशी करने पर उतारू है तो मैं उसे ठीक करूंगा, हां यह तो बताओ कि दीवान को तुम्हारी तिलिस्मी बातों या तिलिस्मी कारखाने का भेद तो किसी ने नहीं दिया ?

माया०। जहां तक मैं समझती हूं उसे तिलिस्मी कारखाने में कुछ दखल नहीं है मगर इस बात को मैं जोर दे कर नहीं कह सकती क्योंकि वे दोनों नकाबपोश हमारे तिलिस्मी बाग के भेदों से बखूबी वाकिफ हैं जिनका हाल मैं आपसे कह चुकी हूं बल्कि ऐसा कहना चाहिये कि बनिस्बत मेरे वह ज्यादे जानकार हैं। अगर ऐसा न होता तो वे मेरी तरकीबों को रद्द न कर सकते जो उनके फंसाने के लिये की गई थीं। ताज्जुब नहीं कि उन दोनों ने दीवान से मिल कर तिलिस्म का कुछ हाल कहा हो॥

बाबाजी०। खैर कोई हर्ज नहीं देखा जायगा, मैं कल जरूर वहां जाऊंगा और दीवान से मिलूंगा॥

माया०। नहीं बल्कि आप आज ही जाइये और जहां तक जल्द हो सके बन्दोबस्त कीजिये क्योंकि अगर दीवान के भेजे हुए सौ पचास आदमी मुझे ढूंढ़ते हुए यहां आ जायंगे तो सख्त मुश्किल होगी। यद्यपि यह तिलिस्मी खंजर मुझे मिल गया है और तिलिस्मी गोली से भी मैं सैकड़ों की जान ले सकती हूं मगर उस समय मेरे किये कुछ भी न होगा जब किसी ऐसे से मुकाबिला हो जायगा जिसके पास कमलिनी का दिया हुआ इसी प्रकार का खञ्जर मौजूद हो॥

बाबा०। तथापि इस बङ्गले में आकर तुम्हें कोई सता नहीं सकता॥

माया०। ठीक है मगर मैं कब तक इसके अन्दर छिप कर बैठी रहूंगी आखिर भूख प्यास भी तो कोई चीज है ?

बाबा०। मगर ऐसा होना मुश्किल है ॥

माया०। तो क्या हर्ज है अगर आप इसी समय दीवान के पास जायँ? मैं खूब जानती हूं कि वह आप की सूरत देखते ही डर जायगा ॥

बाबा०। क्या तुम्हारी यही मर्जी है कि मैं इसी समय जाऊं ?

माया०। हां जाइये और अवश्य जाइये ॥

बाबा०। अच्छा यही सही मैं जाता हूं ॥

बाबाजी उसी समय उठ खड़े हुए और जमानियां की तरफ रवाना हुए, मायारानी उस समय तक बराबर देखती रही जबतक वह पेड़ों की आड़ में होकर नजरों से गायब न हो गये। इसके बाद मायारानी ने हँस कर नागर की तरफ देखा और कहा :—

माया०। तुम समझती हो कि बाबाजी को मैंने जिद्द करके इसी समय यहां से क्यों धता बताया * ?

नागर०। जाहिर में जो कुछ तुमने बाबाजी से कहा है और जिस काम के लिये उन्हें भेजा है अगर उसके सिवाय और कोई मतलब है तो मैं कह सकती हूं कि मेरी समझ में कुछ न आया ॥

माया०। (हँस कर) अच्छा तो अब मैं समझा देती हूं। बाबा जी के सामने मैंने अपने को जितना बनाया वास्तव में मेरे दिल में उतना दुःख और रञ्ज नहीं है, क्योंकि जिसका डर था, जिसके निकल जाने से मैं परेशान थी, जिसका प्रगट होना मेरे लिये मौत का सबब था और जो मुझसे बदला लिये बिना मानने वाला न था अर्थात् राजा गोपालसिंह, वह मेरे कब्जे में आ चुका, अब अगर दुःख है तो इतना

* अर्थात् बिदा किया ॥

ही कि कम्बख़्त दारोगा ने उसे मारने न दिया मगर मैं बिना उसकी जान लिये कब मानने वाली हूं ! इसीलिये मैंने किसी तरह बाबाजी को यहां से धता बताया ॥

नागर० । तो क्या तुम्हारा यह मतलब था कि बाबाजी यहां से बिदा हो जायँ तो अपने कैदियों को मार डालो ?

माया० । बेशक इसी मतलब से मैंने बाबाजी को यहां से निकाल बाहर किया, क्योंकि अगर वह रहता तो कैदियों को मारने न देता और उसमें जो कुछ करामात है सो तो तुम देख ही चुकी हो । अगर ऐसा न होता तो मैं सुरङ्ग ही में उन सभों को मार कर निश्चिन्त हो जाती ॥

नागर० । मगर बाबाजी ने उस कोठड़ी की ताली तो तुम्हें नहीं दी जिसमें कैदियों को रक्खा है ॥

माया० । ठीक है, बाबाजी इस बात में भी चालाकी कर गए, कैदखाने की कोठड़ी क्योंकर खुलती है सो मुझे नहीं बताया और न कोई ताली वहां की मुझे दी और यह मैं पहिले ही समझे हुए थी कि बाबाजी कैदियों को ऐसी जगह रक्खेंगे जहां मैं जा नहीं सकती इसीलिये तो बाबाजी से मैंने कहा कि कैदियों को मेगज़ीन के बगल वाली कोठड़ी में कैद करो । बाबाजी मेरा मतलब न समझ सके और धोखे में आ गए ॥

नागर० । इस कहने से तो यही साबित होता है कि उस कोठड़ी में तुम जा सकती हो ॥

माया० । नहीं उस कोठड़ी में मैं नहीं जा सकती मगर मेगज़ीन की कोठड़ी तक जा सकती हूं ॥

नागर० । (जोर से हँस कर) अहा हा ! अब मैं समझी, तुम्हारा मतलब यह है कि मेगज़ीन में बारूद का खज़ाना रक्खा है आग लगा

कर इस......

माया० । बस बस बस, यही बात है । कैदी और कैदखाने की क्या बात इस बङ्गले ही को सत्यानास कर दूंगी, कैदियों की हड्डी तक का तो पता लगेहीगा नहीं ! अच्छा अब इस काम में बिलम्ब न करना चाहिये, उठो मेरे साथ चल कर उस कोठड़ी में अर्थात् मेगजीन में कोई ऐसी चीज रक्खो जो उस वक्त बारूद में आग लगावे जब हमलोग यहां से निकल कर कुछ दूर चली जायँ ॥

नागर० । ऐसा ही होगा यह कोई मुश्किल बात नहीं है ॥

तेरहवां बयान ।

कल शाम को बाबाजी जमानियां गए थे और आज शाम होने के दो घण्टे पहिले ही लौट आए, दूर ही से अपने बङ्गले की हालत देख सिर हिला कर बोले, "मैं उसी समय समझ गया था जब मायारानी ने कहा था कि कैदियों को मेगजीन के बगल वाले तहखाने में कैद करना चाहिये ॥"

बाबाजी का बङ्गला जो बहुत ही खूबसूरत और शौकीनों के रहने लायक था बिलकुल बर्बाद हो गया था बल्कि यों कहना चाहिये कि उसकी एक एक ईंट अलग होगई थी। बाबाजी धीरे धीरे उसके पास पहुंचे और कुछ देर तक गौर से देखने के बाद यह कहते हुए घूम पड़े कि "जो हो मगर अजायबघर किसी तरह बर्बाद नहीं हो सकता ॥

बाबाजी के बङ्गले के बर्बाद होने का सबब पाठक समझ ही गये होंगे क्योंकि ऊपर के बयान में मायारानी और नागर की बातचीत से यह भेद साफ साफ खुल चुका है। अब बाबा जी इस विचार

में पड़े कि मायारानी को ढूंढ़ना और उससे दो दो बातें करनी चाहिये ॥

ऐसा करने में बाबाजी को विशेष तकलीफ उठानी नहीं पड़ी क्योंकि थोड़ी ही दूर पर उन्हें उन लौंडियों में से एक लौंडी मिली जो उस समय मायारानी के साथ थी जब बाबाजी कैदियों को तहखाने में बन्द कर के दीवान से मिलने के लिये जमनियां की तरफ रवाने हुए थे। बाबाजी ने उस लौंडी से केवल इतना ही पूछा कि "मायारानी कहां है ?"

लौंडी० । जब आप जमानियां की तरफ चले गए तो मायारानी हमलोगों को साथ लेकर दिल बहलाने के लिये इस जङ्गल में टहलने लगीं और धीरे धीरे यहां से कुछ दूर चली गईं, ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि रानी साहब के दिल में यह बात पैदा हुई नहीं तो हमलोग भी टुकड़े टुकड़े हो कर उड़ गये होते क्योंकि थोड़ी ही देर बाद एक भयानक आवाज़ सुनने में आई और जब हमलोग इस बङ्गले के पास आये तो मट्टी और गर्द के सबब से अन्धकार हो रहा था। हमलोग डर कर पीछे की तरफ हट गए और अन्त में इस बङ्गले की ऐसी अवस्था देखने में आई जो आप देख रहे हैं, लाचार मायारानी ने यहां ठहरना उचित न समझा और नागर के साथ काशी जी की तरफ रवाना हो गईं ॥

बाबा० । और तुझे इसलिये यहां छोड़ गई कि जब मैं आऊं तो बातें बना कर मेरे क्रोध को बढ़ावे ॥

लौंडी० । जी ई ई ई.........

बाबा० । जी ई ई ई क्या ? बेशक यही बात है, खैर तू भी यहां से चली जा और कम्बख़्त मायारानी से जा कर कह दे कि जो कुछ तूने किया बहुत अच्छा किया मगर इस बात को खूब याद रखियो

कि नेकी का नतीजा बेशक नेक है और बदों को कदापि सुख की नींद सोना नसीब नहीं होता। अच्छा ठहर मैं एक चीठी लिख देता हूं सो लेती जा और जहां तक जल्द होसके मिल कर मायारानी के हाथ में दे॥

इतना कह कर बाबाजी बैठ गए और अपने बटुए से सामान निकाल कर चीठी लिखने लगे और जब चीठी लिख चुके तो उस लौंडी के हाथ में देकर आप उत्तर तरफ रवाना हुए॥

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह लौंडी बाबाजी की चीठी लिये हुए काशीजी जायगी और मायारानी से मिल कर चीठी उसके हाथ में देगी मगर हम आपको अपने साथ लिये हुए पहिले ही काशीजी पहुंचते हैं और देखते हैं कि मायारानी किस धुन में कहां बैठी है और क्या कर रही है॥

पहर रात से ज्यादे जा चुकी है, काशी में मनोरमा वाले मकान के अन्दर एक सुन्दर सजे हुए कमरे में मायारानी नागर के साथ बैठी हुई कुछ बातें कर रही है। इस समय उस कमरे में सिवाय नागर और मायारानी के और कोई नहीं है। कमरे में यद्यपि बहुत से बेशकीमत शीशे करीने के साथ लगे हुए हैं मगर रोशनी दो दीवारगीरों में और एक सब्ज कँवल वाले शमादान में जो मायारानी के सामने गद्दी के नीचे रक्खा हुआ है हो रही है। मायारानी सब्ज मखमल की गद्दी पर गाव तकिये के सहारे बैठी है, इस समय उसका खूबसूरत चेहरा जो आज के तीन चार दिन पहिले उदासी और बदहवासी के कारण बेरौनक हो रहा था खुशी और फतहमन्दी की निशानियों के साथ दमक रहा है। वह किसी सवाल का इच्छानुसार जवाब पाने की आशा में मुस्कुराती हुई नागर की तरफ देख रही है॥

नागर०। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि बड़ी भारी बला आ

के सिर से टली परन्तु ऐसा न समझना चाहिये कि अब आपको किसी आफत का सामना न करना पड़ेगा ॥

माया० । इस बात को मैं जानती हूं कि जमानियां की गद्दी पर बैठने के लिये अब भी बहुत कुछ उद्योग करना पड़ेगा मगर मैं यह कह रही हूं कि सब से भारी बला जो थी वह टल गई, कम्बख़्त कमलिनी ने भी बड़ा ही ऊधम मचा रक्खा था, अगर वह बीरेन्द्रसिंह की पक्षपाती न होती तो मैं कभी को दोनों कुमारों को मौत की नींद सुला चुकी होती ॥

नागर० । बेशक, बेशक ॥

माया० । भूतनाथ का मारा जाना भी बहुत अच्छा हुआ क्योंकि उसे इस मकान का भेद बहुत कुछ मालूम हो चुका था और जिसके सबब से इस मकान के रहने वाले भी बेफिक्र नहीं रह सकते थे,मगर देखो तो सही हरामजादे दीवान को क्या हो गया जो एकदम मुझसे फेर गया बल्कि मुझी को गिरफ़ार करने का उद्योग करने लगा ॥

नागर० । यह बात भी उन्हीं नकाबपोशों की बदौलत पैदा हुई है ॥

माया० । ठीक है पहिले तो मैं बेशक ताज्जुब में थी कि न मालूम वो दोनों नकाबपोश कौन थे और कहां से आये थे और दीवान तथा सिपाहियों के बिगड़ने का सबब केवल यही ध्यान में आता था कि गोपालसिंह का भेद खुल जाने से उन लोगों ने मुझे बदकार समझ लिया मगर अब मुझे निश्चय होगया कि उन दोनों नकाबपोशों में से एक तो जरूर राजा गोपालसिंह था ॥

नागर० । मुझे भी यही निश्चय है बल्कि अभी यही बात मैं अपने मुंह से निकालने वाली थी । उनके सिवाय और कोई ऐसा नही हो सकता कि केवल सूरत दिखा कर लोगों को अपने बस में कर ले ।

सिपाहियों को और दीवान को इस बात का भी निश्चय होगया कि गोपालसिंह को तुमने कैद कर रक्खा था, खैर जो होना था सो हो गया अब तो राजा गोपालसिंह का नामनिशान ही न रहा जो फिर जाकर अपना मुंह उन लोगों को दिखावेगा, अब थोड़े ही दिनों में उन लोगों को निश्चय करा दिया जायगा कि वह राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार था॥

माया०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और मेरे नजदीक अब यह कोई बड़ी बात नहीं है कि बेईमान दीवान को गिरफ्तार कर लूं या मार डालूं मगर एक बात का खुटका जरूर है॥

नागर०। वह क्या?

माया०। केवल इतना ही कि दीवान को मारने या गिरफ्तार करने के साथ ही साथ राजा बीरेन्द्रसिंह की उस फौज का मुकाबला करना पड़ेगा जो सरहद पर आ चुकी है॥

नागर०। इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं है और इस बात का विश्वास नहीं हो सकता कि तुम्हारी फौज तुम्हारा पक्ष लेकर लड़ने के लिये तैयार हो जायगी, फौजी सिपाहियों के दिल से गोपालसिंह का ध्यान दूर होना दो एक दिन का काम नहीं है॥

माया०। (कुछ सोच कर) क्या मैं अकेली राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज को नहीं हटा सकती!!

नागर०। सो तो तुम्हीं जानो॥

मायारानी०। बेशक मैं ऐसा कर सकती हूं मगर अफसोस! मेरा प्यारा धनपति........

धनपति का नाम लेते ही मायारानी की आंखें डबडबा गई, नागर ने अपने आंचल से उसकी आंखें पोछीं और बहुत कुछ धीरज दिया। इसी समय दर्वाजे के बाहर से चुटकी बजाने की आवाज आई जिसे

सुन नागर समझ गई कि कोई लौंडी यहां आया चाहती है, नागर ने पुकार कर कहा, "कौन है चली आओ ॥"

वही लौंडी भीतर आती हुई दिखाई पड़ी जो बर्बाद भये हुये बङ्गले के पास बाबाजी से मिली थी और जिसके हाथ बाबाजी ने माया-रानी के पास चीठी भेजी थी, उसे देखते ही मायारानी चैतन्य हो बैठी और बोली, "कहो दारोगा से मुलाकात हुई थी ?"

लौंडी० । जी हां ॥

माया० । (मुस्कुरा कर) वह तो बहुत ही बिगड़ा होगा ॥

लौंडी० । हां, बाबाजी बहुत झुंझलाये और उछले कूदे, आपकी शान में कड़ी २ बातें कहने लगे, मैं चुपचाप खड़ी सुनती रही, अन्त में बोले, अच्छा मैं एक चीठी लिख कर देता हूं ले जा अपनी माया-रानी को दे दीजियो ॥

माया० । तो क्या उसने चीठी लिख कर दी ?

लौंडी० । जी हां यह मौजूद है लीजिये ॥

लौंडी ने चीठी मायारानी के हाथ में दे दी और मायारानी ने यह कह कर चीठी ले ली कि "देखा चाहिये इसमें दारोगा साहब क्या रङ्ग लाये हैं ।" इसके बाद वह चीठी नागर के हाथ में दे कर मायारानी बोली, "लो इसे तुम ही पढ़ो ॥"

नागर चीठी खोल कर पढ़ने लगी । उस समय मायारानी की निगाह नागर के चेहरे पर थी, आधी चीठी पढ़ने के बाद नागर के चेहरे पर हवाई उड़ने लगी और डर के मारे उसका शरीर कांपने लगा । मायारानी ने घबड़ा कर पूछा, "क्यों क्या हाल है कुछ कहो तो !"

इसके जवाब में नागर ने लम्बी सांस लेकर चीठी मायारानी के सामने रख दी और बोली, "ओफ ! मेरी सामर्थ्य नहीं कि इस चीठी को आखीर तक पढ़ सकूं, हाय ! निस्सन्देह बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों

का मुकाबला करना पूरा पूरा पागलपन है !!"

मायारानी ने घबड़ा कर वह चीठी उठा ली और स्वयम् पढ़ने लगी। मायारानी भी उस चीठी को आधे से ज्यादे न पड़ सकी, पसीना छूटने लगा, शरीर कांपने लगा, दिमाग में चक्कर आने लगे, यहां तक कि वह अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और बद-हवास हो कर गिर पड़ी॥

॥ नौवां हिस्सा समाप्त॥

Krishna Nand Sen
6th May 1928